कार्यालय–प्राचार्य चन्द्रपाल डड़सेना शासकीय महाविद्यालय पिथौरा, जिला–महासमुन्द(छ0ग0)
Webside-www.govtcollegepithora.ac.in Email-ID:- govtcollegepithora@gmail.com phone – 7707299373

Supporting Document for Criteria 3.3.1

Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC care list during the last five years

Office of the Principal

CHANDRAPAL DADSENA GOVT. COLLEGE PITHORA,

DISTRICT MAHASAMUND, (CHHATTISGARH)-493551

Registered Under section (2F) & (12B) of UGC act

Affiliated to pt. Ravishankar Shukla University Raipur, C.G.

Website www.govtcollegepithora.ac.in Phone No.07707-299373 Email. govtcollege.pithora@gmail.com

This is to certify that 21 papers were published by faculties of Chandrapal Dadsena Govt. College Pithora. The details are as follows

Year	No. of journals	Online	Print
2017-18	2	1	1
2018-19	4	3	1
2019-20	6	2	4
2020-21	3	1	2
2021-22	6	5	1

Principal

Principal
Chandrapal dadsena Govt.
College Pithora
Distt-Mahasamund(C.G.)

ISSN - 0973-1628

156

Issue - 156, Vol-XVI (1), March - 2017

www.researchlink.co

"You can't connect the dots looking forward; you can only connect them looking backwards. So you have to trust that the dots will somehow connect in your future. You have to trust in something - your gut, destiny, life, karma, whatever. This approach has never let me down, and it has made all the difference in my life."

Steve Jobs

(1955-2011)

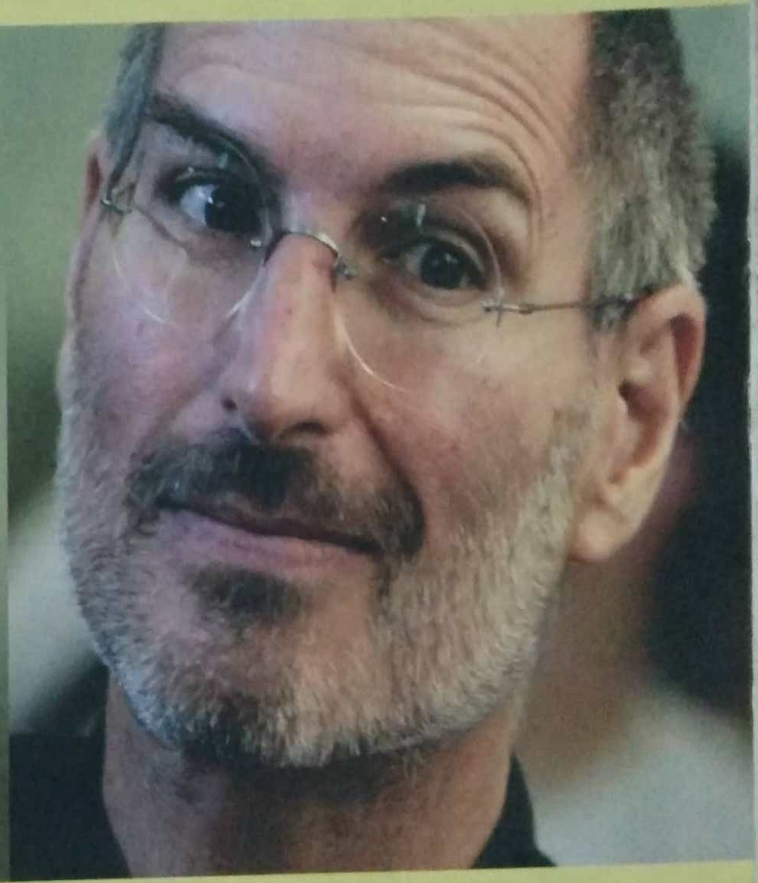

An International Registered and Referred Monthly Journal

Impact Factor 2.782 2015

RESEARCH Link

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

₹ 250/-

:: CIRCULATION ::

Andaman-Nicobar / Bihar / Chattisgarh / Delhi / Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka / Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal

An International, Registered and Referred Monthly Journal - Impact Factor 2.782 (2015)

ISSN No. 0973-1628

रिसर्च लिंक -156

• वर्ष- XVI (1)
• मार्च - 2017

(कला, समाजविज्ञान एवं वाणिज्य)

सम्पादक

डॉ.रमेश सोनी

विधि-विशेषज्ञ एवं सलाहकार

डॉ.अनिल पारे (पूर्णतःऑनररी)

सहयोग

डॉ.वीणा चौबे, डॉ.मोहम्मद इम्तियाज़ अहमद

प्रचार-प्रसार एवं विज्ञापन

विशाल राजौरिया

सम्पादकीय/प्रबन्ध-प्रकाशन कार्यालय

81, सर्वसुविधा नगर एक्सटेंशन, बंगाली चौराहे के पास,
कनाड़िया रोड़, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के पीछे,
इन्दौर - 452016
मोबाइल नं. 099264-97611
094253-49611 एवं 098260-75077

e-mail address :
researchlink@yahoo.co.in

एक प्रति : ₹ 250/-

संस्थागत शुल्क

वार्षिक : ₹ 3000/- (रुपये तीन हजार केवल)
(डी.डी.शुल्क अतिरिक्त)

व्यक्तिगत-शुल्क

वार्षिक (चार अंक) ₹ 1500/- (रुपये पंद्रह सौ केवल)

❖सदस्यता फॉर्म एवं नियमावली अंक के अंतिम पृष्ठ पर देखें।
❖रिसर्च लिंक का प्रकाशन-प्राध्यापकों का, प्राध्यापकों के द्वारा, प्राध्यापकों के लिए - एक अव्यावसायिक सहयोगी प्रयास।
❖सम्पादन, सम्पादन-सहयोग, प्रकाशन एवं संचालन अवैतनिक।
❖देश अथवा विदेश के किसी भी विश्वविद्यालय अथवा शोध कमेटी द्वारा 'रिसर्च लिंक' में प्रकाशित शोध-पत्रों के मान्य न किए जाने की स्थिति में प्रबंधन की कोई जवाबदारी नहीं होगी।
❖विषय विशेषज्ञों के निर्णय के अनुसार 'रिसर्च लिंक' में शोधपत्रों की स्वीकृति, संशोधन एवं प्रकाशन का एकाधिकार सम्पादन एवं प्रबंधन के पास रहेगा।
❖'रिसर्च लिंक' का अंक वेबसाइट पर, प्रत्येक माह की 05 तारीख को अपलोड किया जाता है,जिसे आप निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं।
❖सदस्यों को 'रिसर्च लिंक' की प्रति, प्रत्येक माह की 15 तारीख को साधारण डाक द्वारा भेजी जाती है। किसी भी कारण से अतिरिक्त प्रति प्राप्त करने के लिए ₹ 300/- रुपये का बैंक ड्रॉफ्ट भेजना होगा।
❖'रिसर्च लिंक' संबंधी सभी विवाद केवल इन्दौर न्यायालय के अधीन होंगे।

सम्पादकीय

जर्जर डायरी के पन्ने से

ऋतुगंध नहाई गीली चिट्ठी.....

❁ डॉ. रमेश सोनी

हवा के तेज झौंके से डायरी में कैद, मोरपंख से ढंककर सहेज कर रखे, जोड़कर लिखे गए 'तुम्हारे' और 'मेरे' नाम वाला पन्ना आज अचानक खुल गया। लगा कि जैसे छत से लटका हुआ झाड़-फानुस फर्श पर गिरकर किरचे-किरचे होकर बिखर गया। अक्स-अक्स हुआ मेरे अंदर का ''मैं'', मेरा मुंह चिढ़ाते हुए, वहशीयाना ठहाके लगाने लगा। ''मैं'' पसीने से तरबतर होता रहा, लहूलुहान हुआ, जख्म हरा हुआ, पर... यह सब सुखद लगा।

मन को बहुत समझाता हूँ, क्या फर्क पड़ता है, एक झाड़फानुस के टूट जाने से या किरचे-किरचे बिखर जाने से। कच्चे काँच के फानुस को एक-न-एक दिन टूटना ही था, रिश्तों की तरह। क्या हुआ, यदि यह आज ही टूट गया। यह तो और अच्छा हुआ कि यह आज ही टूट गया। इसके टूटने के साथ ही पाले हुए कई झूठे भ्रम दूर हो गए। वरना जितनी अधिक दूरी और उतनी देरी तक मुग़ालते का गफ़लत भरा यह खेल जारी रहता, टूटने पर टूटन का दर्द उतना ही बड़ा और असहनीय होता। किसी ज़िद करते रूठे बच्चे की तरह, इस उदास मन को फिर-फिर बहलाने-फुसलाने, मनाने की कोशिशें करते हुए रंगीन आकर्षक खिलौनों के ढेर की तरह फैलाई किताबों, पत्रिकाएँ, अलबम और पुरानी डायरियाँ और पुराने खत।

बहलने का नाम न लेने वाले जिद्दी मन की आँखें, बिखरी डायरियों और खतों पर फिसलने लगीं और मोरपंख ढंककर रखे 'तुम्हारे' और 'मेरे' नाम वाले पन्ने पर टिक गई। अक्षरों का असर अफीम की तरह होने लगा। मदहोश हुआ मन जल्दी ही इनकी गिरफ्त में आ गया।

अब रूठा हुआ मन कुछ मनते हुए हवा के तेज झौंके से खुले पृष्ठभर पर टिक गया है, पृष्ठ फड़फड़ाते हैं। किसी दड़बे का दरवाजा खुलते ही, जैसे कबूतरों की आँखों में एक चमक पैदा हो जाती है और रिहाई की खुशी में वे पंख फड़फड़ाते हैं। उड़ने की तैयारी करने लगते हैं अथवा जैसे किसी पहाड़ी गुफा से भोर की पहली किरण के साथ ही मृगछौने कुलाँचें भरने लगते हैं। इसी प्रकार डायरी के पृष्ठों में लिखी बातें बाहर आने लगती है। स्मृति के ताजा होने से सब-कुछ याद आने लगता है। लगता है, जैसे वह कल ही की बात है।

''मन'' अब डायरी के उस पृष्ठ पर टिक गया है, जो अचानक हवा के तेज़ झोंके से खुल गया है। और जिस पर जोड़कर लिखे गए तुम्हारे और मेरे नाम हैं। ''मन'' अब इन नामों की दुनिया और उन्हीं दिनों में पहुंच गया है। यद्यपि डायरी में कभी रखे गए, इत्र भीगे फाहे अब रेशे-रेशे हो गए हैं। सूर्ख गुलाब सूखकर पांखुरी-पांखुरी हो गए हैं। फिर भी डायरी के बंद पृष्ठों में घटनाओं के साथ गंध कैद हो गई है। नाम का एक-एक अक्षर समूची गंध को अपने में बटोरे हुए है। वे दिन भी क्या दिन थे।

आज फिर एक झटके में, अतीत से उठाकर-मुझे वर्तमान में ला फेंका। यह जानते हुए भी, कि अब कोई नदी इस समुद्र के लिए शेष नहीं है, 'मन' है कि रोज की तरह फिर डाकिए का इंतज़ार करने में लग गया है और डाकिया है, कि नकारे का हाथ हिलाते हुए गुज़र जाएगा। अरसे बाद, आज फिर जाने क्या सोच कर, मैं अपनी अंगुलियां डायरी पर जोड़कर लिखे गए मेरे-तुम्हारे नाम के ऊपर रखे मोरपंख पर फिराता रहा, बहुत देरी तक। प्रतीक्षा अभी है, डाकिया आए और गुलाबी कागज़ पर लिखी तुम्हारी चिट्ठी लाए।...

भरोसा रखें, रेगिस्तान के साथ ही, वीरान जंगल और जंगल में खड़े ठूंठ हो चुके वृक्षों के अंतस में भी हरियाली जीवित है। ...और वे भी इसी प्रतीक्षा में खड़े हैं, कि कोई डाकिया चिट्ठी लाएगा।

❁❁

An International, Registered and Referred Monthly Journal - Impact Factor 2.782 (2015)

Contents - 156

■ Research Link - 156 ■ Vol - XVI (1) ■ March - 2017

Exclusive - Steve Jobs : A Great Thinker

- स्टीव जॉब्स के संघर्ष की कहानी 6
- स्टीव जॉब्स के वे विचार, जो उसकी ताकत बने और..............7

Jammu- Kashmir & Punjab Exclusive

- ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਵਿਚ ਧਾਰਮਿਕ ਸਹਿਣਸ਼ੀਲਤਾ (ਸਿਧ ਗੋਸਟਿ ਬਾਣੀ ਦੇ ਸੰਦਰਭ 'ਚ)
  ਡਾ. ਤੇਜਿੰਦਰ ਗੁਲਾਟੀ, ਡਾ. ਜਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (530)..........08
- आधुनिक कथाकार मिथिलेश्वर कृत 'माटी कहे कुम्हार से' में अभिव्यक्त विभिन्न समस्याएँ
  डॉ.निशा जम्वाल (532)....................11
- मीडिया और बाजार
  वन्दना शर्मा (525)....................14

Gujarat Exclusive

- Information Literacy Skills an Important Tool for Use of Library in Electronic Era
  Dr. Jaya Barevadia (508)....................16

Science

- Phase Transitions in Solids Under High Pressure : A Review
  Dr.Purnima Singh & Ms.Neelam Sharma Muchrikar (521)....................20
- Wetland Plants of Sukta River in The Perspectives of Climatic Changes and for its Management
  Shakun Mishra & Parvinder Khanuja (535)................23

Sanskrit Literature

- स्मृतिवाङ्मय में न्याय एवं दण्ड व्यवस्था
  डॉ.शिव कुमार (539)....................25
- बुद्धचरित्र में आर्थिक नियोजन : एक विवेचन
  राजाभइया अहिरवार (470)....................28
- "देवदूत" में राष्ट्रीय स्वर की अभिव्यक्ति : एक अध्ययन
  संतोष कुमार अहिरवार (445)....................31

Hindi Literature

- हिन्दी की दो दलित महिला आत्मकथाओं का तुलनात्मक अनुशीलन
  राजेन्द्र कुमार एवं डॉ.वंदना कुमार (500)....................34
- भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ और हिन्दी कथा-साहित्य
  डॉ.पूनम काजल (520)....................37
- भारत के आर्थिक विकास में स्वदेशी आन्दोलन एवं गाँधीवादी चिंतन
  डॉ.नामिता गुहा रॉय एवं डॉ.शैलेन्द्र कुमार ठाकुर (418)........40
- तुलसी काव्य में प्रगतिशीलता
  श्रीमती अनुपमा पटेल एवं डॉ.नरेश कुमार वर्मा (526)..........42
- मानवीय विकास के लिए शिक्षा एवं अर्थ की अनिवार्यता
  डॉ.शैलेन्द्र कुमार ठाकुर एवं डॉ.नामिता गुहा रॉय (418)......45
- हृदयेश की कहानियों में संवेदना
  ज्ञानेश्वर प्रसाद (493)....................47
- परदेशीराम वर्मा की कहानी 'औरत खेत नहीं है' में महिलाओं का सशक्तिकरण : एक विवेचन
  डॉ.रेणु सक्सेना एवं श्रीमती उर्मिला टण्डन (458)................49

Sociology

- ग्रामीण महिलाओं की परिवार में आर्थिक स्थिति : एक अध्ययन (मुंगेली जिले के लोरमी क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)
  पुष्पा सोनी, डॉ.ललित शुक्ला एवं डॉ.एल.एस.गजपाल (507)...51
- मधुमेह रोग से ग्रसित वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन (आरंग विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)
  श्रीमती प्रमिला नागवंशी, डॉ.अनिता राजपूरिया एवं डॉ.निस्तार कुजूर (477)....................53
- अनुसूचित जनजाति एवं अन्य परम्परागत वन निवासी को वितरित वन अधिकार मान्यता पत्र की स्थिति (कबीरधाम जिले के विशेष संदर्भ में)
  गुलाब राम पटेल (491)....................56

History

- सन् 1857 ई.के समर के इन्दौर के स्मारक और स्थल
  डॉ.आकाश ताहिर (492)....................59
- आदिवासी समाज के इतिहास में भूमकाल गीतों की साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में भूमिका
  डॉ.विजय कुमार बघेल एवं गंगाराम कश्यप (511)..............62

Geography

- Trend of Rural Occupational Structure : A Case Study of Ahmednagar District (Maharashtra)
  Dr. Narke S.Y. (505)....................65

Political Science

- Political Reservation in India : Some Positive Impacts
  Dr. Sangeeta Ghai (533)....................69
- मध्यप्रदेश शासन की लोक कल्याणकारी योजनाएँ
  डॉ.अर्चना शर्मा (501)....................71
- ई-गवर्नेन्स का कार्यान्वयन एवं वर्तमान चुनौतियाँ
  डॉ.सुनीता मिश्रा एवं अरुणा ठाकुर (455)....................74
- भारतीय संविधान के प्रमुख स्रोत
  डॉ.गीता दुबे (494)....................76
- ई-प्रशासन का वर्तमान प्रशासनिक चुनौतियों के निराकरण में प्रभाव का अध्ययन (दुर्ग जिले के संदर्भ में)
  डॉ.(श्रीमती) नागरत्ना गणवीर, डॉ.डी.एन.सूर्यवंशी व श्रीमती सपना वैष्णव (528)....................79
- भारतीय विदेश नीति में श्री अटल बिहारी बाजपेयी का योगदान : एक राजनीतिक विश्लेषण
  डॉ.डी.एन.सूर्यवंशी एवं श्रीमती भावना दिवाकर (516)........81
- दहेज सम्बंधी कानूनी प्रावधानों का अध्ययन (रायपुर जिले के विशेष संदर्भ में)
  डॉ.सांत्वना ठाकुर (513)....................83

Anthropology

- Health Problem of Women in Chitrakoot During Menopause and Post Menopause Stage
  Kavita Shukla, V.S. Sahay & Shailendra Kumar Mishra (527)....................85

EDUCATION

- Dalit Women : Their Empowerment
DR. USHA RAO (531).....87
- गरीबी रेखा के नीचे निवास करने वाले अभिभावकों की निजी विद्यालयों के प्रति बढ़ती रुचि : एक अध्ययन
डॉ.जयश्री वाकणकर एवं कु.नीता राय (487).....89
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर उनके संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन
श्रीमती ज्योत्सना गढ़पायले, डॉ.(सुश्री) पद्मा अग्रवाल एवं डॉ.(श्रीमती) शोभा पुरकर (522).....91
- उच्चतर माध्यमिक शालाओं में पढ़ने वाले छात्र व छात्राओं के पारिवारिक सम्बंधों का जोखिम उठाने सम्बंधी योग्यता तथा शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ.सीमा परांजपे (467).....94
- किशोर अनाथ एवं सनाथ विद्यार्थियों की मनोसामाजिक समस्याओं का समायोजन क्षमता पर प्रभाव
श्रीमती राधा गुप्ता एवं डॉ.हिमानी उपाध्याय (518).....97
- ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन
अखिलेश शर्मा (504).....100
- नक्सल एवं गैर-नक्सल प्रभावित क्षेत्र के किशोर विद्यार्थियों की शाला अभिवृत्ति : एक अध्ययन
प्रवीण कुमार विश्वकर्मा (523).....102

COMMERCE

- Impact of Brand Image on Customers Buying Behaviour
DR. L.S. BANSAL (534).....104
- छत्तीसगढ़ राज्य के मुख्य लघु-वनोपज : एक अध्ययन
डॉ.मधुलिका अग्रवाल एवं दिव्या शुक्ला (510).....107
- महिला उद्यमशीलता और स्व-सहायता समूह
डॉ.रचना श्रीवास्तव (484).....109

HOME SCIENCE

- Nutritional Status of Preschool Children Aged 2-5 Years in Slum Area
DR. J.V. HAWARE (502).....111

RESEARCH PAPER

- स्वास्थ्य प्राप्ति में योग एवं आयुर्वेद की भूमिका
श्रीमती रंजना मिश्रा, डॉ.भगवन्त सिंह एवं डॉ.डी.के.कटारिया (489)...113
- छात्रों में पर्यावरण शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का अध्ययन
प्रो.दिनेश सोनी एवं दिनेश कुमार छड़ावदिया (512).....117
- कोरबा नगर में आप्रवासीय कार्यशील महिलाओं की व्यावसायिक संरचना
सरला शर्मा एवं यतिनंदिनी पटेल (509).....120
- शिक्षा, साहित्य और समाज का अंतर्सम्बंध : एक अध्ययन
श्रीमती शशि दुबे (506).....123
- छत्तीसगढ़ के मजदूर आंदोलनों में ठाकुर प्यारे लाल सिंह की भूमिका का अध्ययन
चुन्नी लाल साहू (481).....125
- महिला अपराध : एक सामाजिक प्रदूषण
कु.फरहत मंसूरी एवं डॉ.अर्चना गौर (498).....128

- **शोधपत्र भेजने संबंधी नियम**.....39, 127
- **'रिसर्च लिंक' सदस्यता फॉर्म**.....130

❁❁

An International, Registered and Referred - Journal :

रिसर्च लिंक ISSN No. : 0973-1628

रिसर्च लिंक के स्वामित्व सम्बंधी घोषणा-पत्र

घोषणा प्रपत्र - 4

पत्रिका का नाम	**रिसर्च लिंक** **(कला, समाजविज्ञान एवं वाणिज्य)**
पत्रिका की भाषा	हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, पंजाबी
प्रकाशन स्थल	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
प्रकाशक का नाम	**डॉ.रमेश सोनी**
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	81 सर्वसुविधा नगर एक्सटेंशन, बंगाली चौराहे के पास, कनाड़िया रोड़, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के पीछे, इन्दौर (म.प्र.) 452016
मुद्रक का नाम	**डॉ.रमेश सोनी**
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	81 सर्वसुविधा नगर एक्सटेंशन, बंगाली चौराहे के पास, कनाड़िया रोड़, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के पीछे, इन्दौर (म.प्र.) 452016
मुद्रणालय का नाम	संजरी ग्राफिक्स
पता	63 नेताजी सुभाष मार्ग, इन्दौर
फोन	098269-25508
संपादक का नाम	**डॉ.रमेश सोनी**
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	81 सर्वसुविधा नगर एक्सटेंशन, बंगाली चौराहे के पास, कनाड़िया रोड़, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के पीछे, इन्दौर (म.प्र.) 452016
स्वामी का नाम	**डॉ.रमेश सोनी**

मैं **डॉ.रमेश सोनी** एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

दिनांक : 01 मार्च 2017

डॉ.रमेश सोनी
प्रकाशक के हस्ताक्षर

An International, Registered & Refereed Monthly Journal
Sociology
Research Link - 156, Vol - XVI (1), March - 2017, Page No. 53-56

मधुमेह रोग से ग्रसित वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन (आरंग विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तुत शोधपत्र में मधुमेह रोग से ग्रसित वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन, आरंग विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का पूरी तरह से विकास नहीं हो पाया है तथा गाँवों में वृद्धों के स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं को परिवार में अन्य सदस्यों की अपेक्षा कम महत्व दिया जाता है, जिस कारण ग्रामीण वृद्ध अनेक स्वास्थ्यगत समस्याओं से ग्रसित हैं। इस समस्या के समाधान हेतु परिवार में सभी सदस्यों द्वारा स्नेह भाव से उनकी देखभाल करनी चाहिए, ताकि वे मानसिक रूप से अपने आपको असहाय न समझें तथा उनमें जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न हो सके।

श्रीमती प्रमिला वागवंशी*, डॉ.अनिता राजपूरिया** एवं डॉ.विस्तार कुजूर***

प्रस्तावना :

स्वास्थ्य मनुष्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पूँजी है। स्वास्थ्य से ही मानव जाति के सभी कार्यों का संचालन हो पाता है, जिससे समाज से लेकर देश का सर्वांगीण विकास संभव है। समाज में लोगों के सामाजिक, आर्थिक एवं प्रगति से स्वास्थ्य का घनिष्ठ रूप से संबंध है तथा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए महत्वपूर्ण होने के साथ ही अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक कारकों द्वारा निर्धारित व प्रभावित है। किसी भी समाज के लोगों का स्वास्थ्य स्तर ही उस समाज की स्थिति को व्यक्त करती है, क्योंकि मानव जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं में स्वास्थ्य का विशेष महत्व है। लोगों का जैसा जीवन स्तर होता है, वैसा ही उसका स्वास्थ्य स्तर भी होता है।

भारत देश की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवासरत है और गाँवों में वृद्धों का स्वास्थ्य स्तर अभी भी चिंतनीय है, क्योंकि ग्रामीण परिवारों में आज भी वृद्धों के स्वास्थ्य को अन्य पारिवारिक सदस्यों की अपेक्षा कम महत्व दिया जाता है। यह स्वास्थ्य की दशा आयु के अनुसार बदलती रहती है। वृद्धावस्था में शरीर के कमजोर होने से स्वास्थ्य स्तर अपने आप गिरने लगती है। दीक्षापाणि (1998)[1] ने अपने अध्ययन में लिखा है कि स्वास्थ्य एक स्थिर अवधारणा न होकर गतिशील अवधारणा है, जो कभी उच्च स्थिति तो कभी निम्न स्थिति की ओर चलती है।

प्राचीन से ही स्वास्थ्य और रोग संबंधी समस्याएँ समाज में विद्यमान रही है प्रत्येक समाज में स्वास्थ्य की अनुकूल दशाओं एवं रोग-ग्रस्त परिस्थितियों के नियंत्रण के लिये अलग-अलग उपचार विश्वास एवं व्यवहार प्रतिमानों का प्रचलन रहा है। समाज में स्वास्थ्य समस्याएँ एक गंभीर समस्या बन चुकी है, विशेषकर ग्रामीण वृद्ध इनकी स्थिति भी दयनीय है। वृद्धावस्था में वृद्ध अनेक रोगों से ग्रसित होते हैं, इनमें से एक है मधुमेह रोग। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार मधुमेह आने वाले 15 वर्षों में महामारी का रूप ले सकता है। विश्व में मधुमेह एक ऐसा रोग है, जो अनियंत्रित होने पर अनेक रोगों को जन्म देता है। रक्त में शर्करा के स्तर में वृद्धि होने के कारण से मधुमेह होता है। अरूण कुमार दुबे (2003)[2] ने अपने अध्ययन में जौनपुर के 50 मधुमेह रोगी वृद्ध उत्तरदाताओं के अध्ययन से स्पष्ट किया है कि वृद्धावस्था में मधुमेह एक घातक रोग बन गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र आरंग विकासखण्ड के 51 मधुमेह रोग से ग्रसित वृद्धों पर आधारित है।

अध्ययन के उद्देश्य :

(अ) मधुमेह रोग से ग्रसित वृद्धों की स्थिति का अध्ययन करना।

(ब) मधुमेह रोग से ग्रसित होने के प्रमुख कारणों का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति :

शोध अध्ययन में अध्ययन पद्धति को तीन भागों में विभक्त कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

(अ) अध्ययन क्षेत्र :

आरंग, रायपुर से 37 कि.मी. की दूरी पर पूर्व दिशा में स्थित है। आरंग विकासखण्ड का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 903.69 वर्ग कि.मी. है, जिसमें कुल ग्रामों की संख्या 167 है। यहाँ की कुल जनसंख्या 226445 है, जिसमें पुरूषों की संख्या 113924 एवं

*शोधार्थी, समाजशास्त्र अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)
**शोध-निर्देशक, शासकीय बी.सी.एम.महाविद्यालय, धमतरी (छत्तीसगढ़)
***सह शोध-निर्देशक, समाजशास्त्र अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

महिलाओं की संख्या 112521 है। यहाँ की दशकीय जनसंख्या वृद्धि 19.49 प्रतिशत है एवं जनसंख्या धन्वत्व 251 प्रति व्यक्ति वर्ग कि.मी. है। स्त्री–पुरूष अनुपात (प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या) 988 है। अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र पर आधारित है।

(ब) उत्तरदाताओं का चयन :

अध्ययन क्षेत्र में कुल 54 मधुमेह रोगियों की संख्या है, इनमें से 51 मधुमेह रोगियों का चयन दैव निदर्शन के लॉटरी प्रणाली से उत्तरदात्ता के रूप में किया गया है।

(स) तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण एवं प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों के संकलन साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रविधि के द्वारा तथ्यों का संकल्न किया गया है।

प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण :

प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण पश्चात सारणीयन किया गया तथा सारणी के माध्यम से तथ्यों का विश्लेषण क्रमबद्ध रूप से किया गया, तत्पश्चात् निष्कर्ष निकाला गया।

समस्या का प्रस्तुतीकरण :

तालिका क्रमांक 1 : मधुमेह रोग से ग्रसित वृद्धों की लिंग संबंधी जानकारी

क्रमांक	लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पुरूष	26	50.9
2.	महिला	25	49.1
	योग	**51**	**100**

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि मधुमेह से ग्रसित वृद्ध उत्तरदाताओं में पुरूष उत्तरदाता में पुरूष उत्तरदाता 50.9 प्रतिशत तथा महिला उत्तरदाता भी 49.1 प्रतिशत शामिल है, अर्थात् महिला एवं पुरूष दोनों उत्तरदाता इसमें शामिल है।

तालिका क्रमांक 2 : उत्तरदाताओं की आयु

क्रमांक	आयु	आवृति	प्रतिशत
1.	60–70	28	54.9
2.	70–80	13	25.5
3	80–90	09	17.6
4	90 से अधिक	01	2.0
	योग	**51**	**100**

प्रस्तुत तालिका क्रमांक 2 से ज्ञात होता है कि 54.9 प्रतिशत मधुमेह रोग से ग्रसित उत्तरदाताओं की आयु 60–70 वर्ष है। 25. 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 70–80, 17.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 80 से 90, तथा केवल 2 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 90 वर्ष से अधिक है। अतः अध्ययन हेतु विभिन्न आयुवर्ग के उत्तरदाता शामिल है।

तालिका क्रमांक 3 : मधुमेह रोग से प्रभावित होने की आयु

क्रमांक	प्रभावित होने की आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	40–45 वर्ष में	05	9.8
2.	45–50 वर्ष में	09	17.6
3.	50–55 वर्ष में	22	43.2
4.	55–60 वर्ष में	11	21.5
5.	60 से अधिक वर्ष में	04	7.9
	योग	**51**	**100**

प्रस्तुत तालिका क्रमांक 3 से मधुमेह रोग से प्रभावित होने की आयु संबंधी जानकारी से स्पष्ट होता है कि 43.2 प्रतिशत उत्तरदाता 50 से 55 वर्ष की आयु में इस रोग से प्रभावित हुए, इसी तरह 21.5 प्रतिशत उत्तरदाता 55 से 60 वर्ष में, 17.6 प्रतिशत उत्तरदाता 45 से 50 वर्ष में, 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता 40 से 45 वर्ष में तथा 7.9 प्रतिशत उत्तरदाता 60 से अधिक वर्ष में इस रोग से प्रभावित हुए। इस तरह विभिन्न आयु में वृद्व उत्तरदाता मधुमेह रोग से प्रभावित हुए हैं।

तालिका क्रमांक 4 : मधुमेह रोग से ग्रसित होने संबंधी कारण

क्रमांक	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	निम्न जीवन स्तर	11	21.5
2.	आर्थिक कारण	09	17.6
3.	चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव	15	29.5
4.	शिक्षा एवं स्वास्थ्य नियमों की जानकारी का अभाव	10	19.7
5.	पेयजल एवं आवास व्यवस्था की कमी	05	9.8
6.	अन्य	01	1.9
	योग	**51**	**100**

प्रस्तुत तालिका क्रमांक 4 में उत्तरदाताओं के मधुमेह रोग से ग्रसित होने संबंधी कारणों से ज्ञात होता है कि 29.5 प्रतिशत उत्तरदाता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव के कारण, 21.5 प्रतिशत उत्तरदाता निम्न जीवन स्तर के कारण, 19.7 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षा एवं स्वास्थ्य नियमों की जानकारी के कारण, 17.6 प्रतिशत उत्तरदाता आर्थिक कारण से, 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता पेयजल एवं आवास व्यवस्था की कमी के कारण तथा 1.9 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य कारण से रोग से ग्रसित हैं। अर्थात् विभिन्न कारणों से वृद्ध उत्तरदाता मधुमेह रोग से ग्रसित पाए गए।

तालिका क्रमांक 5 : रोग के उपचार की विधि

क्रमांक	उपचार	आवृति	प्रतिशत
1	आयुर्वेद से	29	56.8
2	एलोपैथीक से	13	25.5
3	होम्यौपैथी से	07	13.7
4	बैगा गुनिया से	02	4.0
	योग	**51**	**100**

मधुमेह रोग से ग्रसित वृद्वों का उपचार संबधित तालिका क्रमांक 5 से स्पष्ट होता है कि 56.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आयुर्वेद से, 25.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने एलोपौथीक से, 13.7 प्रातिशत उत्तरदाताओं ने होम्योपैथी से तथा 4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बैगा गुनिया से उपचार कराया है। अतः सभी रोगियों ने किसी न किसी प्रकार से उपचार करवाने का प्रयास किया है।

तालिका क्रमांक 6 से स्पष्ट होता है कि मधुमेह से ग्रसित उत्तरदाताओं में उपचार से रोग नियंत्रण की स्थिति कुछ हद तक 70.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं में, बहुत अधिक हद तक 17.7 प्रतिशत तथा 11.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं में बिल्कुल भी नियंत्रण

तालिका क्रमांक 6 : उपचार से मधुमेह नियंत्रण की स्थिति

क्रमांक	नियंत्रण की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	कुछ हद तक	36	70.6
2.	बहुत अधिक हद तक	09	17.7
3.	बिल्कुल नही	06	11.7
	योग	**51**	**100**

की स्थिति नहीं हुई है, इससे इस बात की पुष्टि होती है कि अभी भी कुछ उत्तरदाताओं में मधुमेह रोग नियंत्रित ही नहीं हो पा रहे हैं।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का पूरी तरह से विकास नहीं हो पाया है तथा गाँवों में वृद्धों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को परिवार में अन्य सदस्यों की उपेक्षा कम महत्व दिया जाता है, जिस कारण ग्रामीण वृद्ध अनेक स्वास्थ्यगत समस्याओं से ग्रसित हैं।

सुझाव :

मधुमेह रोग से ग्रसित वृद्धों को परिवार में सभी सदस्यों द्वारा स्नेहभाव रखकर उनकी उचित देखभाल करने का प्रयास करना चाहिए, ताकि रोगी व्यक्ति मानसिक रूप से अपने आपको असहाय न समझें तथा उनमें जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा हो सके।

रोग को नियंत्रित रखने हेतु खान–पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए, ऐसी चीजों से परहेज करना चाहिए, जिससे रोग की दर में वृद्धि होती है। नियमित जीवन शैली एवं शर्करा की मात्रा न पाए जाने वाले भोज्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए। साथ ही बीच–बीच में रोगी को चिकित्सक से जाँच अवश्य कराते रहना चाहिए, जिससे रोग की स्थिति के बारे में जानकारी मिलती रहे।

संदर्भ :

(1) सिंह, वीणापाणि (1998) : ग्रामीण स्वास्थ्य संरक्षण, क्लासिकल पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृ.3.

(2) Dubey, Arun Kumar (2003) : Ageing in India, problem of policies, Indian Journal of human development, 3 (1), p. 118-120.

(3) Bhat, V.N. (1990) : Public Health in India, Amar prakashan Delhi, p. 1 -10.

(4) Shrinivasan. S. : " Organization and management of rural Health care. services in West Bengal A case study" Journal of rural development. 2015, Vol. 12- No.2

(5) Yamunadevi A ; S., Sujata, Internatiional Journal of Asian social science : vol. 6 No. 12, Dec. 2016, p.p. 698-704.

(6) Dainik Bhaskar, DB Star 2012, P.No. 2.

(7) Nai Duniya, City live 2015, P. No. 1.

(8) सिंह, वृन्दा (1999) : मानव विकास एवं पारिवारिक संबंध, पंचशील प्रकाश, फिल्म कॉलोनी चौड़ा बस्ती–नागपुर, पृ. 640–641.

(9) जैन, शशिप्रभा (2005) : मानव विकास परिचय, शिवा प्रकाशन इन्दौर, पृ. 1–7.

(10) हेल्पेज इंडिया, आयुरक्षा–42, विकास के लिए वृद्धों की देखभाल, 2 दिसम्बर 2003, पृ. 6.

❁ ❁

Printing Area
UGC
Jr.No.43053
UGC Approved Refereed Journal

ISSN 2394-5303

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

TM

प्रतिमा परिया

Issue-40, Vol-05, April 2018

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Uttranchal / West Bengal

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 5.011(IIJIF) | Printing Area™ International Research journal | April 2018 Issue-40, Vol-05 | 01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2018, Issue-40, Vol-05

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area

Editorial Board & Advisory Committee

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
8) Jubraj Khamari (Orissa)
9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
16) Tadvi Ajij (Jalgaon)
17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
18) Dr.Varma Anju (Gangatok)
19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
25) Dr.Seema Sharma (Indor)
26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
27) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
30) Dr Watankar Jayshree
31) Dr. Saini Abhilasha
32) Dr. Prema Chopde (Nagpur)
33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
35)Dr. Pandey Piyush (Delhi)
36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
46) Dr. Chaudhari Ramakant (Ja

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

http://www.printingarea.blogspot.com

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

|| Index ||

01) Outsourcing in Library and Information services
Manisha. D. Bagade || 09

02) HEALTH AND PHYSIOLOGICAL CHARACTERISTICS OF JUDO PLAYERS
Dr. Bhagwat vinayak Bajirang || 10

03) WOMEN'S EMPOWERMENT IN POLITICS AND REPRESENTATION.
Dr. A. N. Birajdar ||13

04) A legal perspective on Minorities in India
Ratanlal Brahma || 18

05) Ethical Discipline for Householders
Dr. P.B.Chaugule || 26

06) UNIFORM CIVIL CODE (AN ANALYTICAL STUDY WITH .....
Dr. Saurabh Garg || 29

07) A STUDY ON CHALLENGES AND ISSUES OF 'LOCAL BODY TAX' .....
Dr. Nusrat Z. Hirani || 38

08) Profitability Analysis of Private Sector Banks in India
Aditya Kumar Jena, Dr. Santosh Kumar Das || 41

09) "A Critical Review on Environmental Management and .....
Lav Mohan, Deepanshu Agarwal || 47

10) GREEN MARKETING -CONCEPTS AND PRACTICES
Dr. D. Madan Mohan || 52

11) WORKING CAPITAL - IT'S IMPACT ON LIQUIDITY AND .....
Mr. Subas Chandra Mishra, Dr. S K Gayasuddin || 54

12) Using Social Media for knowledge management application .....
Ms. Shruti Naidu, Dr. Piyush Kendurkar, || 60

13) English for employability: A Skill based Communicative Approach
Mr. Ramesh Chandra Panda || 64

14) "ICT INTEGRATION IN EDUCATION AND LEARNING"
Dr. Ranjan Kumar Panda || 69

15) HUMAN RESOURCE MANAGEMENT IN BANKING SECTOR
SARAS KUMAR PANDA || 73

16) Library Resource Sharing Through Consortia: National .....
Patil Rajsingh Udaysingh || 81

17) ECONOMIC PROSPECTS OF LABOUR MIGRATION IN GAJAPATI .....
Prof. Subash Chandra Parida, Arun Kumara Senapati || 83

18) Analysis of Non Performing Assets in Public Sector Banks .....
Swati Srivastava || 92

19) Self and the Other: A Study of Walker Percy's The Moviegoer
Dr. Bhagaban Tripathy || 96

20) FORENSIC ACCOUNTING IN INDIA: CONCEPTS AND PRACTICES
VISHAL VERMA || 100

21) भारतीय अर्थव्यवस्थेत कृषीची भूमिका व महत्त्व .....
प्रा.भुस्से परमेश्वर सुभाषराव || 107

22) ब्रिटीश प्रशासन आणि घटनात्मक विकास
प्रा.डॉ.शिवाजी लक्ष्मण नागरगोजे || 108

23) मध्ययुगीन काळातील जमीन महसूल व्यवस्था
प्रा. डॉ. प्रविण पांडुरंगराव लोणारकर, || 110

24) लैंगिक शोषण :- एक गंभीर सामाजिक समस्या
प्रा. विलास सोमाजी पवार || 112

25) महात्मा गांधींची रामराज्य कल्पना
प्रा. डॉ. पिसे जी. एस. || 114

26) हूंडा :- स्त्री सबलीकरणातील एक अडथळा
सोमवंशी अल्का बाबाराव || 117

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

27) ग्रंथालय व माहितीशास्त्र व्यवस्थापन व संशोधनासाठी उपयुक्त तंत्रे
मनिषा देविदास बगाडे, || 120

28) ''सरोजिनी नायडू यांचे धारासना सत्याग्रहातील योगदान''
मुलचंद मारोतराव देशमुख || 122

29) ßजागतिकीकरण आणि भारताचा आर्थिक विकासÞ
प्रा.गौतम ए.शंभरकर || 124

30) बुध्द मार्ग एक सम सामाजिक क्रांती
प्रा.अमोल वा.ठाकरे || 128

31) ''मुंबई विद्यापीठाच्या संलग्ननित अध्यापक महाविद्यालातील .....
श्री.गांगुर्डे रविंद्र गोविंदराव || 130

32) समाज पर साहित्य का प्रभाव एवं संबंध.....
श्रीमती प्रमिला नागवंशी || 135

33) ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में संचार माध्यमों की.....
मो.फैसल ईसा || 138

34) "म.प्र. खादी एवं ग्रामोद्योग मण्डल द्वारा ग्रामोद्योग विकास में किए गए .....
श्रीमति सोनू वर्मा || 141

35) भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और.....
ए. के. नवीन || 145

36) व्यावसायिक विज्ञापन:अनुवाद,स्वरूप और समस्याएँ
शेख इमरान अब्दुलरहीम || 151

37) अधुनिकीकरण य एक विकासात्मक प्रक्रिया
मंजुल त्रिवेदी || 156

38) कल्हण की इतिहास दृष्टि
डॉ. उमेश तिवारी || 159

39) वंचन के सन्दर्भ में अधिगम दबाव का अध्ययन
सुनील कुमार साहनी, प्रो. के. एस. मिश्र || 161

40) जैव विविधता क्षरण का गहराता संकट एवं प्रभाव || 164
डॉ. एम.आर. आगर, डॉ. (श्रीमती) एच.आर. आगर

41) पार्श्वसंगीत की व्यवहारिकता || 167
मनप्रीत महे

42) साहित्य का समाजशास्त्र और उपन्यास : एक विश्लेषण || 169
शम्भु नाथ मिश्र

43) समकालीन हिन्दी उपन्यासों में वर्चस्व की राजनीति || 173
अरुण कुमार पाण्डेय

44) दीर्घ हिमालय में जनजाति का भौगोलिक अध्ययन : तहसील .... || 177
देवेन्द्र सिंह परिहार, कमल सिंह राणा, डॉ. दीपक

45) एकीकृत कराधान : वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) || 183
जोखन सिंह

International Multilingual Research Journal

Printing Area

9850203295 7588057695

Editor Dr.Bapu G.Gholap

32

समाज पर साहित्य का प्रभाव एवं संबंध (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

श्रीमती प्रमिला वासवंशी
सहायक प्राध्यापक–समाजशास्त्र
[illegible] डड़सेना शासकीय महाविद्यालय पिथौरा
जिला–महासमुन्द (छ.ग.)

****

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य व समाज एक दूसरे के संपूरक होते है, क्योंकि समाज की अभिव्यक्ति के अभाव में साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती तथा साहित्य विहिन समाज का अस्तित्व चिरकाल तक नहीं रह सकता। साहित्य समाज की तद्युगीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिक उन्नति–अवनति एवं उथल–पुथल का साक्षी होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है। अर्थात् समाज में हो रहे घटनाओं का प्रभाव साहित्य में दिखाई पड़ता है। एक साहित्यकार समाज की वास्तविक तस्वीर को सदैव अपने साहित्य में उतारता रहा है और मानव जीवन समाज का ही एक अंग है। विभिन्न कालों के साहित्यिक ग्रंथों एवं रचनाओं से समाज की व्यवस्था हमें स्पष्ट दिखाई देता है। रामायण, महाभारत, वेद, पुराण आदि में उल्लेखित वर्णन से समाज की वास्तविकता को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।

Shakspear in Hamlet holds the view that the purpose of literature is "to hold the mirror up to nature."

अर्थात् समाज की विभिन्न गतिविधियों को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाना एक मानवीय स्वभाव है।

साहित्य के अभाव मनुष्य पुनः आदिम अवस्था में पहुंच जायेगा, क्योंकि साहित्य ही उसे मानव होने के आवश्यक गुणों से अवगत कराता है और नैतिकता का पाठ पढ़ाकर उसे समाज के प्रति कर्तव्य का बोध कराता है। समाज का कर्तव्य है कि उच्च कोटि के साहित्य को संरक्षित करें एवं साहित्यकार को नैतिक बल प्रदान करे कि वह बिना किसी भय से यथार्थ को अभिव्यक्ति कर सके।

महत्व :- (Importence)

किसी भी काल में साहित्य के अध्ययन में हम तत्कालीन मानव जीवन के रहन–सहन व अन्य गतिविधियों का साथ–साथ अध्ययन कर सकते है। हम अबोध पैदा होते है और ताउम्र बोध की तलाश में भटकते रहते है। बोध कोई मंजिल नहीं है एक राह है और यह राह हमें साहित्य के गहन अध्ययन से प्राप्त होती है। साहित्य अपना पोषक तत्व समाज से ग्रहण करता है अर्थात् समाज से ही अपना निर्वाह करता है तो समाज को कुछ देता भी है। साहित्य समाज को सजाता है, संवारता है, समाज में छिपा हुए तथ्यों को विविध रूपों के साथ समाज को पुनः परिचित कराता है, जहां हम सीधे तरीके से अपनी बात समझा नहीं पाते। वहां साहित्य के माध्यम से समाज को विस्तृत रूप में समझाने का प्रयास करते है।

भारत में साहित्य के पीछे हजारों वर्षों की रचनात्मक सर्जना की परंपरा है। साहित्य पूरी तीव्रता और सच्चाई के साथ मनुष्य की सूक्ष्म अनुभूतियों का साक्षात्कार कराता है। लेखक प्रत्येक युग में समाज में उपस्थित चुनौतियों से लड़ता–भिड़ता है, प्रत्येक युग में उसे अपने दायित्वों को सिद्ध करने के लिये रचनात्मक चुनौतियों को झेलना पड़ा।

जब लोकतंत्र में जनता की भागीदारी से अभिजात्य वर्ग कट जाता है, मध्यम वर्ग लोकतंत्र के प्रति उदासीन हो जाता है तब शासन लोक कल्याणकारी न होकर अधिनायकवाद की ओर अग्रसर हो जाता है। प्रचण्ड बहुमत से विजयी राजसत्ता लोकतंत्र को कमजोर करती है तब साहित्यकार ही समाज को सतर्क करता है। साहित्य सत्ता के पक्ष या विपक्ष में नहीं होता है वह समाज के विविध दृष्टिकोण से तथ्यों

को सोचने समझने में सहायता करता है। रामचन्द्र शुक्ल (2005)[2] ने हिन्दी साहित्य का इतिहास के अन्तर्गत साहित्य एवं समाज के घनिष्ठ संबंधों की व्याख्या की है। अरूण दुबे (2013)[3] इन्होंने अपने लेख में लिखा है कि आवश्यकता एवं इच्छाओं पर सार साहित्य का इतिहास मानव सभ्यता के शुरूआत के दिन है इन्होंने तुलसीदास की राम चरित मानस का उल्लेख करते हुए उस समाज की विभिनन पहलुओं की जानकारी होने की बात कही है। दुहन रोशनी (2015)[4] अपने लेख में लिख है कि Literature is a reelection of socity is a fact that has been widely acknowledged. बी. के अन्जान एवं भमभ्र (2016)[5] इनका मानना है कि जब से सामाजिक–सांस्कृतिक विचारों का विकास हुआ है तब से लेकर आज तक साहित्य समाज पर प्रभावकारी हे। गल्फ न्यूज (2017)[6] के अनुसार भी विश्व के सभी विकसित एवं विकासशील देशों में भी विकास की प्रक्रिया को साहित्य के अध्ययन के आधार पर ही विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक समाज चाहे वह विकसित हो या विकासशील उनकी आधारशिला साहित्य एवं समाज के संबंधों के आधार पर ही विकसित हुई है।

उद्देश्य :– (Aim)

1. समाज एवं साहित्य के संबंधों को ज्ञात करना।
2. सामाजिक विकास में साहित्य की भूमिका का अध्ययन करना।

उपकल्पना :– (Hypothesis)

साहित्य तत्कालीन समाज को प्रस्तुत करता है।

अध्ययन पद्धति :– (Methodology)

शोध अध्ययन में अध्ययन पद्धति को तीन भागों में विभक्त कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है :–

(अ) अध्ययन क्षेत्र का परिचय (Introduction of field Aria)

प्रस्तुत अध्ययन छ.ग. राज्य के पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. पर आधारित है। म.प्र. के प्रथम मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल के नाम पर इस वि.वि. की स्थापना 1 मई 1964 में की गई थी। वर्तमान में यह वि.वि. छ.ग. का प्रमुख वि.वि. है।

(ब) उत्तरदाताओं का चयन :– (Selection of Respondence)

प्रस्तुत अध्ययन हेतु विश्व विद्यालय के मानव संसाधन विकास केन्द्र द्वारा आयोजित उन्मुखीकरण कार्यक्रम में सहभागी विभिन्न विषयों– कला, विज्ञान, कामर्स, इलेक्ट्रॉनिक आदि विषयों के कुल 37 सहायक प्राध्यापकों में सें 30 सहायक प्राध्यापकों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है जिसमें महिला एवं पुरूष दोनों उत्तरदाताएँ शामिल है।

(स) तथ्यों का संकलन :– (Data Collection)

अध्ययन में तथ्यों का संकलन प्रश्नावली एवं अवलोकन प्रविधि के द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीय एवं विश्लेषण (Classification, Tabulation and Interpretation of Data):–

प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण पश्चात् सारणीयन किया गया तथा सारणी के माध्यम से विश्लेषण क्रमबद्ध रूप से किया गया, तत्पश्चात् निष्कर्ष निकाला गया है।

समस्या का प्रस्तुतीकरण :– (Formulation of problem)

तालिका क्रमांक – 1

लिंग संबंधी जानकारी

क्र.	लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
१	पुरूष	18	60
२	महिला	12	40
	योग	30	100

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि 60 प्रतिशत पुरूष उत्तरदाता एवं 40 प्रतिशत महिला उत्तरदाताएं अध्ययन हेतु सम्मिलित हैं।

तालिका क्रमांक –2

साहित्य का समाज के लिय आवश्यक होना

क्र.	राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	24	80
2	नहीं	06	20
	योग	30	100

प्रस्तुत तालिका क्रमांक ०२ से ज्ञात होता है कि अध्ययन हेतु ८० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने साहित्य को समाज के लिये बतलाया है जबकि केवल २० प्रतिषत उत्तरदाताओं नें इस बात से अस्वीकार किया है।

तालिका क्रमांक – ३

समाज की जानकारी साहित्य से प्राप्त होना

क्र.	राय	आवृत्ति	प्रतिशत
१	हाँ	21	70
२	नहीं	09	30
	योग	30	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि समाज की जानकारी साहित्य से प्राप्त होने संबंधी विचार में ७० प्रतिषत उत्तरदाताओं ने अपनी हाँ में राय दी है अर्थात् किसी भी समाज की जानकारी उस समाज के साहित्य से प्राप्त की जा सकती है,परंतु ३० प्रतिषत नें नहीं में अपना तर्क दिए हैं इनका मानना यह है कि आदिम समाज का साहित्य उपलब्ध नही होने के बाद भी हमें अन्य माध्यम सें जानकारी प्राप्त हुई है।

तालिका क्रमांक – ४

साहित्य का समाज के विकास में सहायक होना

क्र.	राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	30	100
2	नही	0	0
	योग	30	100

साहित्य का समाज के विकास में सहायक होने संबंधी विवरण से ज्ञात होता है कि शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने समाज के विकास में साहित्य की भूमिका को स्वीकार किया है। इनका मानना है कि साहित्य समाज के विभिन्न सकारात्क एवं नकारात्मक पक्षों पर प्रकाश डालता है।

तालिका क्रमांक – ५

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य का उपयोगी होना

क्र.	राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	30	100
2	नहीं	0	0
	योग	30	100

वर्तमान परिपेक्ष्य में साहित्य उपयोगी होने संबंधी विचार में शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ में स्वीकृति नहीं दी है। इससे स्पष्ट होता है चाहे कोई भी विषय का साहित्य क्यों न हो वह वर्तमान में उपयोगी ही होता है।

तालिका क्रमांक – ६

साहित्य के बिना समाज का अध्ययन करने संबंधी राय

क्र.	राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	03	10
2	नहीं	27	90
	योग	30	100

यह स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाता में १० प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि साहित्य के बिना भी समाज का अध्ययन हो सकता है जबकि ९० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस बात से अस्वीकार किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि साहित्य के बिना समाज का अध्ययन असंभव है क्योंकि यह वर्तमान समाज की विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करता है जो हमारी उपकल्पना की पुष्टि करता है।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि किसी भी समाज, चाहे वो प्राचीन, सभ्य या विकसित समाज हो प्रत्येक समाज में साहित्य का समाज से घनिष्ट संबंध है एवं साहित्य का प्रभाव समाज पर स्पष्ट परिलक्षित होता है।

सुझाव :–

१. उद्देश्यपूर्ण साहित्य की रचना हो।

२. सामाजिक समस्याओं के प्रस्तुतीकरण के साथ निकराकरण के उपाय हो।

३. राष्ट्रीय गौरव को पोषित करने वाला साहित्य हो।

४. युग निर्माण को आधार प्रदान करने वाला हो।

५. प्रगतिशील साहित्य हो।

६. 'वसुधैव कुटुम्बकम'' और विश्व शांति की स्थाना करने वाला है।

संदर्भ

1- शुक्ल, रामचन्द्र (२००५) : हिन्दी साहित्य का इतिहा, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, पृ.सं. २१.

2- Dubey, Arun (2013): IOSR-Journal of Humanities and social Science, Vol-9, Issue-6, March- April P.P. 84-85.

3- Roshni, Duhan, (2015): Language in India, Vol-15, Issure4, P. 192-202.

4- Anajana, B.K. & Bhambhra R.L., (2016) IJELLH- International Journal of English, Language Literature & Humanities, Vol No. 2, Issue- III March. P. No. 1 to 10.

5- Gulf News, (2017) U.A.J. 12 Nov. P. No. 1

6- Research Link, An international Journal Issue- 156, vol-XVI (i), March- 2017 P. No. 34 to 35

❑❑❑

ISSN 2394-5303

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

प्रिंटिंग एरिया®

Issue-51, Vol-01
March- 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 6.039(IIJIF) | Printing Area International Research journal | March 2019 Issue-51, Vol-01 | 01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

March 2019, Issue-51, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area

Editorial Board & Advisory Committee

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
8) Jubraj Khamari (Orissa)
9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
16) Tadvi Ajij (Jalgaon)
17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
18) Dr.Varma Anju (Gangatok)
19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
25) Dr.Seema Sharma (Indor)
26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
27) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
30) Dr Watankar Jayshree
31) Dr. Saini Abhilasha
32) Dr. Prema Chopde (Nagpur)
33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
35)Dr. Pandey Piyush (Delhi)
36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
46) Dr. Chaudhari Ramakant (Ja

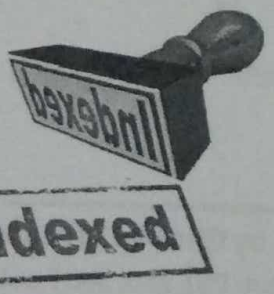

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

http://www.printingarea.blogspot.com

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

|| Index ||

01) An Analytical Study of Teacher-Interns with reference to Social Media ...
Dr. Neha Bajpai, Ms. Upasna ,Greater Noida (U.P.) || 09

02) Cross-cultural issues in Sunetra's novel; 'Memories of rain'
Dr. Dilip Kumar Jha, Lakhimpur Assam || 12

03) YOGA AND PHYSICAL EDUCATION
DR. ARPITA MISHRA, Azamgarh || 23

04) A COMPARATIVE STUDY OF VOCATIONAL INTEREST IN RURAL ....
Dr. R. L. Nikose, Gondia (M.S.) || 25

05) YOGA FOR HEALTH CARE
Dr. Sharmila Bhausaheb Pardhe, Ahmednagar. || 31

06) WAGES IN RURAL INDIA
Dr.Patil Bhagwan Shankar, Sangli. || 39

07) MAHATMA GANDHI: AN INDIAN LEADERSHIP
Dr. Sou. Patil Parvati Bhagwan, Kolhapur || 44

08) Theories of Evolution
Sanjoy Paul, Bodhgaya || 48

09) Arakalgudu Taluk Tourist Places
Pooja S P, Karnataka. || 52

10) A study to encourage the women for employment generation ....
Dr. Rameshwar Prajapati, Bihar. || 55

11) Indian Warriors Victim in Pulwama Fierce Attack
Dr.H.Ramesh, Nandihalli. || 60

12) Information Literacy of the Research Scholars of Science
Debabrata Ray, Burdwan || 64

13) RULES OF NATURAL JUSTICE – A PERSPECTIVE
Mr. Stainslaus.S, M.A, LLM, Chennai. || 70

14) CHANGING ATTITUDE OF RURAL WOMEN REGARDING ...
Dr. Pallavi L. Tagade, Dr. Mrs. Aparna S. Dhoble, Nagpur. || 77

15) Women under Islamic Rule and their education
Shivam Verma,Prayagraj (U.P.) || 84

16) भारताचे परराष्ट्र धोरण आणि सार्क
डॉ.ममता मधुकरराव देशमुख || 87

17) वर्धेच्या जानकीदेवी बजाज यांचे भारतीय स्वातंत्र आंदोलनातील......
प्रा.डॉ.राजू भा. खरडे,नागपूर. || 89

18) एका सुगीची अखेर कथेतील जीवन जाणीवा
कु. कसपटे चंदाराणी गोरख, औरंगाबाद. || 92

19) साथ संगतीची महती
प्रा.डॉ.मुक्ता पुं.महल्ले,अम. || 96

20) गिदिमा यांचे जोर्गिया- एर् आलिन्न
प्रा. डॉ. शोभा रोडिे ,अमरावती. || 98

21) लोकशाही समोरील आव्हाने आणि जनतेची जबाबदारी
डॉ. शारदा विजयकुमार सोळंके || 102

22) 'जागतिकीकरणात माझी कविता'मधील जीवन जाणिवांचा शोध
प्रा.डॉ.आनंद वारके,कोल्हापूर || 105

23) दिल्ली के प्रारंभिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की....
आशा किरन, न्यू दिल्ली. || 111

24) डिजीटलाइजेशन के सामाजिक आर्थिक प्रभाव: विश्लेषण
डॉ.कविता भदौरिया, बड़वानी || 115

25) प्रेमचंद के साहित्य में नारी
श्रीमती प्रतिमा चन्द्राकर,महासमुंद || 119

26) मनरेगा में सामाजिक ऑडिट
डॉ.बी.एस. डाबर, डॉ.शेखर मैदमवार,उज्जैन (म.प्र.) || 122

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

27) उत्तर मण्डल की राजनीति : दशा और दिशा
डॉ०अतुल आशुतोष शरण गुबरेले ,अटराकलां (जालौन) || 128

28) शालेय शिक्षणासंबंधी महाराष्ट्र शासनाचे धोरण : एक चिकित्सक अध्ययन
मोहन एस. काशीकर, अरूणा दिनकरराव नंदनवार, नागपूर || 132

29) बाल मन और सुरेश गौतम की दृष्टि
कविता मीना, अजमेर. || 141

30) १९–२८ वर्ष के युवा छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का अध्ययन
डॉ. प्रमिला नागवंशी, महासमुन्द (छ.ग.) || 145

31) रायगढ़ जिले के तमनार विकासखण्ड के डोलेसरा ग्राम का भूमि उपयोग....
डॉ. हेमसागर पटेल, मालखरौदा || 148

32) सिनेमा एवं हिंदी
प्रा.रुकसाना अल्ताफ पठाण,सातारा || 150

33) भारतीय दर्शन के अनुसार आत्मा
डॉ॰ प्रिया कुमारी, हजारीबाग || 152

34) 'कर्तव्य' ही संविधान है और एक मात्र अधिकार भी
डा.भगवती प्रसाद पुरोहित || 154

35) कुमाऊँ के शिल्पकलाओं में उत्कीर्ण अंकन
प्रो.राम विरंजन, कुरूक्षेत्र || 161

36) कबीर का नारी–विषयक चित्रण
सरिता, राजस्थान || 165

37) भारत में रोजगार परिदृश्य
सीमा नागर, धार (म.प्र.) || 167

38) हिंदी मेआत्मकथा की दशा व दिशा
डॉ. अमित शुक्ल, रीवा (मध्य प्रदेश) || 170

39) अमरकान्त के कथा साहित्य में नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण
डॉ०प्रद्युम्न सिंह, प्रयागराज (उ०प्र०) || 174

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

40) मुगलकाल में शिक्षा का विकास : एक ऐतिहासिक अध्ययन || 177
डॉ०सीताराम प्रसाद, हजारीबाग

41) छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन || 180
डॉ. जयबाला गुप्ता, डॉ. महेन्द्र कुमार तिवारी,बडवानी (म०प्र०)

42) हिंदी कविता में आदिवासी स्त्री - विमर्श || 182
डॉ.संगीता उप्पे, घोणसी

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

International Multilingual Research Journal

Printing Area

9850203295 7588057695

Editor Dr.Bapu G.Gholap

30

१९–२८ वर्ष के युवा छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का अध्ययन

डॉ. प्रमिला नागवंशी
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
चन्द्रपाल डडसेना शासकीय
महाविद्यालय–पिथौरा, जिला–महासमुन्द (छ.ग.)

प्रस्तावना :–

स्वास्थ्य जीवन की सबसे बड़ी अनमोल पूंजी है, तथा स्वस्थ रहना सबसे बड़ा सुख है। सभ्य और सुसंस्कशत समाज के लिए स्वास्थ्य ऐसी अनिवार्य परिस्थितियाँ है जो मनुष्य के अस्तित्व के लिए सर्वोपरि है। स्वास्थ्य किसी भी सामाजिक विकास का मूल आधार है जो विभिन्न सामाजिक, सांस्कशतिक, भौगोलिक, राजनैतिक आदि कारकों से किसी न किसी रूप से प्रभावित अवश्य होता है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं प्रगति के लिये वहाँ निवासरत लोगों के स्वास्थ्य का स्तर उन्नत अवस्था में होना अति आवश्यक है।

स्वास्थ्य के संबंध में मये (१९६८)[१] लिखा है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य दो परिस्थितियों का समग्र है प्रथम व्यक्ति का आंतरिक पर्यावरण तथा दूसरा वह पर्यावरण जिसमें व्यक्ति निवास करता है, इन दोनों के अन्त:करण से व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति का निर्धारण होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (१९७५)[२] के अनुसार "स्वास्थ्य न केवल व्याधियों तथा दुर्बलताओं की अनुपस्थिति है बल्कि शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक कल्याण की संपूर्ण अवस्था भी है।" अर्थात स्वास्थ्य प्रत्येक समाज एवं राष्ट्र की निवासियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानव जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं में स्वास्थ्य का विशेष महत्व है। स्वास्थ्य आज भारत ही नहीं अपितु विश्व स्तर की बहुत बड़ी चुनौती है, वैश्विक स्वास्थ्य की ओर बड़ी संख्या में लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के लिये विश्व स्वास्थ्य संगठन के महत्व में प्रत्येक वर्ष सात अप्रैल को पूरे विश्व भर में विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जाता है।

देश की कुल जनसंख्या में लगभग १९१ प्रतिशत जनसंख्या युवाओं का है। जो २०२० तक ३४.३३ होने का अनुमान है युवा जनसंख्या का अनुपात अधिक होना तो अच्छी बात है क्योंकि युवा राष्ट्र निर्माणकर्ता एवं देश का भविष्य होते है। युवाओं में नई जोश नई नीतियाँ निर्माण करने, समाज को नई दिशा प्रदान करने एवं समाज में परिवर्तन लाने की अदम्य साहस होती है अर्थात युवाओं का उच्च स्वास्थ्य स्तर सामाजिक पुनर्निर्माण में आवश्यक कारक है। परंतु वर्तमान स्थिति में इनकी बढ़ती संख्या के साथ युवाओं की समस्याऐं भी अनेक है, उनमें से प्रमुख समस्या स्वास्थ्य की समस्या है। स्वास्थ्य में निरंतरता हमेशा विद्यमान रहती है कभी यह निरंतरता उच्च स्वास्थ्य स्थिति जो कभी निम्न स्वास्थ्य स्थिति को प्रदर्शित करती है।

प्रस्तुत शोध पत्र १९–२८ वर्ष के १२० युवा छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के अध्ययन पर आधारित है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

१९–२८ वर्ष के युवा छात्र/छात्राओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का अध्यन करना।

अध्ययन पद्धति :–

अंध्ययन पद्धति को तीन भागों में विभाजित किया गया है :–

(I) अध्ययन क्षेत्र –

शोध अध्ययन में अध्ययन हेतु साइंस कालेज, विप्र कालेज एवं पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय का चयन किया गया है।

(II) उत्तरदाताओं का चयन –

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग किया गया है जिसमें महाविद्यालयों साथ ही विश्वविद्यालय के बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., एम.फिल, एम.एस.डब्ल्यू एवं पी–एच.डी के छात्र एवं छात्राएं हैं। कुल १२० छात्र–छात्राओं का

चयन किया गया है।

(III) तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण एवं प्रविधि –

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन प्रश्नावली एवं अवलोकन प्रविधि के माध्यम से तथ्यों का वर्गीकरण कर सारणीयन एवं तथ्यों का विश्लेषण क्रमबद्ध रूप से किया गया है तत्पश्चात निष्कर्ष निकाला गया है।

शोध प्ररचना :–

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत अध्ययन हेतु विवरणात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है।

समस्या का प्रस्तुतीकरण :–

क्रमांक	लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
१.	पुरूष (छात्र)	६०	५०
२.	महिला (छात्राएं)	६०	५०
	कुल योग	१२०	१००

तालिका क्रमांक –१ से स्पष्ट होता है कि उपरोक्त अध्ययन हेतु १२० उत्तरदाताओं में ६० उत्तरदाता पुरूष (छात्र) एवं ६० उत्तरदाताऐं महिला (छात्राएं) शामिल है। छात्र एवं छात्राएं दोनों उत्तरदाताएं होने से दोनों की समस्याओं को जानने का प्रयास किया गया है।

तालिका क्रमांक–२
उत्तरदाताओं की दिनचर्या संबंधी जानकारी

क्र.	प्रश्न	हाँ		नहीं		कुल योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
१.	व्यवस्थित दिनचर्या होना	८३	६९	३७	३१	१२०	१००
२.	स्वस्थ होना	१०५	८७.५	१५	१२.५	१२०	१००
३.	संतुलित आहार के बारे में जानकारी होना	९४	७८	२६	२२	१२०	१००
४.	नियमित व्यायाम करना	६४	५३	५६	४७	१२०	१००
५.	जीवन में योग को आवश्यक मानना	१२०	१००	–	–	१२०	१००

तालिका क्रमांक–२ के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ६९ प्रतिशत उत्तरदाताओं की व्यवस्थित दिनचर्या है अर्थात सुबह से रात तक विभिन्न कार्यों को समय–सारणी के अनुसार संचालित करते है, इनमें से अधिकांश युवा छात्र–छात्राएँ अपने परिवार के साथ रहते है जबकि ३१ प्रतिशत उत्तरदाताओं की अव्यवस्थित दिनचर्या है। ८७.५ प्रतिशत उत्तरदाताएं पूरी तरह स्वस्थ है जबकि १२.५ प्रतिशत उत्तरदाताओं को थायराइड, मोटापे के कारण ब्लडप्रेशर का कम ज्यादा होना तथा सिकल सेल की समस्या, सर्दी खांसी, बुखार एवं अन्य समस्याएँ रहती है।

संतुलित आहार लेने के संबंध में ७८ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ में उत्तर दिये है जबकि २२ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये है। ५३ प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं ने नियमित व्यायाम करने की जानकारी दी है जिसमें अधिकांश छात्र उत्तरदाताएं सम्मिलित है परंतु ४७ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने विभिन्न कारणों से नियमित व्यायाम न कर पाने की बात कही है। शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने योग को जीवन में आवश्यक बतलाया है, भले ही वे स्वयं नियमित योग नहीं कर पाते है।

तालिका क्रमांक–३
उत्तरदाताओं की स्वास्थ्य जागरूकता संबंधी जानकारी

क्र.	प्रश्न	हाँ		नहीं		कुल योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
१.	बी.एम.आई. इंडेक्स के संबंध में जानकारी होना	१०१	८४	१९	१६	१२०	१००
२.	हमेशा स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना	९७	८१	२३	१९	१२०	१००
३.	स्वास्थ्य संबंधी नियमित जांच करवाना	७३	६१	४७	३९	१२०	१००
४.	स्वास्थ्य रहने हेतु खानपान पर विशेष देना	१०३	८६	१७	१४	१२०	१००
५.	युवाओं का स्वास्थ्य समाज एवं देश के विकास में आवश्यक होना	१२०	१००	–	–	१२०	१००

उत्तरदाताओं की स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता संबंधी विवरण तालिका क्रमांक–३ से स्पष्ट होता है कि ८४ प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं को बी.एम.आई. (ठवकल डें प्दकमग) के संबंध में जानकारी है जबकि अभी भी १६ प्रतिशत उत्तरदाताओं को इनकी अर्थात बी.एम.आई. इंडेक्स की जानकारी नही है, ये उत्तरदाताएं अभी एक बार भी बी.एम.आई. परीक्षण नहीं करवाये है। ८१ प्रतिशत उत्तरदाताएं हमेशा स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहते हैं, जबकि १९ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हमेशा जागरूक न होने की बात कही। इनका कहना है कि वे कभी–कभी ही अधिक जागरूक होते हैं अर्थात अस्वस्थता की स्थिति में

स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक रहते है। इसी तरह ६१ प्रतिशत उत्तरदाताएँ नियमित स्वास्थ्य संबंधी जांच करवाते है, परंतु ३९ प्रतिशत उत्तरदाताएँ नियमित जांच कई कारणों से नहीं करा पाते है। ८६ प्रतिशत उत्तरदाताएं स्वस्थ रहने हेतु स्वच्छता पर विशेष ध्यान देते है, जबकि १४ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वच्दता पर विशेष ध्यान नहीं दे पाने की बात कहीं। इनका कहना है व्यस्ततम जीवन शैली, प्रतिस्पर्धा के कारण अधिक पढ़ाई करना एवं परिवार से अलग रहने के कारण अपने व अपने आसपास के वातावरण पर विशेष ध्यान नहीं दे पाते है। समाज एव देश के लिये युवा स्वास्थ्य को शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आवश्यक बतलाया है।

क्रमांक	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
१	अनियमित जीवन शैली	३१	२५.९
२	स्वयं की लापरवाही	१६	१३.३
३	असंतुलित आहार	२१	१७.५
४	परिवार से अलग रहना	०९	७.५
५	अनिद्रा	०९	७.५
६	मानसिक तनाव	१६	१३.३
७	नशा	०३	२.५
८	आर्थिक कारण	०७	५.८
९	अन्य कारण	०८	६.७
	योग	१२०	१००

तालिका क्रमांक–४ में उत्तरदाताओं की स्वास्थ्य समस्या संबंधी कारणों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि सर्वाधिक २५.९ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अनियमित जीवनशैली को स्वास्थ्य समस्याओं के लिये प्रमुख कारण बताया है। इनका मानना है कि वर्तमान जीवनशैली व्यस्त होने, प्रतिस्पर्धा का अत्यधि क प्रभाव होने के कारण जीवनशैली अनियमित हो जाती है जिसके कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती है।

१३.३ प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं ने स्वास्थ्य समस्या संबंधी कारणों में स्वयं की लापरवाही को कारण बताय है, इन उत्तरदाताओं ने जानकारी दी है कि हम स्वयं अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही हो जाते हैं। असंतुलित आहार को १७.५ प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं ने स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के लिये प्रमुख कारण बताया है, इस संबंध में उत्तरदाताओं ने बताया कि वे आहार तो नियमित लेते हैं परंतु संतुलित नहीं होने के कारण वे अस्वस्थ हो जाते है।

परिवार से अलग रहने को ७.५ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने, अनिद्रा को भी ७.५ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसी तरह १३.३ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मानसिक तनाव को, २.५ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नशा को स्वास्थ समस्या संबंधी प्रमुख कारण बताया है। आर्थिक कारण को ५.८ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने, ६.७ प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं ने विभिन्न अन्य कारणों को स्वास्थ्य समस्या संबंधी कारणों हेतु बताया है जिसमें अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, तीव्र आगे बढ़ने की प्रवशत्ति, बेरोजगारी, नैतिक मूल्यों में कमी, प्रेम संबंध ों में असफलता एवं शिक्षा अनुरूप रोजगार प्राप्त न होने को स्वास्थ्य संबंधी कारणों में प्रमुख बताया है।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि आज युवा छात्र–छात्राएँ शिक्षित होने के बाद भी विभिन्न स्वास्थ्यगत समस्याओं से ग्रसित हैं जो किसी भी समाज के विकास में बाधक है अर्थात् समाज एवं देश के सर्वांगीण विकास में युवाओं का शत प्रतिशत स्वस्थ होना अति आवश्यक है तथा समाज एक स्वस्थ एवं विकसित समाज निर्मित हो सकेगा। वास्तव में अच्छे स्वास्थ की परिकल्पना समग्र स्वास्थ्य का नाम है जिसमें शारीरिक, मानसिक बौद्धिक आध्यात्मिक और सामाजिक स्वास्थ्य भी शामिल है।

सुझाव :–

१.युवा अपनी शक्ति को पहचानकर समाज निर्माण हेतु सदुपयोग करें।

२. संयमित जीवन जीये एवं दिखावे से दूर रहकर संतुलित आहार का सेवन करे।

३. नशे से दूर रहे एवं नशे के दुष्परिणाम से अवगत हों।

४. सकारात्मक सोच विकसित करें एवं किसी भी स्वास्थ्य समस्या का समाधान प्रारंभिक स्तर से करें।

५. योग को व्यवहारिक तौर से जीवन में शामिल करें।

६. भारतीय परंपरात्मक चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद का प्रयोग करें।

७. नैतिक मूल्यों को जीवन में आत्मसात करें।

८. युवाओं को स्वास्थ्य बीमा करवानी चाहिए।

९. नशीली दवाओं का सेवन न करे।

१०. खेल को जीवन में अनिवार्य रूप से शामिल करें।

Reference –

1. Mage, J.M., (1968), The Ecology of human diseases, Envirnment of man (ed.), J.B. Breslev, Addision wisely publication company masschussets, p.p. 70-80

2. WHO, (1975), Traning and utilization of villege health workers documents, H.N. P. 5

3. Bhat, V.N. (1990), Public Health in India, Amar Publication Delhi P 1-10

4. Yamunadevi, A. (2016), Sujata international journal of Asian Social Science, vol. 6, No.-12 Dec 2016 P.P. 698-704.

५.सिंह वृन्दा (१९९९), मानव विकास एवं पारिवारिक संबंध, पंचशील प्रकाशन फिल्म कॉलोनी चौड़ा बस्ती—नागपुर पृ. ६४०—६४१

६.जैन शशिप्रभा, (२००५), मानव विकास परिचय, शिवा प्रकाशन इन्दौर, पृ. १७

७.हेल्पेज इंडिया, आयुरक्षा—४२ विकास के लिये वृद्धों की देखभाल , २ दिसम्बर २००३ पृ. ६

८. Research link, International Journal vol.XVI (I) march-2017 p. 113-116

९.भारद्वाज, डॉ. शक्ति (२००७) पर्यावरणीय विषय विज्ञान, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल.

10. https//m.dailyhunt.in.hindi.

11. https://www.deepali.co.in>in..

रायगढ़
डोलेसर
परिवर्त

विकासख
परिवर्तन
विस्तार
तथा ८३
मध्य स्थि
हेक्टेयर
पर स्थित
पश्चिम
सीमा में
है।

आधार
कृषि क्षे
३५ हे०
प्रतिषत
पड़ती
भूमि अ
कृषि भ
इसी प्र
है, जो
के मैद
बाग

विद्यावार्ता®

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-33, Vol-05 January to March 2020

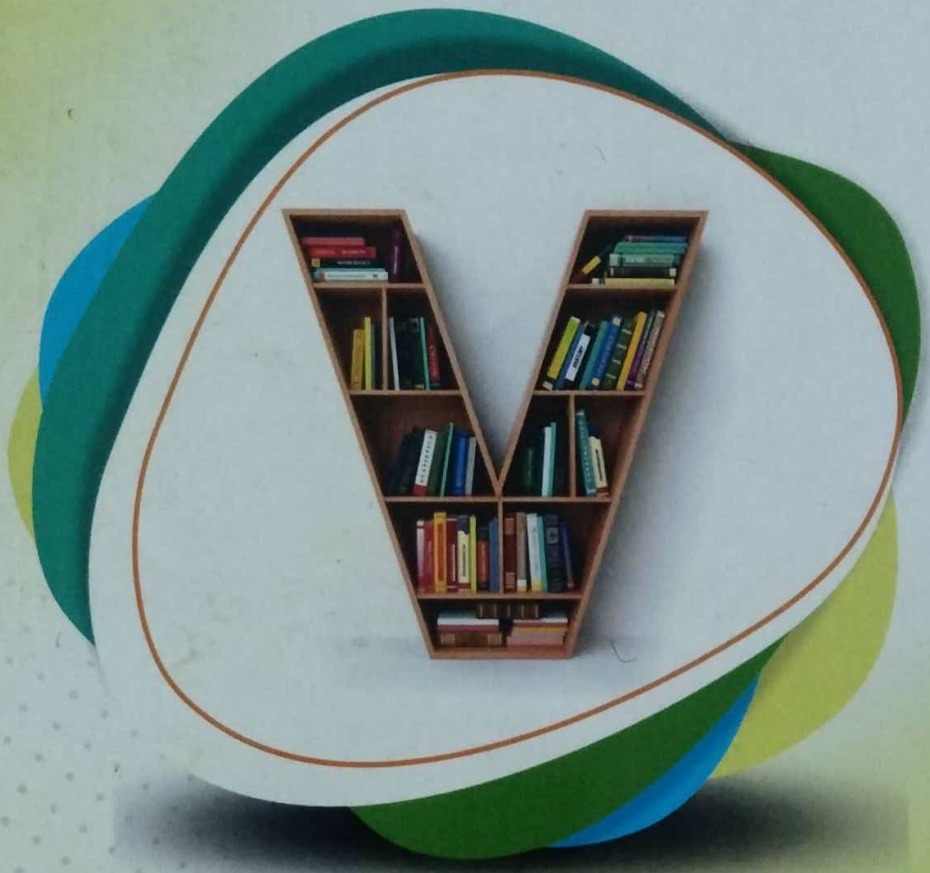

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Jan. To March 2020
Issue-33, Vol-05

Date of Publication
01 Feb. 2020

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
01 Feb. 2020

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www. विद्यावार्ता .कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary.

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 7.041 iijif FACTOR

Cosmos
IMPACT FACTOR
5.234

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**
Dr Gholap Bapu Ganpat
Parli_Vaijnath,Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

- **M.Saleem**
saien Ghulam street
Fatehgarh Sialkot city
Pakistan. Phone Nr. 0092 3007134022
saleem.1938@hotmail.com

- **Dr. Momin Mujtaba**
Faculty Member,Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education,Kingdom of Saudi Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**
115/478, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**
vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**
Navgan College, Parli –v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**
B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**
Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**
AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. – 09827983437
jubrajkhamari@gmail.com

- **Krupa Sophia Livingston**
289/55, Vasanthapuram,
ICMC, Chinna Thirupathy Post,
Salem- 636008 +919655554464
davidswbts@gmail.com

- **Dr. Wagh Anand**
Dept. Of Lifelong Learning and Extension
Dr B A M U Aurangabad pin 431004
Mobi. 9545778985
wagh.anand915@gmail.com

- **Dr. Ambhore Shankar**
Jalna,Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

- **Dr. Ashish Kumar**
A-2/157, Sector-3, Rohini, Delhi -110085
*Ph.no: 0*9811055359

- **Prof. Surwade Yogesh**
Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshps85@gmail.com

- **Dr.Deepak Vishwasrao Patil,**
At.Post.Saundhane, Near
Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patildipak22583@gmail.com

- **Dr.Vidhya.M.Patwari**
Vanshree Nagar,Behind Hotel
Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
Mobi.9422479302
patwarivm@rediffmail.com

- **Dr.Varma Anju**
Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
anjuverma2009@rediffmail.com

- **Dr.Pramod Bhagwan Padwal**
Associate Professor,Department of Marathi
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005.(Uttar Pradesh)
Mobi. 9450533466
pbpadwal@gmail.com

- **Dr. Nilendra Lokhande**
Head-Department of Commerce,
S.N.D.T. College of Arts & S.C.B.College of Comm. & Sci., S. N. D. T. Women's University,
Mumbai-20. Mobile: 98 21 230 230
Email: lokhandend@gmail.com

- **Dr. Bhairulal Yadav**
Assistant Professor,
Department of Geography
Visva-Bharati University,Santiniketan,
West Bengal 731 235,Mob. +91 8670027217
blal.yadav@gmail.com

- **Dr. Madan Mohan Joshi**
Asst.Professor of History, School of Social Sciences
Uttarakhand Open University, Haldwani (Uk)
Cell nos. 09690676632,09412924858
mmjoshi@uou.ac.in

- **Dr.Seema Sharma (Tiwari)**
Assistant Professor-Political Science,
Govt. M.L.B. Girls P.G. College, KilaBhavan, Indore-66
Mob: 9425904160
seemasharmam4@gmail.com

- **Dr. N.D. Choudhari**
Dept. of Marathi
Anandrao Dhonde Alias Babaji College,
Kada, Tal-Ashti, Dist- Beed (India) Mobi. 7350474989
ndbchoudhari@gmail.com

- **Dr. Yallawad Rajkumar**
Lt. Laxmibai Deshmukh Mahila College,
Parli v. Dist. Beed,Pin. 431515,
Mobi. 9881294195

- **Dr. Awasthi Sudarshan**
Navgan college, Parli Vaijnath
Dist. Beed Pin.431515, Mobi.9960127866
sudarshanawasthi@gmail.com

- **Dr. Ravindranath Kewat**
Teacher Colony, Bamni- Bllarpur, TQ. Ballarpur
Dist. Chandrapur Pin 442701, Mobi- 9421715172
kwmmballarpur@rediffmail.com

- **DR.PIYUSH PANDDEY**
371 H POCKET II, MAYUR VIHAR PHASE I
NEW DELHI 110091,Mobi:9871415353
opiyushpandey@gmail.com

- **Dr. M.SURESH BABU,**
Librarian,
C.M.R. College of Engineering & Technology (Autonomous). Kandlakoya, Medchal Road,
Hyderabad - 501 401
Mobile : 9492759646
drsureshsvu@gmail.com

- **Dr. DEEPAK NEMA**
S/O Dr. B.D. Nema, Near Prem Nagar Power House,
Satna-485001,Contact No.8989469156,
Email: dnema14@gmail.com

- **Dr. Neeraj Kumar Shukla**
HEAD, Department of B.Ed. Government Post Graduate College Kashipur, Udham Singh Nagar, Uttarakhand, India 244713
9450223977
nshuklan@gmail.com

- **Sunil S Trivedi**
Rameshwar Park,B/h Navarang Society,
Mogri-388345 Ta & Di: Anand
Mob: 9727290344, 8866465904
trivediss@ymail.com

- **Dr. Anil Kumar Singh**
H.O.D. Library & Information Science
Nandini Nagar P.G. College
Nawabganj, Gonda
Email-singh.anil224001@gmail.com
Mob-09793054919

- **Dr. Preeti Sarda,**
Flat No.505Amrapali Arcade, Street No.10, Himayat Nagar, Hyderabad.-500029,
Telangana . Mob.08374378080
pritibhala@gmail.com

- **Ramakant Ambadas Choudhari**
Plot No. 43 B / Vidyavihar Colony Part -01,
SHIRPUR , DIST- DHULE (MH) 425405
Mobi – 7588736283
rac2722@gmail.com

- **Dr. Dinesh Kumar Charan**
Associate Professor
and HOD-History Dept.
Govt.Lohia College, Churu
(Rajasthan) India Pin 33100

द गैज़ेट ऑफ इंडिया, १८ जुलै २०१८ को प्रकाशित किये गये राजपत्र में विश्वविद्यालय अनुदान आयोगने शिक्षकों और अन्य शिक्षक कर्मचारियों की न्यूनतम अर्हताओं के बारे में विनियम जारी किया है, जिसमें पृष्ठ संख्या १०५ पर peer reviewed जर्नल API स्कोअर का उल्लेख के लिए मान्य किये जाएंगे ऐसा लिखा है । ये राजपत्र निम्न लिंक पर उपलब्ध है कृपया डाउनलोड करके देखिये।

https://www.ugc.ac.in/pdfnews/4033931_UGC-Regulation_min_Qualification_Jul2018.pdf

More Details
https://www.youtube.com/watch?v=g_fq2M7yM8k=4s

रजिस्ट्री सं. डी. एल.- 33004/99 | REGD. NO. D. L.-33004/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 271] नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 18, 2018/आषाढ़ 27, 1940

No. 271] NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 18, 2018/ASHADHA 27, 1940

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 जुलाई, 2018

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में शिक्षकों और अन्य शैक्षिक कर्मचारियों की नियुक्ति हेतु न्यूनतम अर्हता तथा उच्चतर शिक्षा में मानकों के रखरखाव हेतु अन्य उपाय संबंधी) विनियम, 2018

https://www.ugc.ac.in/pdfnews/4033931_UGC-Regulation_min_Qualification_Jul2018.pdf

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	10 per paper	10 per paper
2	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by :		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curriculum/course	02 per curriculum/course
	(c) MOOCs		
	Development of complete MOOCs in 4 quadrants (4 credit course)(in case of MOOCs of lesser credits 05 marks/credit)	20	20
	MOOCs (developed in 4 quadrant) per module/lecture	05	05
	Content writer/subject matter expert for each module of MOOCs (at least one quadrant)	02	02
	Course Coordinator for MOOCs (4 credit course)(In case of MOOCs of lesser credits 02 marks/credit)	08	08
	(d) E-Content		
	Development of e-Content in 4 quadrants for a complete course/e-book	12	12
	e-Content (developed in 4 quadrants) per module	05	05
	Contribution to development of e-content module in complete course/paper/e-book (at least one quadrant)	02	02
	Editor of e-content for complete course/ paper /e-book	10	10
4	**(a) Research guidance**		

Index

01) EARTHQUAKE RESISTANCE COLUMN BY USING HELICAL REINFORCEMENT
Rahul Kumar raj, Ajay Kumar & Amit Kumar, SONEPAT ||14

02) A STUDY OF INTERNET USER'S BEHAVIOUR AND COGNITION TOWARDS ONLINE ...
DR. CHANDRA PAL & DINESH JOSHI, BAGESHWAR, UTTARAKHAND ||16

03) Effect of high temperature on silk production and its impact on livelihood of ...
S. V. Ghonmode, Nagpur ||21

04) APMC ACT IN INDIA
Asso.Prof. Dr. Karkare C. P., Nanded ||24

05) THE CRITICAL ANALYSIS OF NON-PERFORMING ASSETS OF FIVE PRIVATE BANKS ...
Dr. Neelakshi Kaushik & Dr. Nistha Sharma, Kashipur, Uttarakhand ||27

06) A STUDY OF OCCUPATIONAL STRUCTURE IN LATUR DISTRICT OF MAHARASHTRA
Dr. Mukesh Jaykumar Kulkarni, District-Latur ||33

07) Internet and Education Development
Dr. Kanchan Singh, Moradabad (UP) ||37

08) A STUDY ON URBAN CO-OPERATIVE BANKING & ITS PROVISIONS & N.P.A.
Dr. Anil M. Ramteke, Wardha ||40

09) PROBLEMS OF HIGHER EDUCATION IN HILL AREAS OF UTTARAKHAND
Prof. Anand Prakash Singh & Ram S. Samant, Pauri Garhwal, Uttarakhand ||46

10) Yoga and mental health
Dr. Buktare Deepak Mohanrao, Jalna ||50

11) Application of Quick Response Code (QR Code) In Library
Dr. Kumbhar Kalyan N., Jalna ||53

12) **Report on: Teenage Cell Phone and Internet Addiction**
DR. HD GOPAL, RAMANAGARA (DIST) ||57

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

13) Assessment of Biocontamination of Jakekur Tank, Osmanabad Dist (M.S.) ...
Dr. S. D. Kamble, Dist. Osmanabad (M.S) ||62

14) Present Management Education Scenario: Trends and Challenges
Dr. F. N. Mahajan ||64

15) Assessment of Biodiversity in Bassi Wildlife Sanctuary Rajasthan: A ...
Dr. Jaideep Singh, Jaipur, Rajasthan ||69

16) Kamala Das's Struggle for Feminine Existentialism in the Modern World
Margrat K. M. & Pof. DR. D. P. MISHRA, Jaipur ||75

17) Control Measures in Air pollution
Dr. Haridas G. Pisal,Dist.:Beed (MAHARASHTRA) ||80

18) मराठी आणि तेलुगु भाषा: अन्योन्ससंबंध
प्रा.डॉ. वारकड विजय गणपतराव, जि. नांदेड ||83

19) छत्रपती शिवाजी महाराज खजीना -एक शोध
अजीज रशिद तडवी, जळगांव (महा) भारत ||88

20) स्थानिक स्वराज्य संस्थेत महिलांचा राजकीय सहभाग, महिला युवा नेतृत्व आणि राजकीय ...
श्री. विरेंद्र मुरलीधर घरडे, ता.जि. धुळे ||89

21) जयपाल सिंह मुंडा आणि छोठानागपूर श्रमिक
इरपतकर पुरुषोत्तम श्यामरावजी, नागपूर ||93

22) ग्रामीण आणि शहरी क्षेत्रातील उच्च माध्यमिक स्तरावरील विद्यार्थ्यांच्या अंतर्मुखी...
डॉ. आर. एल. निकोसे & वृंदा एम. नंदेश्वर, नागपूर (महाराष्ट्र) ||95

23) सावरकरांची कुसुम आणि बालविधवा दु:स्थितीकथन : एक शोध
प्राचार्य डॉ. संजय पोहरकर, लाखनी ||98

24) समीक्षा
सुरेखा शशिकांत सरपोतदार, मुंबई ||102

25) भारतातील शिक्षणाचा हक्क : अमंलबजावणीतील समस्या व उपाययोजनांचा अभ्यास
श्री. चव्हाण अशोक शामराव, पेठ वडगाव ||106

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

26) समतोल आहार आणि आरोग्य
डॉ. प्रज्ञा एस. जुनघरे, चंद्रपूर ||110

27) नवा श्रावणबाळ : एक शोध
प्रा. डॉ. जयश्री संजय सातोकर, भंडारा ||113

28) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्रीविषयक विचार
प्रा.डॉ. शिवाजी गोविंदराव दिवाण, जि. बीड ||116

29) विरामचिन्हांच्या अपुऱ्या ज्ञानामुळे मराठी विषयाच्या लेखन कौशल्यात येणाऱ्या अडचणींचा अभ्यास
डॉ. रंजना वि. तिजारे, नागपूर ||118

30) रोख विरहीत अर्थव्यस्था आणि ग्रामीण भागातील बँक सुविधा
डॉ. खंदारे विलास भिकाजी & श्री जावळे गणेश राजेंद्र, जि. औरंगाबाद ||122

31) भाषा आणि प्रसार माध्यमे
प्रा. रंजना ज्योतीराम महाजन, जि. गोदिंया ||128

32) दामोदर मोरे की हिन्दी कविता में अस्मितामूलक प्रतिरोध
डॉ. बी. एल. आर्य, भीलवाड़ा (राज.) ||132

33) लिङ्ग महापुराण में योग साधना निरूपण
डॉ० चेतना भण्डारी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड ||135

34) पचपन खंबे लाल दीवारें उपन्यास में सुषमा की बेबसी
डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे, जि. लातुर, महाराष्ट्र ||138

35) साहित्य और सिनेमा में साम्य–वैषम्य
श्री. महेश बापुराव चव्हाण, जिला सातारा ||143

36) समाज के विकास में अनुसंधान की भूमिका
डॉ. प्रमिला नागवंशी, जिला–महासमुन्द (छ.ग.) ||146

37) पंचायती राज व्यवस्था संघीय व्यवस्था के तृतीय स्तर के रूप में
सुश्री सीमा अग्रवाल, डॉ. आर. के. पुरोहित & डॉ. सुभाष चंद्राकर, रायपुर ||148

38) किन्नर समुदाय का जीवन यथार्थ
डॉ. अनुसुइया अग्रवाल, महासमुन्द (छ.ग.) ||152

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

39) कविकर्णपूरकृत अलंकारकौस्तुभ में काव्यतत्त्व विमर्श
आयूषि, वनस्थली विद्यापीठ ||154

40) छत्तीसगढ़ प्रदेश में जनसंख्या की समस्या एवं समाधान : एक भौगोलिक अध्ययन
डॉ. आर. के. पटेल, जिला – कोरबा (छ.ग.) ||158

41) संगठित खुदरा बाजार से ब्रान्डेड वस्तुएँ क्रय करते समय ग्रामीण उपभोक्ताओं का ...
राखी जायसवाल & डॉ. आर. एस. देवड़ा ||161

42) गाँधी जी के शिक्षा प्रयोग
डॉ० अशोक सिडाना & डॉ० नित्या तोमर, जयपुर (राज०) ||164

43) भारतीय समाज के विभिन्न कालों में मुस्लिम महिला शिक्षा की स्थिति का अध्ययन
डॉ. वन्दना कुमारी, दरभंगा ||166

44) शिक्षक के सर्वांगिण विकास मे डिजिटल शिक्षा की भूमिका
डॉ. रश्मि वर्मा, नीमच ||172

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal
Jan. To March 2020
Issue-33, Vol-05

36

समाज के विकास में अनुसंधान की भूमिका

डॉ. प्रमिला नागवंशी
सहायक प्राध्यापक—समाजशास्त्र,
चन्द्रपाल डडसेना शासकीय महाविद्यालय पिथौरा,
जिला—महासमुन्द (छ.ग.)

****

प्रस्तावना :—

मनुष्य प्रारंभ से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है, यही कारण है कि वह अपने और अपने आस—पास की घटनाओं के संबंध में हमेशा से विचार करना, घटनाओं को नये तरीकों से समझना एवं कार्य कारण संबंधों की व्याख्या का आधार ढूंढने में तत्पर रहा है। आदिम अवस्था से लेकर विभिन्न अवस्थाओं में विकास की कई चरणों से गुजरता हुआ मनुष्य नें दिन—प्रतिदिन नयी—नयी वस्तुओं का निर्माण कर अपने जीवन को उन्नत बनाकर एवं समाज को एक स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है।

सामान्यत: व्यक्तियों के समूह को ही समाज कहा जाता है जिनमें संबंधों की व्यवस्था जटिलता लिये हुये होती है। समाज सरलता से जटिलता की ओर विकसित हुआ है जहां पहले समाज सरल था वहाँ जीवन स्तर, आर्थिक स्तर एवं सामाजिक संबंधों में भी सहजता विद्यमान होती थी अर्थात् प्राथमिक समूहों की विशेष महत्ता थी। जैसे—जैसे समाज विकसित होता गया जटिलताओं में भी वृद्धि होती गयी। विभिन्न क्षेत्रों मे नवीन ज्ञान की प्राप्ति, नये आविष्कार, नवीनतम खोज इत्यादि ने मानव विकास में अहम भूमिका निभाया है। वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है और वैज्ञानिक युग में अनुसंधान एक महत्वपूर्ण कारक है जो समाज को एक विकसित समाज के रूप में स्थापित करता है। कोई भी समाज व देश जो आज विकास की चरमोत्कर्ष पर है उनके विकास में अनुसंधान का ही अधिक योगदान रहा है।

अनुसंधान :—

अनुसंधन का तात्पर्य किसी भी विशेष ज्ञान की प्राप्ति हेतु इस प्रकार गहन अध्ययन करना है जिससे नये सिद्धांतों का निर्माण किया जा सके तथा वर्तमान परिस्थितियों के अंतर्गत प्राचीन सिद्धांतों की सत्यता का मूल्यांकन किया जा सके।

v uqla/kku ; k 'kks/k ¼Research) का अर्थ बार—बार खोजने से है। इसके अंतर्गत अवलोकन द्वारा घटनाओं को उद्देश्यपूर्ण देखना एवं उपलब्ध तथ्यों के आधार पर घटनाओं को समझना, कार्य—कारण संबंधों की व्याख्या करना। दी न्यू सेन्चुरी डिक्शनरी के अनुसार ''किसी वस्तु या व्यक्ति के संबंध में सावधानी पूर्वक खोज करना एवं तथ्यों या सिद्धांतों का पता लगाने के लिये विषय सामाग्री की लगातार सावधानीपूर्वक जांच पड़ताल करना ही अनुसंधान है।'' व्यापक अर्थ में अनुसंधान किसी भी क्षेत्र में नवीन ज्ञान की खोज करना होता है। अनुसंधान या शोध उस प्रक्रिया का नाम है जिसमें बोधपूर्वक प्रयत्नों के माध्यम से तथ्यों का संकलन वर्गीकरण विश्लेषण एवं निर्वचन कर सिद्धांतों का निर्माण किया जाता है। वैज्ञानिक अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुये जिज्ञासा का समाधान करने का प्रयत्न किया जाता है साथ ही नवीन वस्तुओं की खोज करके पुरानी वस्तुओं और सिद्धांतों का पुन: पुरीक्षण जिससे की नये तथ्यों की प्राप्ति हो सके, अनुसंधान या शोध कहलाता है।

अनुसंधान के उद्देश्य :—

प्रत्येक मानवीय क्रिया के प्रयत्न के मूल मे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य छुपा रहता है। अनुसंधान या शोध भी एक ऐसा ही प्रयास है जिसका उद्देश्य नवीन ज्ञान की प्राप्ति करना, कार्य—कारण संबंधों की व्याख्या, तथ्यों का संकलन करना, वर्गीकरण, विश्लेषण कर अंतिम निष्कर्ष तक पहुंचना है। अनुसंधान के मुख्य रूप से दो उद्देश्य है ।

(I) सैद्धांतिक अथवा बौद्धिक उद्देश्य —

अनुसंधान कार्यों का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान की वृद्धि करना अर्थात् अज्ञानता की जानकारी प्राप्त करना

एवं उन सिद्धांतों का निर्माण करना जिसमें अनुभव सिद्ध तथ्यों के आधार पर अवधारणाओं की पुष्टि की जा सके।

(II) व्यवहारिक उद्देश्य –

अनुसंधान के व्यवहारिक उद्देश्य का तात्पर्य उन कार्यों से है जिसे व्यक्ति अपने जीवन में उपयोगी ज्ञान का संचय कर कुशलतापूर्वक प्रयोग कर सके अर्थात् अनुसंधान से प्राप्त ज्ञान मानव जीवन में सार्थक प्रतीक हो जिसका सभी लाभ उठा सके।

अनुसंधान का महत्व :–

विज्ञान के क्षेत्र में हो या समाज के क्षेत्र में सभी क्षेत्रों में अनुसंधान का विशेष महत्व है। अगर यह कहा जाये कि वर्तमान युग अनुसंधान का युग है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अनुसंधान के माध्यम से ही प्राकृतिक घटनाओं की वास्तविकताओं से मनुष्य अवगत हुआ है। प्रारंभ में प्रत्येक घटना को अंधविश्वास, अनभिज्ञता एवं धार्मिक आधार पर समझा जाता था परंतु अनुसंधान अर्थात शोध से ही घटनाओं की वास्तविक प्रकृति का ज्ञान, कार्य कारण संबंधों की ब्याख्या एवं परिणाम से लेकर जीवन संचालन हेतु सामाजिक संबंधों एवं संरचना का अध्ययन भी अनुसंधान के माध्यम से प्राप्त हुआ है। अतः शोध मानव ज्ञान को विकसित एवं परिमार्जित कर दिशा प्रदान करने के साथ ही उसकी जिज्ञासा प्रवृत्ति को भी संतुष्टि प्रदान करने में अपनी भूमिका निभाता है। शोध नवीन ज्ञान के साथ ही पूर्वाग्रहों का निदान करके किसी भी समस्या का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन करता है। बदलती परिस्थितियों में तथ्यों की व्याख्या एवं पुनर्परीक्षा भी अनुसंधान से संभव हो सका है। मानव समाज का बौद्धिक विकास करने के साथ–साथ विकास की नयी नीतियों का प्रतिपादन कर समाज को एक नया स्वरूप प्रदान करता है।

सामाजिक विकास में अनुसंधान की भूमिका :–

समाज को एक उन्नत एवं प्रगतिशील समाज बनाने में अनुसंधान की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। आज विश्व में जितने भी विकसित राष्ट्र एवं सभ्य समाज है उनके विकास में अनुसंधान का विशेष योगदान हैं। मनुष्य की जिज्ञासा का आधार कभी प्राकृतिक घटनाएं तो कभी सामाजिक घटनाएं रहीं है ये घटनाएं अपने आपमें जटिलता लिये हुये होती है। इनसे संबंधित ज्ञान के स्पष्टीकरण एवं सत्यापन में अनुसंधान एक प्रमुख साधन है।

विज्ञान के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन नई–नई घटनाओं का अध्ययन, सूर्य, चन्द्रमा ग्रह नक्षत्र तारे इत्यादि के संबंध में शोध के माध्यम से ही नवीन ज्ञान की प्राप्ति हो सकी है, ब्रम्हाण्ड की उत्पत्ति के साथ ही समस्त जीव जन्तुओं की उत्पत्ति का अध्ययन भी शोध से संभव हुआ है। प्रकृति और मानव समाज का घनिष्ठ संबंध है जैसा भौगोलिक पर्यावरण होता है उसी के अनुरूप सामाजिक व्यवस्था निर्मित होती है। समाज के विकास एवं प्रगति में सामाजिक तथ्यों, कार्य–कारण संबंधों एवं समस्याओं का अध्ययन कर उन्हें दूर करने हेतु अनुसंधान सहायक है। किसी भी समाज के विकास में आर्थिक कारकों के साथ ही भौतिक वस्तुओं एवं उपकरणों का विशेष महत्व रहा है। कार्ल मार्क्स ने तो पूरे इतिहास की व्याख्या ही भौतिकवाद के आधार पर किये है। भौतिक वस्तुओं का निर्माण भी अनुसंधान ही के द्वारा पूर्ण होता है। समाज में होने वाले सामाजिक गतिशीलता एवं सामाजिक परिवर्तन को अनुसंधान ने पूरी तरह प्रभावित किया है। सामाजिक संबंधों की व्याख्या, तथ्यों की पुष्टि एवं समस्याओं का अध्ययन कर सामाजिक विकास हेतु नई नीतियां बनाने का कार्य अनुसंधान के माध्यम से ही द्वारा ही हो सका है।

मानव अपनें विकास की प्रारंभिक अवस्था में घटित होने वाली प्रत्येक घटनाओं को धार्मिक एवं अंधविश्वास के आधार पर समझते थे क्योंकि उस समय तर्क का विकास नहीं हुआ था, जैसे–जैसे व्यक्ति तार्किक होता गया वह प्रत्येक घटना को बार–बार सोचने एवं उनकी वास्तविकता को खोजने का प्रयास करते जिससे नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती। अवलोकन सत्यापन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण आदि पद्धतियों के प्रयोग के बाद ही अंतिमतः निष्कर्ष की प्राप्ति से किसी तथ्य की व्याख्या अनुसंधान की सबसे बड़ी विशेषता है। अनुसंधान ने अविकसित एवं असभ्य समाज को विकसित एवं सभ्य समाज बनाया है, वह

समाज जहाँ अनुसंधान कार्य नहीं होते वह आज भी मानव सभ्यता के विकास के इतने वर्षों बाद पिछड़े हुये है।

अतः उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि प्रारंभ से लेकर अब तक विकास के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान का योगदान रहा है। अनुसंधान वैज्ञानिक विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास को एक नई दिशा एवं गति प्रदान करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

संदर्भ

बघेल डी.एस. (२०१४), सामाजिक अनुसंधान, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस आगरा, पृ. १–१०

फड़िया बीचए. (१९९१), शोध पद्धतियाँ, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, पृ. १–२७

करीम अब्दुल (२०१५), शोध प्रबंध, एस.बी. पी.डी. पब्लिशिंग हाउस आगरा, पृ. १०–२०

त्रिपाठी मधुसूदन (२००९), शिक्षा अनुसंधान और सांख्यिकी, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. १०८–१०९

सिंह राम गोपाल (२०११), सामाजिक अनुसंधान पद्धति विज्ञान, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, राधिका प्रकाशन भोपाल, पृ. २५–३०

महाजन धर्मवीरी एवं कमलेश (२०११), सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियों, विवेक प्रकाशन दिल्ली, पृ. १–१०

अग्रवाल जी.के. (२०१५), सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियां, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस आगरा, पेज ४५–७५

अग्रवाल गोपाल कृष्ण (२०१९), सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियां साहित्य भवन प्रब्लिकेशन, आगरा, पृ. १–३

गुप्ता एम.एल. एवं शर्मा डी.डी., (२००७), सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियां, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. ३

अनुसंधान व संबंधित साहित्य, विद्यावार्ता इन्टरडिसीप्लीन मल्टीलेंगुअल रिफर्ड रिसर्च जनरल, 2019 Vol-02, ज. से मार्च, पृ. १६२–१६७

37

पंचायती राज व्यवस्था संघीय व्यवस्था के तृतीय स्तर के रूप में

सुश्री सीमा अग्रवाल
शोधार्थी, सहायक प्राध्यापक – राजनीति विज्ञान,
स्व.श्री जयदेव सतपथी शास.महाविद्यालय बसना

डॉ. आर. के. पुरोहित
शोध निर्देशक, सेवानिवृत्त प्राचार्य,
शासकीय दंतेश्वरी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दंतेवाड़ा

डॉ. सुभाष चंद्राकर
सह निर्देशक, सहाप्राध्यापक – राजनीति विज्ञान,
दुर्गा महाविद्यालय रायपुर

"भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और यहाँ केवल दो स्तर की सरकार ही नहीं है वरन् यहाँ पर संघीय व्यवस्था का एक तीसरा स्तर भी दिखायी देता है वह है पंचायती राज व्यवस्था। भारत जैसे विशाल देश में आम नागरिकों की आम समस्यायें सिर्फ केन्द्र या राज्य सरकारों के माध्यम से सुलझाया जाना संभव नहीं है। अतः स्थानीय स्तर पर सरकार की व्यवस्था की गयी है।"

विश्व में सामान्य तौर पर दो प्रकार की शासन व्यवस्था देखी जाती है – संघात्मक और एकात्मक। प्रो.गिलक्राइस्ट के अनुसार संघवाद का मतलब संधि अथवा अनुबंध है। संघवाद शब्द लैटिन शब्द फोएडस (Foedus) से बना है, जिसका तात्पर्य ही संधि या अनुबंध है। संघात्मक शासन व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्र की विभिन्न इकाईयाँ कुछ क्षेत्रों में स्वतंत्र रहते हुये अपने को एक केन्द्रीय सत्ता में विलीन कर देती है।

संघात्मक शासन व्यवस्था में दो सरकारें एक केन्द्र की और दूसरी विभिन्न राज्यों या इकाइयों की

41

समाज में वृद्धों का महत्व

डॉ. प्रमिला नागवंशी
सहायक प्राध्यापक—समाजशास्त्र,
चन्द्रपाल डडसेना शासकीय महाविद्यालय पिथौरा,
जिला—महासमुन्द (छ.ग.)

परम्परागत भारतीय समाज में परिवार में सबसे महत्वपूर्ण स्थान वृद्धों का रहा है। वृद्ध सबसे अनुभवी, सम्माननीय एवं परिवार व्यवस्था की रीड़ की हड्डी के समान रहे हैं जो परिवार एवं समाज दोनों को दृढ़ता प्रदान करते है। वृद्धों ने समाज के रीति—रिवाज, परम्पराओं, प्रथाओं, सामाजिक मूल्यों एवं प्रतिमानों को यथावत् बनाये रखने एवं उसके हस्तांतरण में महत्वपूर्ण योगदान दिये हैं। सामाजिक संगठन एवं व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने के लिये समाज इनका ऋणी है। भारतीय संस्कृति में माता—पिता को ईश्वर तुल्य माना गया है साथ ही पितृऋण से मुक्ति हेतु पुत्रों को माता—पिता की सेवा करना, उनका आदर सम्मान करना अनिवार्य एवं नैतिक कर्तव्य के रूप में समझा जाता है।

स्पष्ट है कि आज का बालक कल का एक जिम्मेदार नागरिक है जो स्वस्थ और विकसित समाज का निर्माणकर्ता है क्योंकि बालक के निर्माण की भूमिका में परिवार समाज एवं वृद्धों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वृद्धों अपने अनुभवों से बालक के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास में समाजीकरण के माध्यम से उसे एक सशक्त सामाजिक प्राणी एवं जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में स्थापित करते हैं। अपनी आने वाली पीढ़ियों को समाज की धरोहर के रूप में अपनी संस्कृतियों, रूढ़ियों, परम्पराओं एवं प्रथाओं को हस्तांतरित करके समाज को सुसंस्कृत समाज बनाये रखने हेतु एक निश्चित दिशा प्रदान कर लोगों को प्रेरित करते हैं। समाज में व्यक्ति का व्यक्तित्व निर्माण उसके अपने रहन—सहन, पालन—पोषण, परिस्थितियों एवं पारिवारिक वृद्धों के देख—रेख पर ही निर्भर करता है। बालक में पारिवारिक स्नेह, जिम्मेदारियाँ, सहअस्तित्व, सहिष्णुता व भाई—चारे की भावना का विकास वृद्धों के द्वारा ही प्रदान किये जाते हैं जो किसी भी बालक के कोमल मन—मस्तिष्क को प्रभावित करते है साथ ही समाज की विभिन्न गतिविधियों, प्रक्रियाओं एवं समस्याओं से अवगत कराना और उनका समाधान करना भी सिखाया जाता है। परिवार रूपी संरचना में वृद्ध मुख्य निर्णयकर्ता एवं संरक्षणकर्ता के रूप में अपनी भूमिकाओं का निर्वहन तो करते है इसके साथ ही समाज में लोगों में जीवन के महत्व एवं उपयोगी होने की सीख भी नयी पीढ़ी को वृद्धों के माध्यम से प्राप्त होती है। भारत देश में वृद्धों का महत्व अन्य देशों एवं पश्चिमी देशों की तुलना में अधिक है क्योंकि हमारे देश में आज भी परिवार में सबसे अधिक महत्व वृद्धों का ही है, ये उस वृक्ष के समान है जो फल तो नहीं दे पाते लेकिन जिनकी छत्रछाया में पूरा परिवार संचालित होता है जिनके आशीष एवं स्नेह से परिवार के सभी सदस्य प्रफुल्लित रहते हैं।

वर्तमान में औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं आधुनिक जीवनशैली ने सामाजिक संरचना तथा सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाया है। यस्तम जीवन शैली एवं तीव्रगति से बढ़ रही भौतिकवादी एवं व्यक्तिवादी विचारधारा ने संयुक्त परिवार का विघटन कर एकाकी परिवार को जन्म दिया है। एकाकी परिवार में वृद्धि ने वृद्धों के जीवन को प्रभावित किया है जिसकी वजह से परिवार के सदस्यों का पूर्व की तुलना में वृद्धजनों के प्रति दृष्टिकोण भी परिवर्तित हुआ है। वृद्धों को वृद्धावस्था में भावनात्मक, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं जीवन के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण आदि समस्याएँ हैं जो वृद्धों को समस्याग्रस्त जीवन व्यतीत करने हेतु मजबूर करती है। परम्परागत समाज में वृद्ध गहन श्रद्धा और सम्मान के पात्र समझे जाते थे लेकिन बदलते सामाजिक परिवेश में वृद्धों के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में कमी आयी है। समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर गतिशील

अवस्था में रहती है, जिससे मानव की प्रस्थिति एवं भूमिकाओं में समयानुरूप परिवर्तन स्वाभाविक है और इन्हीं परिवर्तन के फलस्परूप ही वह अनेक भूमिकाओं का निर्वहन भिन्न–भिन्न समय में करता रहता है जिस कारण समाज में उनकी महत्ता बनी रहती है।

वृद्ध राष्ट्र की मूल्यवान धरोहर है और ज्ञान एवं अनुभवों के अटूट भंडार भी है आज जिस तरह युवा वर्ग रोजगार प्राप्ति हेतु एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान की ओर पलायन कर रहे है ऐसे में वृद्धों को सुरक्षा एवं संरक्षण प्रदान करना समाज एवं शासन दोनों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

भारतीय परिवार में वृद्धों को संरक्षण व सुरक्षा प्रदान करने की परंपरा के कारण ही राज्य व केन्द्र सरकार को पश्चिमी समाजों के समान वृद्धजनों के संरक्षण का दबाव अपेक्षाकृत कम झेलना पड़ा है, परंतु आज भारतीय समाज भी तीव्र सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों से प्रभावित हो रहा है। औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप बढ़ते नगरीकरण तथा जनसंख्या की प्रवजन की प्रवृत्ति ने संयुक्त परिवार जाति व्यवस्था व ग्रामीण समुदाय जैसी वृद्धों को संरक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं को कमजोर किया है, साथ ही तकनीकी उन्नति, जनसंचार के साधनों के प्रभाव तथा उच्चस्तरीय गतिशीलता ने स्थापित जीवनशैली, पारम्परिक मूल्य व्यवस्था तथा वृद्धजनों की समाज में प्रथागत रूप से प्राप्त सम्मानजनक स्थान को भी प्रभावित किया है।

स्वतंत्रता के इतने वर्षो में शासन द्वारा संचालित योजना एवं विभिन्न वर्गों के लिये निर्धारित नीतियों के कारण शहर से गाँव तक सभी क्षेत्रों में परिवर्तन एवं विकास हुआ है। आज देश विकासशील अवस्था से विकसित अवस्था तक पहुँचने हेतु प्रयासरत है लेकिन आज भी समाज में अनेक समस्याएँ विद्यमान है जो देश की प्रगति एवं सामाजिक विकास में बाधक है और इन समस्याओं में प्रमुख समस्या वृद्धों की समस्या भी है जो पूरे विश्व में विकराल रूप धारण कर रही है। अतः समाज में वृद्धों के सम्मान एवं महत्व को यथावत बनाये रखने हेतु परिवार, समाज एवं शासन स्तर पर वृद्धों के महत्व एवं वृद्ध जीवन के मुद्दों को उच्चतम वरीयता देकर व्यवस्थित व नियोजित तरीके से इस चुनौती का सामना करने का प्रयास किया जाना चाहिये।

Reference

१. Bharat Shalini and Desai Murli, (1995) "Bibliography on Indian Family" p.241

२. Sharma K.L. (1970), "Education for seniar citizens" Indian Journal of Gerontology, 4 [3-4], p. 89-91.

३. अवधिया सुकन्या (२०००), ''परिवार में वृद्धों के सम्मान का निवासीय पृष्ठभूमि'' सामाजिक सहयोग पत्रिका पृ.१०

४. कर निवेदिता, (२००४),"The old women" अप्रकाशित शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर, पृ. ०८

५. A. Yamunadevi, S. Sulaja, (2016) International Journal of Asian Social Science : Vol.6 No. 12, Dec. p. 698-704

६. व्यास शैलेन्द्र एवं शर्मा, (२०१३), एस. डी.(२०१३) भारतीय समाज मुद्दे एवं समस्याएं, निखिल पब्लिकेशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटरर्स आगरा, पृ. १५९–१६६

७. राव, बी.एस., (२००८) सामाजिक सहयोग पत्रिका, अंक–२ पृ. २६.

८. Rawat Harikrishana, (2008) Ency clopedia of Sociology Rawat publication Jaipur, p.no. 35.

९. सिंह वृन्दा, (१९९९), मानव विकास एवं पारिवारिक संबंध, पंचशील प्रकाशन नागपुर, पृ. ६५९.

१०. आहुजा राम, (२०११) भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ. २०१३–२२७.

११. राजपुरिया अनिता, (२००३) मध्यमवर्गीय परिवार, समस्याएं एवं सामंजस्य, शताक्षी प्रकाशन रायपुर, पृ. १२७.

१२. Sharma, Pramod Kumar, (1990) The Changing role of the head of the joint family in rural Chhattisgarh, The journal of Sociological Studies, Vol.-9 January, p.31-44.

१३. Prasad, Samajik Sahyog patrika 2007, Vol. no. 2, p.6

Vidyawarta®
International Multilingual Research Journal
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)

Certificate Of Publication

This is to certify that the review board of our research journal accepted the research paper/article titled "समाज में वृद्धों का महत्व" of Dr./Mr./Miss/Mrs. Dr. Pramila Nagwanshi

It is peer reviewed and published in the Issue 29 Vol. 02 in the month of Jan. To March 2019

Thank you for sending your valuable writing for Vidyawarta Journal

Indexed (IIJIF)
Impact Factor 5.131
Govt. of India Trade Marks Registry
ISSN-2319 9318

Editor in chief
Dr.Bapu G.Gholap

GOVT. OF INDIA RNI NO.: UPBIL/2015/62096

UGC Approved Care Listed Journal

ISSN 2229-3620

PIS

शोध संचार बुलेटिन

An International
Multidisciplinary
Quarterly Bilingual
Peer Reviewed
Refereed
Research Journal

Vol. 11

Issue 41

January to March 2021

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

UGC APPROVED
CARE LISTED JOURNAL
GOVT. OF INDIA RNI NO. - UPBIL/2015/62096

ISSN No. 2229-3620

शोध संचार बुलेटिन

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

• Vol. 11 • Issue 41 • January - March 2021

EDITORIAL BOARD

Prof. Surya Prasad Dixit
Lucknow University, Lucknow

Prof. Santosh Kumar Shukla
Jawahar Lal Nehru University, New Delhi

Prof. Karuna Shankar Upadhyay
Mumbai University, Mumbai

Prof. Abdul Alim
Aligarh Muslim University, Aligarh

Prof. Padam Kant
University of Lucknow

Prof. Sheela Mishra
Usmania University, Hyderabad

Prof. Shraddha Singh
Banaras Hindu University

Prof. Pawan Sharma
Meerut University, Meerut

Prof. Hemraj Sundar
Mahatma Gandhi Sansthan, Moka, Mauritius

Prof. Susheel Kumar Sharma
Mizoram University, Mizoram

Prof. Arbind Kumar Jha
BBA Central University, Lucknow

Prof. Nagendra Ambedkar Sole
Central University of Rajasthan

EDITOR IN CHIEF

Dr. Vinay Kumar Sharma
Chairman
Sanchar Educational & Research Foundation, Lucknow

PUBLISHED BY

sanchar
Educational & Research Foundation

CONTENTS

S. No.	Topic		Page No.
1.	छत्तीसगढ़ राज्य के अनुसूचित जनजातियों में साक्षरता	डॉ0 महिमाती सालेन टोप्पो	1
2.	आधुनिक भारत में ग्रामीण समाज की यात्रा एवं सामाजिक परिवर्तन : समाजशास्त्रीय पाठ	डॉ0 विमल कुमार लहरी	6
3.	भारतीय समाज, संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण में डॉ0 राधाकमल मुकर्जी का सामाजिक पारिस्थिति की परिप्रेक्ष्य	डॉ0 कविता कन्नौजिया	11
4.	अटल आवास योजना का हितग्राहियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान (छत्तीसगढ़ के राजनांदगॉव जिलें के विशेष संदर्भ में)	रागिनी डॉ0 टाण्डेकर के. एल. डॉ0 भाटिया एच. एस.	15
5.	विश्व शांति के सन्दर्भ मे जैन दर्शन का अनेकान्तवाद	श्वेता जैन डॉ0 अनीता सोनी	20
6.	कोरोना काल में मानसिक स्वास्थ्य एवं एकाग्रता पर योग का प्रभाव	डॉ0 अनीता सोनी सपना नरूका	24
7.	राष्ट्र के शैक्षिक व सामाजिक विकास में महात्मा ज्योतिबा फुले जी के चिन्तन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ0 सुरेश कुमार	28
8.	कहानी का नाट्यरूपान्तरण : एक सामान्य परिचय	राखी क्लेमन्ट	33
9.	अनकही अंभिव्यक्तियों का दस्तावेज : लोक साहित्य	अन्तिमा चौधरी	37
10.	वागड़ी बोलने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिखित हिन्दी में व्याकरणिक एवं संप्रेषणीय दक्षता के स्तर का अध्ययन	डॉ0 प्रियंका रावल	40
11.	छत्तीसगढ़ की उरॉव जनजाति–एक अध्ययन	डॉ0 पुष्पराज लाजरस शेख तस्लीम अहमद	45
12.	मुहरों पर गजलक्ष्मी का मूर्तिविधान	डॉ0 अर्चना मिश्रा	48
13.	पं. बालकृष्ण भट्ट का कृतित्व तथा उनकी हिंदी सेवा	डॉ0 अपराजिता जॉय नंदी	52
14.	हाई स्कूल स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन	डॉ0 संगीता सराफ मोनिका चौबे	55
15.	पर्यावरण नैतिकता एवं अभिवृत्ति पर पर्यावरणीय जागरूकता का प्रभाव : उत्तराखण्ड के निवासियों के संदर्भ में	डॉ0 मानवेन्द्र सिंह सेंगर	59

16.	सन्त कबीर साहब कृत बोधसागर	श्रीमती अगम कुलश्रेष्ठ	64
17.	राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य साधक राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त	डॉ0 कल्पना यादव	69
18.	आजादी के बाद विकास और विसंगति का दंश 'डूब उपन्यास' के संदर्भ में	रविकान्त	73
19.	समग्र ग्रामीण विकास एवं योजनाएँ : भारत के सन्दर्भ में	सुनील कुमार ढ़ाका	76
20.	मध्य प्रदेश राज्य में ग्रामीण कौशल केंद्रों की रोजगार सृजन में भूमिका : इंदौर शहर के संदर्भ में ग्रामीण कौशल केंद्रों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	तनुजा कुमारी	80
21.	कबीर के 'सबद' में व्यक्त भाषा–शैली	डॉ0 नागेश नाथ दास	85
22.	पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन में हिन्दी साहित्य का योगदान	डॉ0 नेहा अरोरा कपूर	89
23.	संयुक्त राष्ट्र संघ की पुनर्संरचना एवं भारत	डॉ0 प्रीतमराज	93
24.	बिहार में रोजगार के अवसर : प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अंतर्गत एक अध्ययन।	राकेश कुमार	97
25.	योगाभ्यास का विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन	डॉ0 रामा यादव प्रियंका कुमारी	102
26.	जयपुर : ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थल	डॉ0 सुमित मेहता	107
27.	राजस्थान के परम्परागत जल स्त्रोत	डॉ0 अमित मेहता	111
28.	छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक दुश्चिंता पर प्रभाव का अध्ययन	चंकी राज वर्मा डॉ0 (श्रीमति) संगीता शराफ	115
29.	कक्षा 7 वीं के अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पालक – बालक संबंध का उनके आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन	प्रो. (डॉ.) परविन्दर हंसपाल डॉ. (श्रीमति) संगीता शराफ श्रीमती रीता चौबे	121
30.	भारत में जनजातीय चेतना : उद्भव एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	डॉ0 धीरज कुमार चौधरी सुरेश कुमार	126
31.	नारायणपुर जिले मे अबुझमाढ़िया जनजाति विद्यार्थियों के आर्थिक व पारिवारिक स्थिति का अध्ययन	श्रीमती लता कुर्रे डॉ0 बसंत नाग किरण नुरूटी	130

32.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के निबन्ध	डॉ0 दुर्गेश कुमार राय	135
33.	साहित्यिक कृतियों का अनुवाद काव्य के संदर्भ में–	प्रो. शेख इस्माईल शेख हुसैन	139
34.	पुरूष उत्प्रवास एवं महिला सशक्तिकरण	विजय कुमार शुक्ल	143
35.	महिला अपराध : कानूनी प्राविधान एवं न्यायालय की भूमिका	अनिता सोनी	147
36.	लोक संगीत में रामकथा	डॉ0 इच्छा नायर	151
37.	सआदत हसन मण्टो और भीष्म साहनी की कहानी कला : एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ0 कैलाश पंवार	155
38.	विद्यार्थियों के विकास में माता–पिता की सहभागिता–एक अध्ययन	डॉ0 नलिनी मिश्रा अनुपम जायसवाल	159
39.	सामाजिक संबंधो के निर्माण में आर्थिक कारको की भूमिका (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)	डॉ0 प्रमिला नागवंशी	164
40.	'तमस' उपन्यास की साम्प्रदायिक समस्या	डॉ0 सुमन कुमारी	170
41.	हंसराज रहबर की दृष्टि में प्रेमचन्द का उपन्यास–साहित्य	किरन सिंह	173
42.	निराला के काव्य में माननीय मूल्य	डॉ0 इन्दु कनौजिया	178
43.	महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का आलोचनात्मक अध्ययन	पुष्पा यादव	182
44.	अखिलेश की कहानियों में हाशिये का विमर्श	डॉ0 पूनम यादव	186
45.	वेदकालीन नारी–शक्ति का स्वरूप एवं उसके राजनैतिक एवं प्रशासनिक योगदान की प्रासंगिकता (वर्तमान के आलोक में)	डॉ0 (श्रीमती) वसुधा श्री	190
46.	चन्द्रकांता एक मूल्यांकन	डॉ0 डॉली पाण्डेय	195
47.	वैदिक मन्त्र जीवनोपयोगी शिक्षक एवं कर्त्तव्य बोधक	डॉ० पल्लवी सिंह	198
48.	भारत में महामारियों का इतिहास एवं उनका प्रतिरोध	श्री रविन्द्र कुमार	201
49.	छत्तीसगढ़ राज्य में कृषि क्षेत्र में नवीन प्रौद्योगिकी का प्रयोग एवं फसल प्रतिरूप में परिवर्तन : एक विश्लेषण (जाँजगीर–चाम्पा जिले के विशेष संदर्भ में)	कु. सुमन लता राठौर डॉ0 महेश श्रीवास्तव	204
50.	ग्रामीण महिलाओं की प्रस्थिति एवं अस्मिता बाराबंकी के गांव कोला गहबड़ी का एक समाजशास्त्री अध्ययन	श्वेता साहू	210

51.	ग्रामीण विकास में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम के योगदान से संबंधित अवधारणात्मक एवं सैद्धांतिक विकास	डॉ0 रीना गुप्ता उत्पल मिश्रा	215
52.	चन्देल मूर्तिशिल्प का कलागत विकास	डॉ0 अनीता कनौजिया	220
53.	कांकेर जिला (छ.ग.) के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मस्तिष्क गोलार्द्ध प्रभुत्व का उनके अधिगम शैली पर प्रभाव	डॉ0 प्रज्ञा झा आस्था शर्मा	223
54.	ग्रामीण परिवारों के सामाजिक विकास में संचार माध्यम : लखीमपुर तहसील के विशेष संदर्भ में	बृजेन्द्र कुमार वर्मा डॉ0 महेन्द्र कुमार पाढी	227
55.	विचित्र नाटक : वर्णन कौशल	डॉ0 ज्योति कौर	231
56.	फैजाबाद में आजादी की अलख जगाने वाले वीर क्रान्तिकारी मौलवी अहमदउल्ला शाह	रूपा श्रीवास्तव डॉ0 पूनम चौधरी	236
57.	तसव्वुफ / सूफ़िज़्म	डॉ0 समीना अफज़ाल	239
58.	डॉक्टर रमन सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ0 सुभाष चंद्राकर भारती चंद्राकर	244

ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
(PIS)

शोध संचार
बुलेटिन

January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 164-169

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

सामाजिक संबंधो के निर्माण में आर्थिक कारको की भूमिका (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

❑ डॉ0 प्रमिला नागवंशी*

शोध सारांश

सामाजिक संबंधो के अभाव में किसी भी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। समाज के निर्माण हेतु सामाजिक संबंधो का निर्माण होना प्राथमिक एवं अनिवार्य दशाएँ हैं। व्यक्ति अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु परस्पर सहयोग के माध्यम से अन्तःक्रियाएँ करते हैं जिससे सामाजिक संबंधो का जन्म होता है। धीरे–धीरे समाज का विकास, उन्नति एवं विस्तार हेतु अर्थ की महत्ता बढ़ते जाते हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति भौतिकवादी विचारधारा से प्रभावित होकर आर्थिक सम्पन्नता एवं प्रगति की बाते अधिक सोचते हैं। क्या वर्तमान समाज में सामाजिक संबंध केवल अर्थ पर ही निर्भर करता है? क्या बिना अर्थ के सामाजिक संबंध निर्मित ही नहीं हो सकते? इस प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन कर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया है।

Keywords : सामाजिक संबंध, निर्माण, आर्थिक कारक, भूमिका

प्रस्तावना

मनुष्य को समाज में जीवन जीने हेतु विभिन्न आवश्यकताओ की पूर्ति करनी पड़ती है और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह अनेक व्यक्ति के संपर्क में आता है जो उनकी आवश्यकता पूर्ति में सहयोगी होते हैं। धीरे–धीरे निरंतर उद्देश्य पूर्ति के लिए बढ़ता संपर्क संबंधों का निर्माण कर विस्तृत और व्यापक होते जाते हैं तब संबंध सामाजिक संबंध के रूप में परिवर्तित होते हैं। जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच एक अंतःक्रिया होती है तब संबंधो का निर्माण होता है। सामाजिक संपर्क से सामाजिक क्रियाएं विकसित होकर सामाजिक संबंध स्थापित होती है। संबंध जब समान उद्देश्यों को पूरा करने वालों के बीच निर्मित होती है तो अधिक घनिष्ठ होते हैं। इसी तरह मनुष्य ने संपर्क में आकर संबंधो को निरंतर विकसित किया है।

जैसे–जैसे समाज विकसित होता गया लोगों के सामाजिक संबंधो में आर्थिक कारको की भूमिकाएँ भी बढ़ती गयी। आर्थिक कारक किसी भी समाज के विकास, उत्थान एवं प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कारकों में प्रमुख कारक है क्योंकि अर्थ आवश्यकता पूर्ति का बहुत बड़ा माध्यम एवं स्रोत भी है। समकालीन समाज में सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न कारकों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण आर्थिक कारक को माना गया है। भारत ही नहीं बल्कि विश्व के सभी समाजों में समाज का विकास, उत्थान अर्थ पर ही निर्भर होता है।

भारतीय समाज विश्व में अपनी एक अलग ही पहचान रखता है यहां की संस्कृति, मूल्य, परंपराएं एवं मान्यताएं अन्य समाजों से सर्वथा भिन्न रही है जो इन्हें औरों से अलग करती है। लोग इस देश में चाहे कोई भी धर्म, जाति, सम्प्रदाय एवं रीति–रिवाज को मानने वाले हों, एकता सहिष्णुता एवं सौहार्द हमेशा से दृष्टिगोचर होते रहे हैं साथ ही संबंधो में आत्मीयता भी होती है।

प्रस्तुत शोध पत्र इसी प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए वि परिवर्तन के इतने वर्षों के पश्चात भी सामाजिक संबंधो के निर्माण में आर्थिक कारकों की कितनी भूमिका है? क्या केवल आर्थिक कारकों के आधार पर ही संबंध निर्मित होते हैं के अध्ययन पर आधारित है।

अध्ययन का महत्व –

प्रस्तुत शोध अध्ययन समाज में विभिन्न प्रकार की प्रस्थिति धारण करने वाले लोगों के मध्य निर्मित संबंध आर्थिक कारकों के आधार पर ही निर्मित होते हैं से संबंधित है इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज में आज भी सामाजिक संबंध केवल आर्थिक कारकों के कारण ही निर्मित नहीं होती है बल्कि आपसी स्नेह, प्रेम एवं आत्मीयता दिखाई देती है जिसके कारण संबंध अपने आप निर्मित होते जाते है और घनिष्ठ भी। विशेषकर ग्रामीण समाज में आज विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन के फलस्वरूप सामाजिक संबंध केवल अर्थ पर आधारित नहीं है बल्कि ग्रामीण समाज भी विशेषता लिए

*सहायक प्राध्यापक – समाजशास्त्र, चन्द्रपाल डड़सेना शासकीय महाविद्यालय, पिथौरा, महासमुन्द (छ.ग.)

हुये है। सामाजिक, धार्मिक एवं अनेक क्रियाकलापों में सहभागिता निभाने की परंपरा आज भी विद्यमान है जो आर्थिक कारकों पर निर्भर नहीं करती बल्कि सामाजिक मूल्यों एवं संबंधों का विशेष महत्व होता है, परिवर्तन चाहे किसी भी क्षेत्र में हो परंतु सामाजिक संबंध अपनी मौलिकता लिये हुए है।

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध पत्र में सामाजिक संबंधों के निर्माण में आर्थिक कारकों की भूमिका को ज्ञात करना उद्देश्य है।

अध्ययन पद्धति –

अध्ययन क्षेत्रीय सर्वेक्षण अध्ययन पद्धति के द्वारा किया गया है अध्ययन हेतु चयनित क्षेत्रों में जाकर उत्तरदाताओं से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया, तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से किया गया। शोध अध्ययन में अध्ययन पद्धति को तीन भागों में विभक्त कर प्रस्तुत किया गया है

(अ) **अध्ययन क्षेत्र का परिचय** – प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के आरंग विकासखण्ड पर आधारित है। आरंग विकासखण्ड रायपुर से 37 किमी. की दूरी पर पूर्व दिशा में स्थित है।

(ब) **उत्तरदाताओं का चयन** – शोध अध्ययन हेतु विकासखण्ड के 240 अलग–अलग आयु के महिला एवं पुरूष उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है। अलग–अलग आयु और महिला एवं पुरूष दोनों उत्तरदाताओं के चयन से अध्ययन हेतु सूक्ष्म तथ्यों की पुष्टि हो सकी है।

(स) **तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण एवं प्रविधि** – प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रविधि के द्वारा एकत्रित किया गया है।

प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण –

प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण पश्चात सारणीयन किया गया तथा सारणी के माध्यम से तथ्यों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला गया।

शोध प्ररचना –

शोध पत्र में अध्ययन हेतु विवरणात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है।

समस्या का प्रस्तुतीकरण –

तालिका क्रमांक–1

क्रमांक	लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पुरूष	120	50
2.	महिला	120	50
	योग	**240**	**100**

तालिका क्रमांक–1 से ज्ञात होता है कि सामाजिक संबंधों के निर्माण में आर्थिक कारकों की भूमिका संबंधी अध्ययन में कुल उत्तरदाताओं में 50 प्रतिशत पुरूष उत्तरदाताएँ एवं 50 प्रतिशत महिला उत्तरदाताएँ सम्मिलित हैं। महिला एवं पुरूष दोनों प्रकार के उत्तरदाता होने से दोनों के संबंध में सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन प्राप्त करने में सहायता मिली है।

तालिका क्रमांक–2
उत्तरदाताओं की आयु संबंधी विवरण

क्रमांक	आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	20–30	29	12
2.	30–40	45	19
3.	40–50	113	47
4.	50–60	34	14
5.	60–70	19	8
	योग	240	100

हुये है। सामाजिक, धार्मिक एवं अनेक क्रियाकलापों में सहभागिता निभाने की परंपरा आज भी विद्यमान है जो आर्थिक कारकों पर निर्भर नहीं करती बल्कि सामाजिक मूल्यों एवं संबंधों का विशेष महत्व होता है, परिवर्तन चाहे किसी भी क्षेत्र में हो परंतु सामाजिक संबंध अपनी मौलिकता लिये हुए है।

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध पत्र में सामाजिक संबंधों के निर्माण में आर्थिक कारकों की भूमिका को ज्ञात करना उद्देश्य है।

अध्ययन पद्धति –

अध्ययन क्षेत्रीय सर्वेक्षण अध्ययन पद्धति के द्वारा किया गया है अध्ययन हेतु चयनित क्षेत्रों में जाकर उत्तरदाताओं से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया, तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से किया गया। शोध अध्ययन में अध्ययन पद्धति को तीन भागों में विभक्त कर प्रस्तुत किया गया है

(अ) **अध्ययन क्षेत्र का परिचय** – प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के आरंग विकासखण्ड पर आधारित है। आरंग विकासखण्ड रायपुर से 37 किमी. की दूरी पर पूर्व दिशा में स्थित है।

(ब) **उत्तरदाताओं का चयन** – शोध अध्ययन हेतु विकासखण्ड के 240 अलग–अलग आयु के महिला एवं पुरूष उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है। अलग–अलग आयु और महिला एवं पुरूष दोनों उत्तरदाताओं के चयन से अध्ययन हेतु सूक्ष्म तथ्यों की पुष्टि हो सकी है।

(स) **तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण एवं प्रविधि** – प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रविधि के द्वारा एकत्रित किया गया है।

प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण –

प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण पश्चात सारणीयन किया गया तथा सारणी के माध्यम से तथ्यों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला गया।

शोध प्ररचना –

शोध पत्र में अध्ययन हेतु विवरणात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है।

समस्या का प्रस्तुतीकरण –

तालिका क्रमांक–1

क्रमांक	लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पुरूष	120	50
2.	महिला	120	50
	योग	**240**	**100**

तालिका क्रमांक–1 से ज्ञात होता है कि सामाजिक संबंधों के निर्माण में आर्थिक कारकों की भूमिका संबंधी अध्ययन में कुल उत्तरदाताओं में 50 प्रतिशत पुरूष उत्तरदाताएँ एवं 50 प्रतिशत महिला उत्तरदाताएँ सम्मिलित हैं। महिला एवं पुरूष दोनों प्रकार के उत्तरदाता होने से दोनों के संबंध में सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन प्राप्त करने में सहायता मिली है।

तालिका क्रमांक–2

उत्तरदाताओं की आयु संबंधी विवरण

क्रमांक	आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	20–30	29	12
2.	30–40	45	19
3.	40–50	113	47
4.	50–60	34	14
5.	60–70	19	8
	योग	240	100

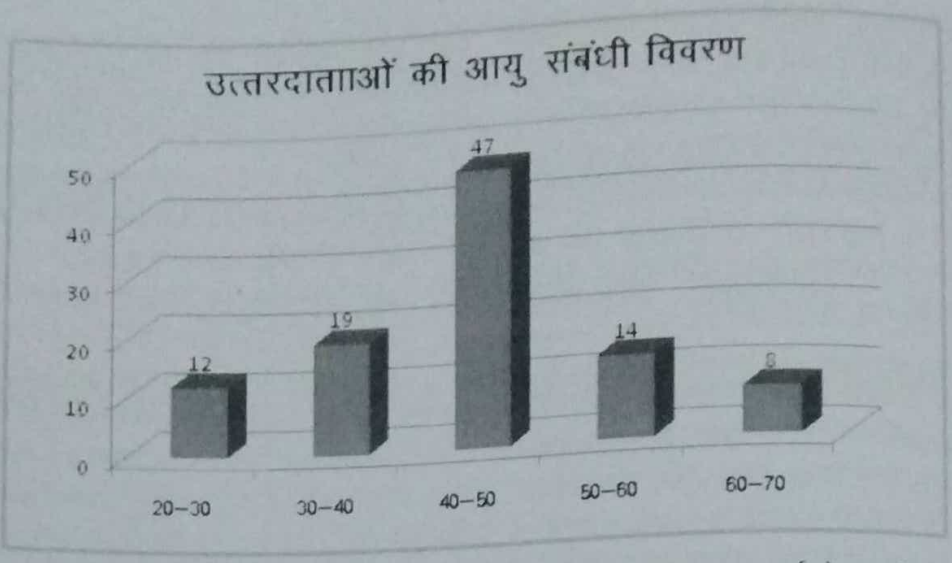

उत्तरदाताओं की आयु संबंधी विवरण तालिका क्रमांक–2 से ज्ञात होता है कि अध्ययन हेतु 20–30 वर्ष तक के आयु वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 12 है, 19 प्रतिशत 30–40 आयु वर्ग के, 47 प्रतिशत 40 से 50 आयु वर्ग के, 50 से 60 वर्ग के 14 प्रतिशत उत्तरदाताएँ तथा 8 प्रतिशत 60 – 70 आयु वर्ष के उत्तरदाताएं सम्मिलित हैं इस तरह से युवा से लेकर वृद्ध तक अलग–अलग आयु वर्ग के सभी उत्तरदाताएँ अध्ययन में सम्मिलित है।

तालिका क्रमांक–3
उत्तरदाताओं की शिक्षा संबंधी जानकारी

क्रमांक	शैक्षणिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	प्राथमिक	13	5.4
2.	माध्यमिक	23	9.5
3.	हाईस्कूल	47	19.5
4.	हायर सेकण्डरी	73	30.4
5.	स्नातक	42	17.5
6.	स्नातकोत्तर / पी.जी.डी. सी.ए. / अन्य	33	14.0
7.	अशिक्षित	09	3.7
	योग	**240**	**100.00**

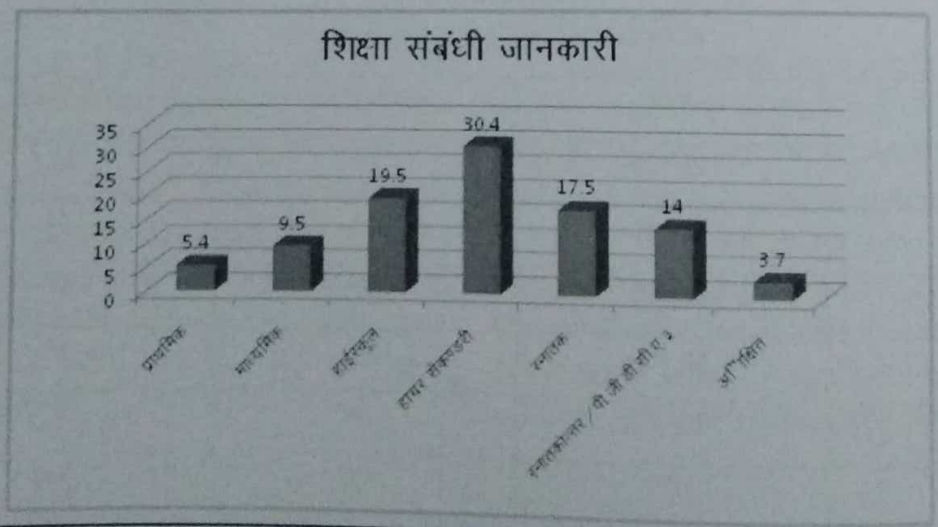

प्रस्तुत तालिका क्रमांक–3 के विवरण से यह स्पष्ट होता है कुल उत्तरदाताओं में सबसे अधिक 30.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हायर सेकेण्डरी स्तर की शिक्षा प्राप्त की है। लगभग 3.7 प्रतिशत उत्तरदाताएं अशिक्षित भी है। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताएं 5.4 प्रतिशत, माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले 9.5 प्रतिशत उत्तरदाताएं, 14 प्रतिशत स्नातकोत्तर, पी.जी.डी.सी.ए. एवं अन्य तथा 17.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्नातक स्तर की शिक्षाएं प्राप्त की है। इसी तरह 19.5 प्रतिशत उत्तरदाताएं माध्यमिक शिक्षा प्राप्त किये हैं। अतः अलग–अलग शिक्षा का स्तर उत्तरदाताओं की अध्ययन में तथ्य संकलित करने हेतु लाभदायक रहीं है।

तालिका क्रमांक–4
उत्तरदाताओं की रोजगार संबंधी विवरण

क्रमांक	रोजगार	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	प्राइवेट नौकरी	31	13
2.	सरकारी नौकरी	63	26
3.	व्यवसाय	55	23
4.	मजदूरी	26	10
5.	सेवानिवृत्ति	12	5
6.	बेरोजगार	33	14.7
7.	अन्य	20	8.3
	योग	**240**	**100.00**

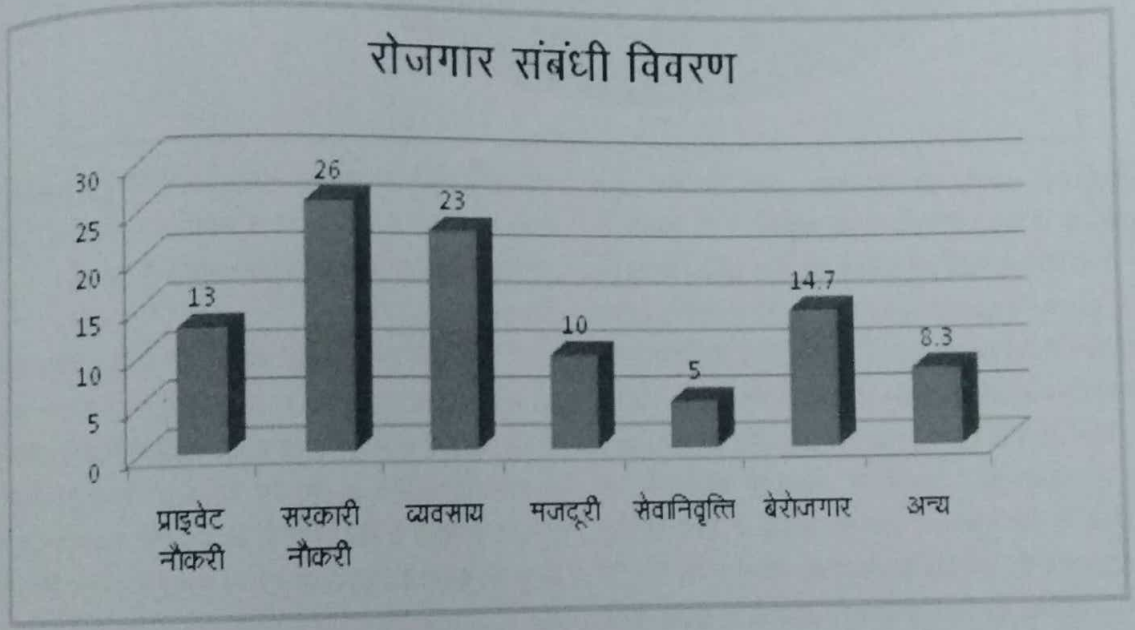

उपरोक्त तालिका क्रमांक–4 से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में सबसे अधिक 23 प्रतिशत उत्तरदाताएँ व्यवसाय करते है जिसके अंतर्गत कुछ छोटे, कुछ मध्यम एवं कुछ बड़े व्यवसाय में संलग्न है। प्राइवेट नौकरी करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 13 है, सरकारी नौकरी करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 26, मजदूरी करने वाले उत्तरदाता 10 प्रतिशत, 5 प्रतिशत सेवानिवृत्त उत्तरदाता, 13.7 प्रतिशत बेरोजगार हैं जबकि 8.3 प्रतिशत उत्तरदाताएं अन्य काम के अंतर्गत दैनिक वेतन भोगी कार्य करते है। इस प्रकार अलग–अलग रोजगार प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं से उनकी सामाजिक संबंधो के बारे में जानकारियाँ प्राप्त होती है। 33 प्रतिशत उत्तरदाताएं अभी भी बेरोजगार है जिन्हें किसी प्रकार का रोजगार प्राप्त नहीं है इनमें से कुछ युवा उत्तरदाताएं रोजगार हेतु प्रयासरत हैं।

तालिका क्रमांक–5

सामाजिक संबंधो के निर्माण में आर्थिक कारकों का आवश्यक होना संबंधी जानकारी

क्रमांक	आवश्यक होना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	बहुत अधिक	88	36.6
2.	कुछ हद तक	121	50.4
3.	बिल्कुल नहीं	31	13
	योग	240	100.00

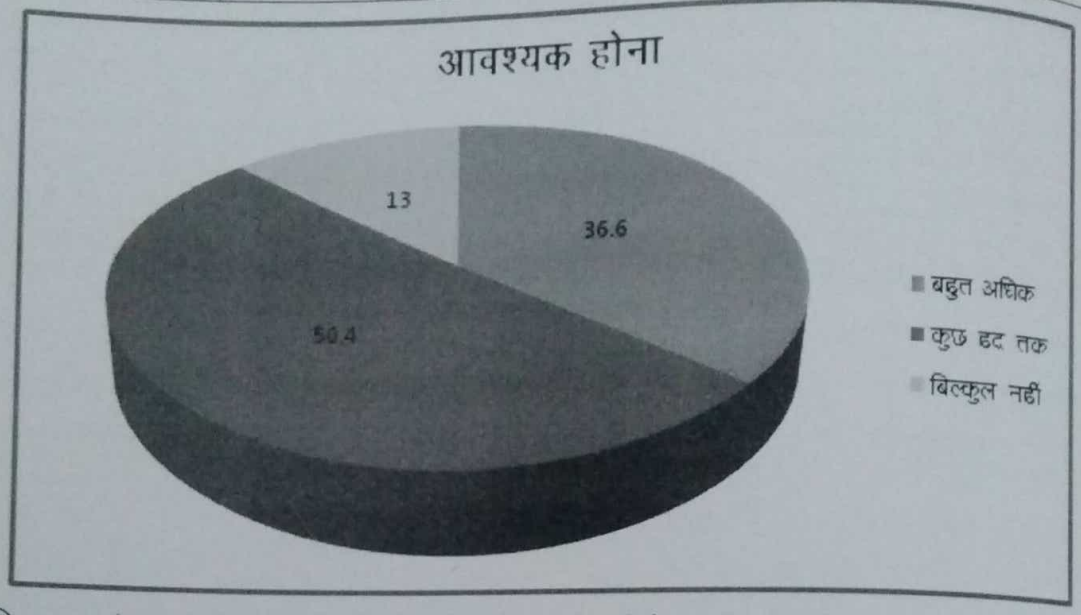

तालिका क्रमांक–05 से ज्ञात होता है कि कुल उत्तरदाताओं में 36.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ही संबंधो के निर्माण में आर्थिक कारकों की भूमिका को बहुत अधिक महत्वपूर्ण बताया है इन उत्तरदाताओं का कहना है कि बिना अर्थ के समाज में उच्च प्रस्थिति प्राप्त करने वाले जिनकी आर्थिक स्थिति भी उच्च रहती है के साथ सामाजिक संबंध अच्छे से निर्मित नहीं हो पाती है क्योंकि उनके सोच विचार एवं जीवन शैली अलग होती है। 50.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सामाजिक संबंधों के निर्माण में यह जानकारियाँ दी कि कुछ हद तक ही संबंधो के लिये आर्थिक कारक आवश्यक है। इन उत्तरदाताओं का कहना है कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था की संरचना ही अन्य समाजों से अलग करती है। भारत देश गांवों का देश होने के कारण लोगों में सामुदायिक भावना एवं एक दूसरे के प्रति आत्मीयता भरा स्नेह प्राप्त होती है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से किसी न किसी रूप में घनिष्ठता से बंधे होते हैं। 13 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी राय में आर्थिक कारकों को सामाजिक संबधो के निर्माण हेतु बिल्कुल भी नहीं माना है। इनका मानना है कि समाज में संबंधों का निर्माण करना मानवीय प्रवृत्ति है लोग जहाँ होंगे वहां संबंध अपने आप निर्मित हो जाते हैं। अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में 63.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सामाजिक संबंधों के निर्माण में आर्थिक कारक की भूमिका को महत्वपूर्ण नहीं माना है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक कारकों की भूमिकाएँ समाज के विकास में महत्वपूर्ण रहे हैं परंतु अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि आज भी संबंधों के निर्माण एवं निर्वहन में व्यक्तियों के बीच आपसी प्रेम, घनिष्ठता, स्नेह एवं आत्मीयता समाज के लोगों में विद्यमान है जो इस समाज को अन्य समाजों से पृथक करती है जिनके आधार पर सामाजिक संबंध निर्मित होते है।

सन्दर्भ :–

1. Mishra, J.P., (2013), "Agricultural Economics", Sahitya Bhavan Publication Agra, P. 530
2. शैलेश चौबे, नरेन्द्र शुक्ल (2006), भारत में आर्थिक सुधार आवश्यकता प्रभाव व सुझाव अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली, पृ. 1–20

...सुरिया, अनिता (2010), मध्यमवर्गीय परिवार ...स्याएँ एवं सामंजस्य, शताक्षी प्रकाशन, रायपुर, पृ ...-190

...vastav Shuchi, (2015) The Economics status ...the : A study in Anthropological Gerono.

...वृन्दा (1998), मानव विकास एवं परिवारिक ...-पंचशील प्रकाशन नागपुर, पृ 659

...राम, (2011), भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत ...पब्लिकेशन, जयपुर, पृ 213-227.

...Jyoti, (2007) Social change & control ...covery publishing house Jaipur, P.No. 2 to 5

8. Mahatma, K.C. (1993), Socio-economic status of the aged- A case study. man in India, 73 (3) P. 201-213

9. Patel, Mehul, (2019), E-commerce : A learning on benefits and challenges in a developing Economy in India, Printing Area : Interdisciplinary multilingual Referecal Journal. P.No. 33 to 38

10. Alterkar, Samajik Sahayog Patrika. 2014 Vol. No. III, P.No. 20-30

11. Panikar, K.M. (1956), "Hindu society at the crossroads". Asion publishing house Newyork, P. 5-30

❑❑❑

रिसर्च पेपर (Research Paper) श्रीमति प्रतिमा चन्द्राकर						
S.No.	Title of Paper	Name of the Authors	Department of the teacher	Name of Journal	Year of Publication	ISSN Number
1	प्रेमचंद के साहित्य में नारी	श्रीमति प्रतिमा चन्द्राकर	हिन्दी	प्रिंटिंग एरिया	2019	23945 303
2	सूरदास का भ्रमर गीत और वियोग श्रृंगार	श्रीमति प्रतिमा चन्द्राकर	हिन्दी	विद्या--वार्ता	2020	2319 9318

32

सूरदास का भ्रमर गीत और वियोग श्रृंगार

श्रीमती प्रतिमा चन्द्राकर
सहायक प्राध्यापक— हिन्दी
चन्द्रपाल डड़सेना शा. महाविद्यालय पिथौरा,
जिला— महासमुंद (छ.ग.)

श्रीमती सीमा प्रधान
सहायक प्राध्यापक— हिन्दी,
महाप्रभु वल्लभाचार्य शा. महाविद्यालय
महासमुंद (छ.ग.)

भक्तिकाल को हिन्दी काव्य साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है । इस काल के कवियों ने भक्ति की गंगा—यमुना बहाते हुए उच्चकोटि के ग्रंथो की रचना की । इन कवियों में मुख्य रूप से सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास, मीराबाई, रसखान आदि का नाम उल्लेखनीय है । भक्तिकाल में सगुण और रामकाव्य के अंतर्गत जिन कवियों ने राम को अपने काव्य के केन्द्र में रखा उनमें तुलसीदास जी का नाम सर्वप्रथम है तथा कृष्ण काव्य के अंतर्गत जिन कवियों ने कृष्ण की लीलाओं को अपने काव्य के केन्द्र में रखा उनमें सूरदास जी का नाम सर्वोपरि है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार— ''जिस प्रकार रामचरित का गान करने वाले कवियों में गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार कृष्ण चरित गाने वाले कवियों में महात्मा सूरदास का । वास्तव में ये हिन्दी काव्य गगन के सूर्य और चन्द्र है ।''(१)

सूरदास जी कृष्ण के अनन्य भक्त थे । उन्होंने कृष्ण लीलाओं के रूप में वात्सल्य एवं श्रृंगार का अनोखा एवं अद्‌भूत चित्रण किया है । वात्सल्य के रूप में कृष्ण के बाल्यकाल के विभिन्न बाल—सुलभ चेष्टाओं का अद्वितीय वर्णन किया जो पाठक के मन को रस—विभोर कर देती है जैसे— चन्द्रमा को खिलौने के रूप में माँगना, यशोदा मैया से चोटी कब बढ़ेगी पूछना, घुटनों के बल चलना, अपने बंशी और खिलौने के प्रति प्रेम रखना, मुख पर दधि लेप किए हुए दौड़ना, मुख में ब्रम्हाण्ड दिखाना, और कहीं अपने पैर के अंगूठे का रसपान करना आदि । वात्सल्य के साथ ही सूरदास जी ने श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग पक्ष का भी सजीव एवं सरस चित्रण अपने काव्य में किया है । सूरदास को वात्सल्य एवं श्रृंगार वर्णन में जितनी सफलता मिली उतनी किसी और कवि को नहीं । आचार्य शुक्ल के अनुसार— ''श्रृंगार और वात्सल्य के क्षेत्र में जहाँ तक इनकी दृष्टि पहुंची वहाँ तक और कोई किसी कवि का नहीं ।''(२)

श्रृंगार के संयोग पक्ष का वर्णन उन्होंने राधाकृष्ण तथा गोपियों के मिलन के रूप में किया है तथा वियोग पक्ष का वर्णन उन्होंने भ्रमरगीत सार के रूप में किया है ।

भ्रमर गीत सूरदास की रचना 'सूरसागर' का ही अंप है और इसका मुख्य स्त्रोत श्रीमद् भागवत् है । इस कथा में मुख्य रूप से श्रीकृष्ण के मथुरा गमन कृष्ण द्वारा उद्धव को गोपियों को योग शिक्षा देने के लिये गोकुल भेजना तथा उद्धव का योग शिक्षा भुलकर— गोकुल के प्रेम से पुलकित होकर कृष्ण को संदेश सुनाने तक की कथा का वर्णन है ।

भ्रमर गीत में सर्वप्रथम उद्धव ब्रज में आगमन के पश्चात नंद यशोदा को कृष्ण का संदेश सुनाते हैं, तत्पश्चात राधा और गोपियों से योग शिक्षा की चर्चा करने लगते हैं, उसी समय एक भ्रमर वहाँ उड़ते हुए आता है, उसी भ्रमर को संबोधित करते हुए गोपियाँ कृष्ण और उद्धव को उलाहना देती हैं, उसी कारण इस प्रसंग का नाम ''भ्रमर गीत'' पड़ा है । भ्रमर गीत मुख्य रूप से विरह काव्य है । कृष्ण वियोग में दग्ध गोपियों की विरह दशा का मर्मस्पर्शी चित्रण सूरदास जी ने किया है । आचार्य शुक्ल के अनुसार— ''श्रृंगार रस का ऐसा सुन्दर उपालम्भ काव्य दूसरा नहीं है ।''(३)

गोपियाँ कृष्ण की अनुगामिनी है, उद्धव गोपियों

को जब योग की शिक्षा देने लगते है तब गोपियाँ कृष्ण से अनन्य प्रेम का परिचय देती हैं, वे कहती हैं– हम तो कृष्णार्पित हैं उनके अलावा हम किसी और को नहीं जानती, हम तो नन्दगांव के रहने वाले हैं । हमारा नाम गोपाल है, जाति कुल सब गोप है और यहाँ के हम सारे गोप–गोपाल की उपासना करते हैं –

''हम तो नंदघोष के वासी ।
नाम गोपाल, जाति कुल गोपहि,
गोप–गोपाल–उपासी ।''(४)

गोपियाँ कृष्ण की एकनिष्ठ प्रेमिकाएँ हैं । वे प्रेम और भक्ति की प्रतिष्ठा के ऐसे ऐसे तर्क देती हैं कि उद्धव निरूत्तर हो जाते हैं । वे गोपियाँ मनसा, वाचा, कर्मणा कृष्ण प्रेम का परिचय देती हुई कहती है कि– यदि हमें कृष्ण मिल जाये तो हमें हमारे प्रेम की प्राप्ति हो जायेगी और यदि नहीं मिलें तो भी संसार हमारा यशगान करेगा । इस तरह हमारा जीवन तो दोनों ओर से ही सार्थक हो जायेगा । गोपियों का कृष्ण साधारण मानव नहीं है और न ही गोपियों का प्रेम साधारण है वे तो कृष्ण प्रेम की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं, वे उद्धव से कहती है–

''हम तो दुहूँ भाँति फल पायो ।
को ब्रजनाथ मिलै तो नीको नातरू जग जस गायो ।।
कहाँ वै गोकुल की गोपी, सब बरनहीन लघुजाती ।
कहँ वै कमला के स्वामी संग मिल बैठी एक पाँती ।।''(५)

निर्गुण निराकार ब्रम्ह को मानने वाले उद्धव गोपियों को योग की शिक्षा देने लगते है । उनके पास योग के पक्ष में अनेक तर्क है, उन तर्कों का खण्डन करते हुए वियोगिनी गोपियाँ अपनी तीखी वाणी से उद्धव का उपहास करती हैं । योग को निस्सार प्रमाणित करते हुए तिरस्कृत करती हैं और सगुण का मण्डन करती है । प्रो. शर्मा के अनुसार– ''भ्रमरगीत की सृष्टि–गोपियों राधा के विरह के चित्रण के लिए तो हुई ही है साथ ही निर्गुण के खण्डन और सगुन के मण्डन के लिए भी हुई है ।''(६)

गोपियाँ उद्धव को उलाहना देती हुई कहती है– उद्धव तुम तो एक व्यापारी की तरह अपने सिर पर ज्ञान की गठरी बाँधकर लाये हो और ये गठरी तुम्हारे खुद के लिए ही बोझ है । यह तुम्हारा ज्ञान फटकन और खारे कुंए के पानी की तरह है और हमारे कृष्ण स्वर्ण के समान बहुमूल्य और दूध की तरह मीठा और सरस है । वे व्यंग्य करती हुई कहती हैं–

''आयो घोष बड़ो व्यापारी ।
लादि खेप गुन–ज्ञान जोग की ब्रज में आन उतारी''(७)

इतना ही नहीं गोपियाँ अपनी वचनवक्रता एवं चतुराई का परिचय देते हुए आगे और कहती हैं–

''जोग ठगौरी ब्रह न बिकै है ।
यह व्यापार–विहारो उधों ! ऐसोई फिरि जैहै ।।
जावै लै आर हो मधुकर ताके उर न समैहै ।
दाख छाड़ि के कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै ।।''(८)

गोपियों की निष्ठा, विश्वास, प्रेम, एकलीनता कृष्ण के प्रति अटूट है । गोपियाँ उद्धव को अपने वाक् चातुर्य से पराजित करती हुई लगती है । गोपियों के कथन– वाग्वैदग्धपूर्ण है जो मन को छू लेती है । आचार्य शुक्ल के अनुसार–''सूरसागर का सबसे मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्धपूर्ण अंश भ्रमरगीत है, जिसमें गोपियों की वचनवक्रता अत्यंत मनोहारिणी है ।''(९)

कृष्ण का सगुन साकार–स्वरूप ही गोपियों का प्रेम है, इसीलिए जब उद्धव उनसे योग शिक्षा की बाते करते हैं तो उन्हें वो खरी–खरी सुनाती हुई कहती है कि– यह योग हमारे किसी काम का नहीं हैं, इसे तुम ही गाँठ बाँधकर रखों, कहीं ऐसा न हो कि योग तुमसे ही छूट जाये ।

''उधो ! जोग बिसरि जनि जाहु ।
बाजहु गाँठि कहुँ जनि छूटै फिर पाछे पाछिताहु ।।
ऐसी वस्तु अनुपम मधुकर । मरम न जानै और ।
ब्रजवासिन के नाहि काम की तुम्हरे ही है ठौर ।''(१०)

मानव मन की विशेषता है कि सुख के समय आस–पास की वस्तुएं भी खुशियाँ बांटती दिखाई देती है किन्तु दुःख के समय वही वस्तुएं काँटती हुई सी दिखाई देती है, वैसी ही गोपियों को संयोगावस्था में जो वस्तु बहुत प्रिय लगती थी वियोगावस्था में वही वस्तुएं कष्टकारक और बहुत अप्रिय लगने लगती है । कृष्ण के संग जो उपवन मनोहर प्रतीत होता है वही उपवन अब शत्रु बनकर अग्नि की लपटों की तरह हो

गया है । कृष्ण के वियोग में उन्हें यमुना का बहना, पक्षियों का कलरव, कमल का खिलना, भौंरों का गुँजार करना, सब कुछ व्यर्थ सा जान पड़ता है । यहाँ तक शीतलता प्रदान करने वाली वस्तुएं भी सूर्य की तरह दाहक दिखाई पड़ती है । गोपियाँ विरहदग्ध होकर कहती है—

"विन गोपाल वैरनि भई कुंजे ।
तव ये लता लगति अति शीतल,
अव भई विषय ज्वाल की पूंजे ।
वृथा वहति जमुना, खग बोलत,
वृथा कमल फूलै, अलि गुंजे ।
पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भई भुंजे ।।"(११)

भ्रमरगीत में कुब्जा प्रसंग का भी वर्णन है, गोपियाँ कुब्जा के प्रति सौतियाडाह से ग्रसित है । एक कुबरी और कुरूप दासी जो कंस के लिए नित्य केसर चंदन का तिलक बनाती थी, उस कुब्जा को कृष्ण ने सौंदर्यवती बना दिया । अब वह कृष्ण की अनुरागिनी वन उसको तिलक लगाती है । गोपियों का कुब्जा के प्रति असुया भाव है । कृष्ण के कुब्जाप्रेम पर गोपियाँ व्यंग्य करती हुई कहती है कि कृष्ण ने हमारे रूप, गुन, गति सब हर लिया वदले में हमें कुछ भी नहीं दिया । उसी कृष्ण को कुब्जा ने तनिक केसर चंदन का तिलक लगाकर अपने वश में कर लिया, ये सुनकर हमारे हृदय को शीतलता प्राप्त हुई । गोपियों का कटाक्ष इस पद में दृष्टव्य है—

"वरू वै कुब्जा भलौ कियौ ।
सुनि—सुनि समाचार— उधो मो कछुक सिरात हियो ।।
जाको गुन गति नाम रूप हरि हारयो, फिर न दियो ।
तिन अपनो मन हरत न जान्यो, हँसि—हँसि लोग जियो ।।
सूर तनक चंदन चढ़ाय तन, ब्रजपति वस्य कियो ।
और सकल नागरि—नारिन को दासी दाँव लियो ।।"(१२)

भ्रमरगीत सार के अंत में गोपियों को निर्गुण का उपदेश देने वाला उद्धव खुद ही गोपियों के तर्कशक्ति के आगे झुककर सगुणवादी होकर वापस कृष्ण के पास आते हैं और कहते हैं कि हे प्रभु ! आपने मुझ पर दयाकर गोपियों के पास भेजा था । अव मेरा मन शान्त, निश्चल और स्थिर हो गया है—

"अव अति पंगु भयो मन मेरे ।
गयो वहाँ निर्गुन कहिवे को,
भयो सगुन को चेरो ।।"(१३)

निष्कर्षत: 'भ्रमरगीत निर्गुण पर सगुण का वुद्धि पर हृदय का और योग पर भक्ति की विजय कथा है । वास्तव में सूर के काव्य में ज्ञान, भक्ति और प्रेम का सहज रूप में समन्वय है ।

संदर्भ :—

(१) शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ— १२२.

(२) वही, पृष्ठ— १२२—१२३.

(३) संपा. शुक्ल रामचन्द्र : सूरदास कृत भ्रमर—गीत—सार, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर : २०१२, पृष्ठ— ४०.

(४) वही, पृष्ठ— ६४.

(५) वही, पृष्ठ— २८.

(६) संपा. शर्मा राजकुमार : सूरदास और भ्रमरगीत, कॉलेज बुक डिपो जयपुर : २०११, पृष्ठ— १००.

(७) संपा. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र : सूरदास कृत भ्रमर—गीत—सार, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर : २०१२, पृष्ठ— ६५.

(८) वही, पृष्ठ— ६५.

(९) शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ— १२५.

(१०) संपा. शुक्ल रामचन्द्र : सूरदास कृत भ्रमर—गीत—सार, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर : २०१२, पृष्ठ— ४५

(११) वही, पृष्ठ ८१.

(१२) वही, पृष्ठ— ६८.

(१३) वही, पृष्ठ— १५९.

❑❑❑

https://www.behtarlife.com/2016/02/digital-india-its-impact-on-villages.html

1- https://www.techactive.in/what-is-digital-india/

2- https://www.hindikiduniya.com/essay/digital-india-essay-in-hindi/

3- https://www.researchgate.net/publication/324248393_ An _ Overview _ of _ Digitalization _ of_Rural_India_ and_Its_ Impact_ on_ the _ Rural_EconomyAn_O...

❐ ❐ ❐

25

प्रेमचंद के साहित्य में नारी

श्रीमती प्रतिमा चन्द्राकर

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

चन्द्रपाल डड़सेना शास. महाविद्यालय पिथौरा

जिला— महासमुंद

कहा जाता है कि यदि हमें इतिहास को जानना है तो उस युग की साहित्य का अध्ययन करना चाहिए । साहित्य समाज का दर्पण होता है, और हम साहित्य के माध्यम से उस समय के समाज का अध्ययन कर सकते है, क्योंकि साहित्य अपने समय के जनमानस की अभिव्यक्ति करता है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि— 'प्रत्येक देश का साहित्य वहॉ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है'[१] दूसरे शब्दों में कहे तो समाज में घटित घटनाओं, समस्याओं, प्रथा, परम्पराओं, आचार—विचार की जानकारी साहित्य से प्राप्त की जा सकती है ।

हिन्दी के उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं में उनके समय के समाज के परिदृश्य का जीवंत एवं यथार्थ वर्णन मिलता है । उस परिदृश्य में पूरे भारतीय जनमानस के समस्याओं का वर्णन मिलता है, खासकर ग्रामीण परिवेश का । प्रेमचंद जी की रचनाएँ लाकानुभव पर आधारित है जिसे उन्होंने साहित्य में पूरे लालित्य के साथ प्रस्तुत किया है । उन्होंने देश की प्रमुख समस्या अशिक्षा, बेरोजगारी, गरीबी, किसानों का शोषण, नारी शोषण, आदि पर अपने कलम से प्रहार किया है ।

प्रेमचंद जी ने स्त्री जीवन की परिस्थितियों एवं उनके शोषण के खिलाफ आवाज उठाई, उन्हे अपनी रचनाओं में विभिन्न रूपों में स्थान दिया । उन्होंने विधवा विवाह, बेमेल विवाह, स्त्री शिक्षा, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि को यथार्थ रूप में अपने रचनाओं में

धनिया, मुन्नी, सकीना, सुखदा, सुमन, जालपा आदि ऐसी ही नारी पात्र है ।

निर्मला प्रेमचंद जी की दहेज प्रथा और बेमेल विवाह पर लिखा गया उपन्यास है । दहेज प्रथा के कारण इस उपन्यास की प्रमुख पात्र निर्मला का विवाह टूट जाता है और तीन पुत्रों के पिता तोतेराम से उनका विवाह होता

है । तोतेराम शंकालू प्रवृत्ति का व्यक्ति है जो अपने पुत्र एवं पत्नी के संबंधों पर शंका करता है, जो पुत्र के प्राणांत का कारण बनता है । निर्मला त्याग एवं सेवा की प्रतिमूर्ति है, वह पति के संदेह करने पर भी सौतेले पुत्र की प्राणरक्षा के लिए रक्त देने अस्पताल जाती है । उसके पति को अपनी गलती पर पश्चाताप होता है, तब वह कहता है— "आज तक वह मेरी भोग की वस्तु थी, आज से वह मेरी भक्ति की वस्तु है । मैंने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया है, क्षमा करों ।"[२]

गबन की जालपा देशभक्त और स्वाभिमानी है, वह क्रांतिकारियों के प्रति सम्मान भाव रखती है, वह अपने पति जो क्रांतिकारियों के विरूद्ध गवाह बन जाता है और चौदह लोगों में एक को फांसी और शेष को आठ—आठ साल की सजा करा देता है— को कायर कहते हुए अपने पति रमाकांत से कहती है—"अगर तुम सख्तियों और धमकियों से दब सकते हो तो तुम कायर हो, तुम्हें अपने को मनुष्य कहने का अधिकार नहीं । क्या सख्तियां की थी जरा सुनु ! लोगों ने तो हंसते—हंसते सिर कटा लिए" ....[३] ।

इस उपन्यास की जालपा के माध्यम से प्रेमचंद ने झूठ का साथ न देकर सच का साथ देकर पति का हृदय परिवर्तन करने वाली स्त्री का चित्रण किया है ।

गोदान उपन्यास की धनिया निडर, साहसी एवं न्यायप्रिय महिला है, वह सत्य के आगे किसी से नहीं डरती । गाय की मृत्यु पर दरोगा रिश्वत के पैसे न मिलते देखकर धनिया को खिसिया कर बालते है कि हीरा को फंसाने के लिए तुमने ही गाय को जहर दे दिया तब वह निडर होकर कहती है— "हॉ दे दिया ! अपनी गाय थी, मार डाली, फिर किसी का जानवर तो नहीं मारा ? तुम्हारे तहकीकात में यही निकलता है, तो यह लिखों, पहना दो मेरे हाथ में हथकड़ियां तुम लिया तुम्हारा न्याय और तुम्हारे अक्कल की दौड़ । गरीबों का गला काटना दूसरी बात है, दुध का दुध और पानी का पानी करना दूसरी बात ।"[४]

गोदान में मेहता के माध्यम से प्रेमचंद जी ने अपने नारी संबंधी विचार व्यक्त करते हुए कहते है— "जब पुरूष में नारी के गुण आ जाते है तो वो महात्मा बन जाता है, और अगर नारी में पुरूष के गुण आ जाये तो वो कुल्टा बन जाती है ।"[५] इस वाक्य के माध्यम से प्रेमचंद जी कहना चाहते है कि नारी प्रेम और पवित्रता की मूर्ति है, जो मौन रहकर तथा अपने को मिटाकर पति का अंश बनती है लेकिन पुरूष में वह सामर्थ्य नहीं कि अपने को मिटा सकें । प्रेमचंद जी ने इस वाक्य के माध्यम से नारी को पुरूष के समकक्ष नहीं बल्कि पुरूष से श्रेष्ठ माना है । प्रेमचंद जी नारी के मातृत्व रूप को सबसे बड़ी तपस्या माना है । उन्होंने नारी के मातृत्व रूप को सबसे श्रेष्ठ माना है । गोदानमें उन्होंने धनिया, सिलिया, झुनिया, कामिनी आदि के माध्यम से नारी मातृत्व रूप का चित्रण किया है । मातृत्व के संबंध में वे लिखते है कि— "नारी मात्र माता है और उसके उपरांत वो जो कुछ है वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र । मातृत्व विश्व की सबसे बड़ी साधना, सबसे बड़ी तपस्या, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है ।"[६] प्रेमचंद जी ने स्त्री के त्याग एवं दया जैसे गुणों के कारण उन्हें पुरूषों से हमेशा श्रेष्ठ माना है । वे एकनिष्ठ प्रेम के समर्थक है, उस प्रेम पर प्रेमी के अतिरिक्त किसी और का अधिकार नहीं मानते प्रेम के संबंध में उन्होंने लिखा है कि— "प्रेम सीधी—सादी गुरू नहीं, खूंखार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की दृष्टि भी नहीं पड़ने देता । श्रद्धा तो अपने को मिटा डालती है और अपने मिट जाने को ही अपना भगवान बना लेती है, प्रेम अधिकार करना चाहता है ।"[७] वे भारतीय नारियों का पश्चिम की नारियों की तरह स्वच्छंदता को शुभ नहीं मानते ।

सेवासदन की सुमन, पति की निर्दयता के कारण घर से निकलकर वेश्यावृत्ति को अपना लेती है, लेकिन अपने नारित्व पर ऑच नहीं आने देती । वहां से निकलकर वह विधवा आश्रम तथा सदन के घर

पर रहती है लेकिन उसे सम्मान नहीं मिलता । अंत में वह अपने पति गजानंद की प्रेरणा से अपने जीवन को सेवाकार्य में लगा देती है । प्रेमचंद जी ने उसे अपने कर्म पर पश्चाताप करते हुए दिखाया है । वह पश्चाताप करती हुई कहती है– ''नहीं, मैं किसी को दोष नहीं दे सकती बुरे कर्म तो मैंने किए है, उनका फल कौन भोगेगा ? विलास–लालस ने मेरी यह दुर्गति की । मैं कैसे अंधी हो गई थी, केवल इंन्द्रियों के सुखभोग के लिए अपनी आत्मा का नाश कर बैठी ! मुझे कष्ट अवश्य था । मैं गहने–कपड़े को तरसती थी, अच्छे भोजन को तरसती थी, प्रेम को तरसती थी।''[८]

प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में स्त्री के विभिन्न रूपों को चित्रित किया है । रंगभूमि की सोफिया देश सेवा के लिए स्वयं को समर्पित कर देती है, कर्मभूमि की मुन्नी गोरों से अपने अपमान का बदला लेती है, कायाकल्प की लौंगी धन की अपेक्षा प्रेम को महत्व देती है, कर्मभूमि का सकीना नि:स्वार्थ प्रेम को अपना बल मानती है, प्रतिज्ञा की प्रेमा कर्तव्य और प्रेम दोनों को निभाना जानती है, गोदान की सिलिया एकनिष्ठ प्रेम का वरण करती है, गोदाम की ही मालती पश्चिम से शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी सेवाव्रत को धारण करती है । गबन की जालपा को गबन कर लाये हुए पैसे से चन्द्रहार मंजुर नहीं । प्रेमचंद जी की कहानियों की नारी ठाकुर के कुएं पर जाकर दलित व्यवस्था को चुनौती देने वाली है । वह बड़े घर की बेटी भी है ।

निष्कर्षत: उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद ने साहित्य में स्त्री को प्रेम, दया, माया, ममता, वीरता, साहस, सेवा, न्याय, निडरता आदि अनेक रूपों में चित्रित कर नारी एवं समाज की समस्याओं का कुशल चित्रण किया है, उनकी रचनाओं में बड़े घर की बेटी, सेवासदन, निर्मला, मंगलसूत्र, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा आदि नारी केन्द्रित रचनाएं है ।

संदर्भ :–

(१) शुक्ल, रामचन्द्र (२००५) : हिन्दी साहित्य का इतिहास, विश्वभारती प्रकाशन नागपुर पृ.सं.२१

(२) मुंशी प्रेमचंद (२००६) : निर्मला, भारत प्रकाशन, लखनऊ पृ.सं. ८५

(३) मुंशी प्रेमचंद (२०११) : गबन, नई सदी बुक हाऊस, दिल्ली पृ.सं. २३४

(४) मुंशी प्रेमचंद (२०१३) : गोदान, नई सदी बुक हाऊस, दिल्ली पृ.सं. ९३

(५) नवभारत (२६ जुलाई २०१५) : पृ.सं. ०३

(६) नवभारत (२६ जुलाई २०१५) : पृ.सं. ०३

(७) नवभारत (२६ जुलाई २०१५) : पृ.सं. ०३

(८) मुंशी प्रेमचंद (२००७) : सेवासदन, पुस्तक संसार, जयपुर पृ.सं. २५४

❐ ❐ ❐

The Indian Economic Journal

JOURNAL OF THE INDIAN ECONOMIC ASSOCIATION

Special Issue, December 2019

ECONOMY OF CHHATTISGARH

IEJ

The Indian Economic Journal

Editor
Hanumant Yadav

Associate Editors
Ravindra Kr. Brahme
S. Narayanan

The Journal, an organ of the Indian Economic Association aims at promoting scientific studies in Economic Theory, Indian Economic Policies, Energy and Water Resources, Human Resource Development, Monetary Economics, International Trade and Finance, Industrial Economics, Poverty and Unemployment and related topics of current interest.

Editor
Anil Kumar Thakur
Road No. 3, House No. B/3
Secretariat Colony, Kankarbagh
Patna-800020, Bihar (India)
Phone: 0612-2354084
Mobile: +91-9431017096
email: anilkumarthakur.iea@gmail.c

Published by
THE INDIAN ECONOMIC ASSOCIAT

THE INDIAN ECONOMIC ASSOCIATION
Special Issue, Conference 2019

CONTENTS

1. **Low Productivity of Rice in Chhattisgarh: Causes and Remedies**
A.K. Pandey, Radha Pandey, Ranu Agrawal and Kavita Sahu . . 1

2. **Nature of Health Expenditure of Chhattisgarh State: An Analysis**
B.L. Sonekar, Archana Sethi and Kapil Kumar Chandra 7

3. **Status of Industrial Development in Chhattisgarh with Special Reference to Micro, Small and Medium Scale Enterprises**
Anshumala Chandangar 19

4. **Impact of Kisan Samridhi Yojna in Chhattisgarh: An Analysis**
Ankit Tiwari, B.L. Sonekar and Pragati Krishnan 26

5. **Occupational and Human Rights Issues of Migrant Workers – A Study on Informal Construction in Chhattisgarh**
Archana Sethi and B.L. Sonekar 31

6. **An Analysis of the Determinants and Impact of Agricultural Diversification in India – With Special Reference to Chhattisgarh**
D.B. Usharani 38

7. **Suicides by Farmers and Agricultural Labourers in Chattisgarh**
Laila Memdani 52

8. **An Economic Analysis of Crop Diversification in Chhattisgarh**
M. Aruna 62

9. **Impact of Left-Wing Extremism on Development of The Tribal Areas of South Chhattisgarh**
Neelima Toppo and D.N. Varma 73

10. **The Status of Employment in Tribal Handicraft in Chhattisgarh (With Special Reference to Primitive Tribes)**
Mahesh Shrivastava 78

11. **Economic Impact of Air Pollution on Urban Household in Raipur City**
Vinit Kumar Sahu and Ravindra Brahme 85

12. **Challenges to Agriculture Sector in Chhattisgarh Economy**
IRS Sarma, Koti Reddy T. and Muni Reddy 92

13. **Analysis of Effect of Fertilizers in Productivity of Rice in Chhattisgarh**
Shradha Agrawal Radha Pandey and Amarkant Pandey 102

14. **Inter-District Disparities in Human Development in Chhattisgarh: A Principal Component Analysis**
Nilesh Kumar Tiwari 106

15. **Analytical Study of the Economic Status and Development Plans of the Kamar Tribe in Chhattisgarh State Dhamtari District**
DIKESHWARI DHRUW. 115

16. **An Empirical Study on Problems and Prospects of Industrial Development in Chhattisgarh**
Aparna Ghosh. 122

17. **Demography of Particularly Vulnerable Tribal Groups (PVTGs) in Chhattisgarh**
ABHA KISHORI XALXO and
D.N. VERMA. 129

18. **An Analysis of Budgetary Expenditure on Education in Chhattisgarh State**
RANU AGRAWAL,
RAVINDRA BRAHME AND
SAMEER THAKUR. 134

19. **Energy Disparity in Chhattisgarh: A District Level Analysis**
PRAGATI KRISHNAN AND
RAVINDRA BRAHME 139

20. **Financial Inclusion: A Study on Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna in Chhattisgarh**
NOMESH KUMAR AND
PRAGATI KRISHNAN 149

21. **An Analytical Study on Saving Pattern of Women Self-help Group Members through Co-operative Banks in Chhattisgarh State**
GEETANJALI PANKAJ
SUNIL KUMETI AND
RANU AGRAWAL 153

22. **Women Entrepreneurs in Informal Sector of Chhattisgarh**
ARCHANA SETHI AND
B.L. SONEKAR 157

23. **Narva, Garva, Ghurva Baari: A Model for Reviving the Agricultural of Economy of Chhattisgarh State**
RAGINI TIWARI 167

24. **Abstract**

Nature of Health Expenditure of Chhattisgarh State: An Analysis

B.L. Sonekar, Archana Sethi
& Kapil Kumar Chandra

INTRODUCTION

> *"Better health is central to human happiness and well-being. It also makes an important contribution to economic progress, as healthy population live longer, as more productive, and save more."*
>
> *—By WHO*

In the 21st century, world is heading towards development in different dimensions, especially in the field of Science and technology. In the run of development, standard of living also changes round the globe. On one hand human beings enjoy these developments, at the same time they actually pay for it in the form of their health. Now a days health is going to be a serious issue all over the globe to worry. Basically, it effects under developed and developing countries a lot. Recently many researches show that technological development and globalization also shares ample of health problems to its citizens. Some are incurable and new kinds of diseases came to light which effect the maximum population. These health problems have a great impact on the individuals' economic condition which ultimately effect the nation's development.

Among 17 goals mentioned by United Nations in 2015 under 'The 2030 Agenda for Sustainable Development', some goals indicate health issues. It tells us that if we want development, health is an important factor. Agendas like good health, well-being, clean water & and sanitation, gender equality and zero hunger talks about health only. For the development of economy, health of the people living in economy contributes the same as other factors. Healthy people means healthy economy. The present research paper is factually a discussion paper, based on secondary data from national and state resources which discusses on the nature of health expenditure and relation with economic development. The paper is divided into 5 parts. First part is introduction of the paper. Second part tells about objective, third part deals with methodology, fourth part deals with analysis of study and fifth part is presenting conclusion and suggestions of the paper. It is an attempt to know the nature

Assistant Professor, SoS. in Economics. Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur
Assistant Professor, SoS. in Economics. Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur
Associate Professor, SoS. in Economics. Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur

of health expenditure and relation with economic development, discussion of the problem and its solution as well This paper analyses current health problems affecting economic development of state and its consequences on future which is going to take the shape of a burning issue in the coming future.

OBJECTIVE OF THE STUDY

The present research paper has a following objective:

- To study the Trends in Public Expenditure on Health of India.
- To study Health Services in Chhattisgarh.
- To study the Disease Burden Profile of Chhattisgarh.
- To study the Trends in Expenditure on Health of Chhattisgarh State.

METHODOLOGY OF THE STUDY

The present research paper is factually a discussion paper, based on secondary data from International. national and state resources which discusses on the nature of health expenditureand relation with economic development of Chhattisgarh state.

ANALYSIS OF THE STUDY

Trends in Public Expenditure on Health of India

India with 1.2 billion people, world's biggest democratic nation, is world's 7th largest country by area and 7th largest economy in the world. India's population is 17% of world's total population and 2nd largest populated country. Over 7 decades after independence, India hasbecome self - sufficient and well improved in health profile i.e. life expectancy, literacy rate and other health indicators. According to census 2011, total population of India is 1210.8 million with decadal growth of 17.7% in which 31.14% live in urban areas and 68.86% people live in rural areas which means major population of a country lives in rural area.

India accounts for a relatively large share of the world's disease burden and is undergoing an epidemiological transition that the non-communicable disease dominates over communicable in total disease burden of the country[4]. According to National Health Profile (NHP) 2018 report, estimated birth rate, death rate and natural growth rate are showing a decline trend, i.e. birth rate declined from 25.8 to 20.4 per thousand, death rate declined from 8.5 to 6.4 per 1000 and natural growth rate declined from 17.3% to 14% in 2000 to 2016 whereas literacy rate increased by 8.2% during 2001 to 2011 and maternal mortality ratio has shown a decrease of 11 points, as per the latest available information.

As per latest report of Indian government (NHP 2018), the total expenditure on health is 1.4 lakh crores in the year 2015-16. The health expenditure accounts for 1.02% as a share of GDP with a center state expenditure ratio of 31:69 in 2015-16. This expenditure comprises 78.7% expenditure on medical & public health and 12.6% expenditure accounts for family welfare of total expenditure in 2015-16. Average total medical expenditure per child birth as a patient in public hospital over last 365 days (survey conducted from January to June 2014) is Rs.1587 in rural and Rs.2117 rupees in urban areas. 3.4% population out

of total population of India which is around 43 crores individuals were covered under health insurance. 79% of total insured population covered by public insurance companies and 80% of insured population fall under government sponsored schemes.

Table 1

Trends in Public Expenditure on Health

Years	*Public Expenditure on Health (in Rs Crore) #*	*Population (in crores) $*	*Per capita expenditure on health (in Rs)*	*Per capita expenditure on health as percentage of GDP (%)*
2009-10	72536	117	621	1.12
2010-11	83101	118	701	1.07
2011-12	96221	120	802	1.10
2012-13	108236	122	890	1.09
2013-14	112270	123	913	1.00
2014-15	121600.23	125	973	0.98
2015-16	140054.55	126	1112	1.02
2016-17 (RE)	178875.63	128	1397	1.17
2017-18 (BE)	213719.58	129	1657	1.28

Note: # Public expenditure on Health from "Health Sector Financing by Centre and States/UTs in India 2015-16 to 2017-18", National Health Accounts Cell, Ministry of Health & Family Welfare.

$ "Report of the Technical Group on Population Projections May 2006", National Commission on Population, Registrar General of India

Source: National Health Profile 2018, Government of India.

Note: GDP figures from 2011-12 to 2015-16 released vide press note dated 31st January, 2017 were subsequently revised by incorporating the new series of Index of Industrial Production (IIP) and Wholesale Price Index (WPI) released on 31st May, 2017 are available at Central Statistics Office, Ministry of Statistics & Programme Implementation. Second revised estimates of GDP are given in 2011-12, 2012-13, and 2013-14.

If we look at the table 1, we find that the expenditure of health is Rs.7253 crores in 2009-10 which increased to Rs.213719.58 crores in 2017-18 (BE) and the per capita public expenditure on health increases from Rs.621 in 2009-10 to Rs.1657 in 2017-18 (BE) whereas if we see the public expenditure as a % of GDP we find that it has some uneven fluctuations i.e. in 2009-10 it was 1.12% and it decreased to 0.98% in 2014-15 but after 2014-15, it increased every year and accounted for 1.26% in 2017-18(BE).

Figure I

Public Expenditure on Health as a % of GDP across World Bank Income Group 2015

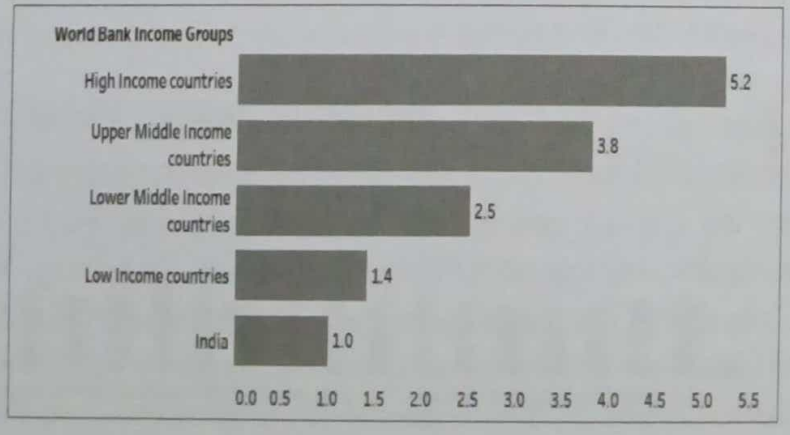

Source: National Health Profile 2018, Government of India.

India is making policy and efforts for advancement of health of the people and performance as well but it is also an interesting fact to know the performance of public expenditure in India in international prospects. If we see fig. I, we find that the health expenditure as percentage of GDP in high income, upper middle income, lower middle income and low income countries are 5.2, 3.8, 2.8 and 1.4 whereas India's expenditure on health as percentage of GDP is only 1%. It reveals that India is spending low on health in international context. The data shows that India is spending 4.2% less as compared to high income countries and also spending 0.4% less as compared to low income countries.

Figure II

Public Expenditure on Health as a % of GDP for SEAR Countries 2015.

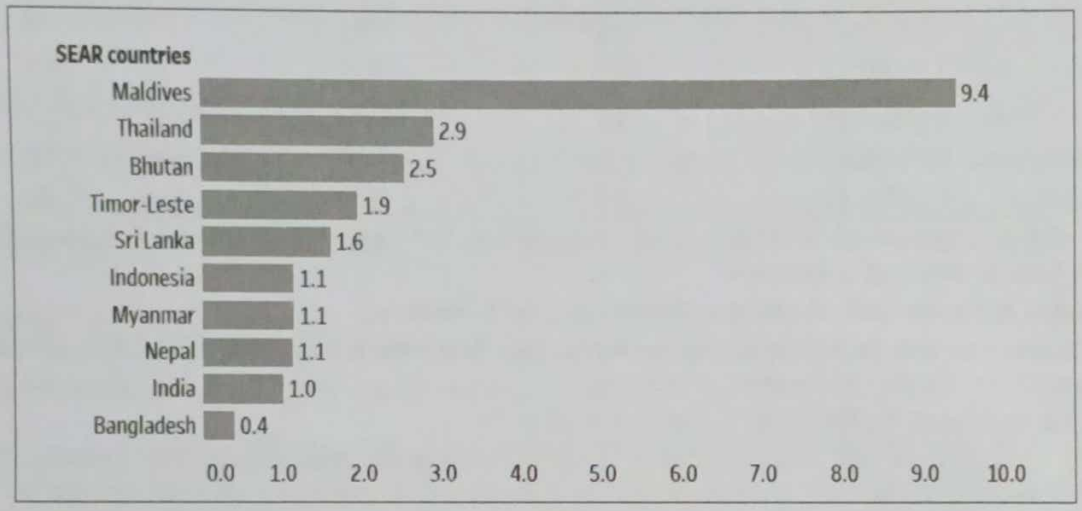

Source: National Health Profile 2018, Government of India.

If we compare India's health expenditure with South East Asian Region (SEAR) countries, as shown in fig II we find that India stood second from bottom. In the year 2015, SEAR countries record the health expenditure as percentage of GDP in Maldives (9.4%), Thailand (2.9%), Bhutan (2.5%), Timor-Leste (1.9%), Sri Lanka (1.6%), Indonesia (1.1%), Myanmar (1.1%), Nepal (1.1%) India (1%), and Bangladesh (0.4%). As per the given data, India's expenditure is low as compared to the neighboring countries.

Figure III

Domestic general government expenditure on health (GGHE-D) as a % of general government expenditure (GGE) India, 2002-2015

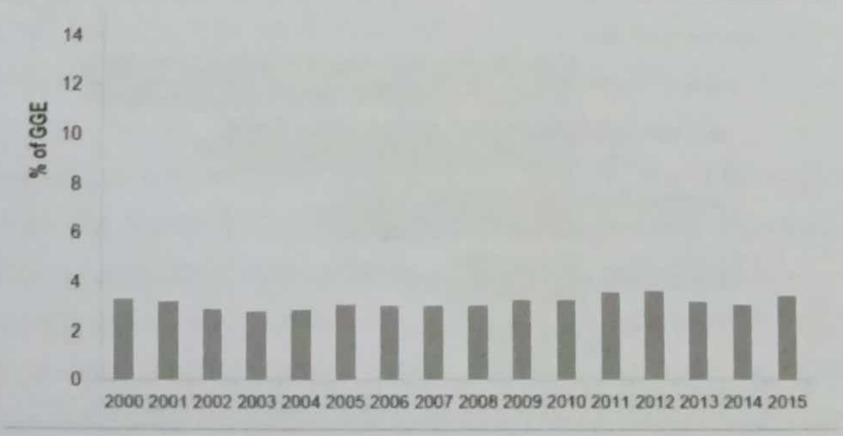

Source: Health Financing Profile 2017 (India), WHO South-East Asia.

According to health financing profile report (India) 2017, published by WHO, South East Asia, the government of India spent on health as a percentage of general government expenditure between 2000-2015 is more than 2% but less than 4% and has an uneven trend as shown in fig III. The report also reveals that India's current expenditure on health as % of GDP between 2000-2015 has some declining trend.

Figure IV

Current expenditure on health as a % of GDP India, 2000-2015

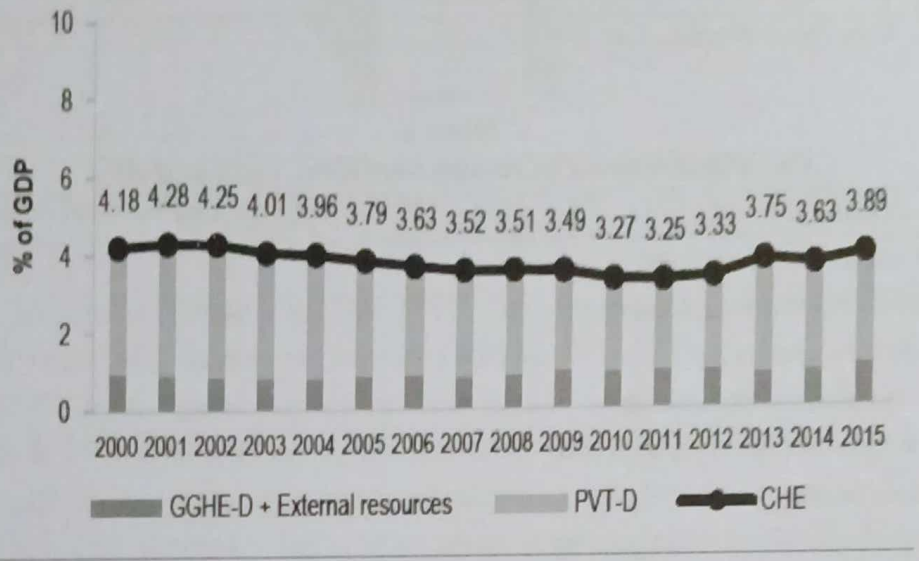

CHE: current expenditure on health; GDP: gross domestic product; GGHE-D: domestic general government health expenditure;

PVT-D: domestic private health expenditure

*PVT-D refers to spending on health including voluntary health insurance schemes, enterprise financing schemes and household out-of-pocket Payment

Source: Health Financing Profile 2017 (India), WHO South-East Asia.

As shown in fig IV current expenditure on health (CEH), Gross Domestic Product (GDP), Domestic General Government Health Expenditure (GGHE-D) and Domestic Private Health Expenditure (PVT.-D). The sum of all expenditure shows an up and down movement which is 4.18% in 2000 which increased to 4.28 in 2001 but after 2000 it declined every year till 2011 to 3.25% and afterwards increased to 3.89 in 2015.

HEALTH SERVICES IN CHHATTISGARH

In the year 2000, Chhattisgarh state is carved out of Madhya Pradesh as 26th state of India. Chhattisgarh with a population of 2.55 crores became India's 16th largest state with a dense forest full of natural resources. CG has 27 districts, 14 blocks and 20,308 villages and known as a tribal state in India. According to census 2011, CG has the following economic indicator: 78% rural population, sex ratio 968, sex ratio at birth is 951, 0-4 year sex ratio is 978 per thousand, literacy rate 65.5%, crude birth rate 23.5/1000, IMR 48/1000.

Table 2
The Growth Story of Chhattisgarh: Then and Now

S.no	Economic Indicators	2003-04	2015-16
1.	Budget Size (in crore)	7328	70058
2.	Per Capita Income (in Rupees)	12000	81756
3.	Debt to GSDP (percentage)	25.40	15.02
4.	Tax Revenue to GSDP (percentage)	6.80	8.50
5.	Social Expenditure to GSDP (percentage)	11.9	14.7
6.	Development Expenditure to GSDP (percentage)	17.4	21.4

Source: Economic & Political Weekly, Dec 2016

Table 3
The Improvement in Health Services: Then and Now

S.no	Health Indicators	2003-04	2015-16
1.	Infant Mortality Rate (per 1000)	76	34
2.	Maternal Mortality Rate (per Lakh)	407	221
3.	Vaccination (percentage)	56	74
4.	Institutional Delivery (percentage)	14	74
5.	Prevalence Rate of Leprosy (per 1000)	7.7	2.8
6.	District Hospital (in numbers)	7	24
7.	Community Health Centers (in numbers)	114	155
8.	Primary Health Centers (in numbers)	512	790
9.	Sub-Health Centers (in numbers)	3818	5186

Source: Economic & Political Weekly, Dec 2016

A comparative study between the years 2003-04 to 2015-16 as shown in table 2 shows the following figure: Budget size increased from Rs.7,328 cr. to Rs.70,058 cr., per capita income increased from Rs 12,000 to Rs 81,756, social expenditure income from 11.9% of GSDP to 14.7% of GSDP and development expenditure from 17.4% of GSDP to 21.4% of GSDP.IMR decreased from 76/1000 to 34/1000, MMR decreased from 407 per lakh to 221 per lakh. Total vaccination increased from 56% to 74%. District hospitals increased from 7 to 24, community health centers from 114 to 185, primary health centers from 512 to 790 and number of sub-health centers has been increased from 3818 to 5186 as shown in the table 3.

DISEASE BURDEN PROFILE OF CHHATTISGARH

Chhattisgarh, after 19 years of formation as a state, has experienced growth and development to a great extent but has been facing challenges and problems related to health. Malnutrition, anemia, sickle cell, hemoglobinopathy, beta thalassemia trail, and G6 PD enzyme deficiency are very high among the tribes of CG. Malaria and diarrhea have been a major health problem. CG is a state with annual Parasite Index 75 (MRC report)[4].

Figure V

Top 15 causes of years of life lost, ranked by percent for both sexes combined, 2016

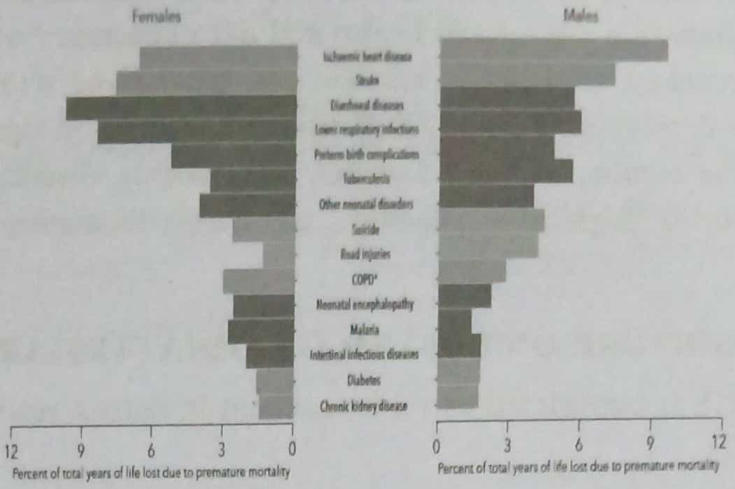

Source: Chhattisgarh: Disease Burden Profile, 1990 to 2016, ICMR, PHFI, and IHME; 2017

According to disease burden profile 2017, life expectancy rate of CG increases from 55.7 years (male) and 58.7 years (female) in 1990 to 64.6 (male) and 68.3 (female) in 2016. The proportion of total diseases burden reveals that in total deaths in CG, 70.1%deaths are premature death & 29.9% deaths are from disability or morbidity. If we see the fig V which gives the information about top 15 causes of years of life lost by sexes in 2016. It reveals that percentage of male death by Ischaemic heart disease is more while female deaths are more by diarrhoeal disease, lower respiratory infections are major cause of death in CG.

Figure VI

Percent of total DALYs attributable to top 10 risks, ranked by percent for both sexes combined, 2016

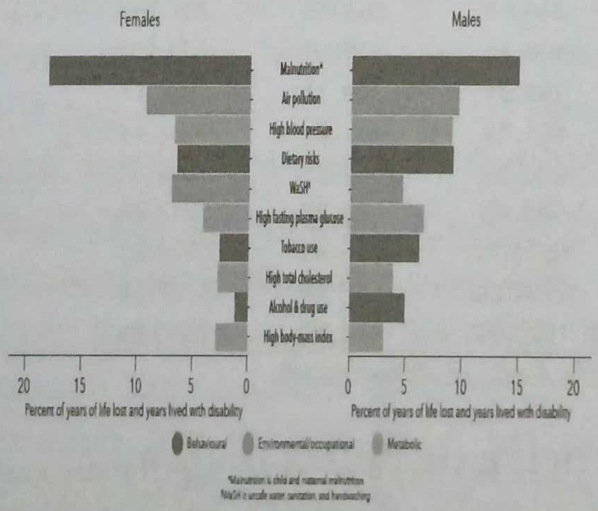

Source: Chhattisgarh: Disease Burden Profile, 1990 to 2016, ICMR, PHFI, and IHME; 2017

The disease burden profile also reveals that the top 15 causes of years lived with disability by sex in 2016, iron deficiency anemia, sense organ diseases, lower back and neck pain, migraine and depressive disorders are major causes of years lived with disability.

The disability-adjusted life year (DALY) is a measure of overall disease burden, expressed as the number of years lost due to ill-health, disability or early death. It was developed in the 1990s as a way of comparing the overall health and life expectancy of different countries. If we look at the percentage of years of life lost and years lived with disabilityranked by percent for bothsexes combined, 2016 in Chhattisgarh as shown in figure VI. According to the report of 2016, the number of years lost due to ill-health, disability or early death by malnutrition, air pollution, high blood pressure, and water, Sanitation and hand washing is major risk factors.

TRENDS IN EXPENDITURE ON HEALTH OF CHHATTISGARH STATE

"Expenditure on health is considered as on investment in human resource, contributing to productive capacity."[6]

Table 4
Chhattisgarh State Expenditure on Health (Rupees in Crores)

Year	*Family Welfare*	*Water supply and sanitation*	*Nutrition*	*medical and Public Health*	*Overall Expenditure on Health*	*Total Expenditure*
2001-02	30.97	146.60	38.90	212.98	429.45	22186.99
2002-03	28.93	172.64	55.74	242.60	499.90	27133.20
2003-04	31.75	179.91	81.62	260.33	553.61	31039.74
2004-05	32.21	160.59	95.34	284.00	572.15	40490.02
2005-06	32.69	211.08	176.94	298.66	719.37	46726.87
2006-07	62.15	364.40	78.92	413.67	919.14	61768.73
2007-08	72.90	406.32	151.27	405.29	1035.77	66998.54
2008-09	73.87	488.64	189.49	547.98	1299.99	74797.26
2009-10	103.56	386.75	213.86	686.74	1390.92	95776.31
2010-11	105.12	346.11	264.36	741.67	1457.26	109069.18
2011-12	118.63	404.49	315.14	984.95	1823.21	152558.24
2012-13	128.74	386.91	374.32	1164.17	2054.14	147069.95
2013-14	153.42	401.12	482.64	1402.14	2439.32	147642.27
2014-15	168.78	623.52	541.89	2164.57	3498.78	155508.72
2015-16	181.47	949.93	593.88	2527.76	4253.05	153248.80
2016-17	198.44	1671.71	646.43	3093.83	5610.41	189292.70
2017-18	230.20	1714.02	637.30	3777.69	6359.21	255090.00
2018-19	236.44	1025.69	461.86	3520.92	5244.92	274559.46

Source: Department of Finance, Govt. of Chhattisgarh

From the above data given in table 4 we find that Chhattisgarh govt. has been spending a good share of its budget on family welfare, water supply & sanitation, nutrition and medical & public health. In the year 2001-02, for family welfare, CG govt. spent Rs.30.97 Cr. from the budget which decreased in the next year by Rs.28.93 Cr. but later it shows an increasing trend in the successive years and the trend reached Rs.236.44 Cr. by 2017-18. On studying the data of water supply & sanitation, we find that the expenditure shows an increasing trend from the year 2001-02 (Rs.146.60 Cr.) to 2008-09 (Rs.488.64 Cr.),

then a sudden decrease from the year 2009-10 (Rs.386.75 Cr.) to 2013-14 (Rs.401.12 Cr.). It again increased in the year 2014-15 (Rs.623.52 Cr.) and continued till 2017-18 (Rs.1025.69Cr.)

Figure VII

Chhattisgarh State Expenditure on Health (Rupees in Thousands)

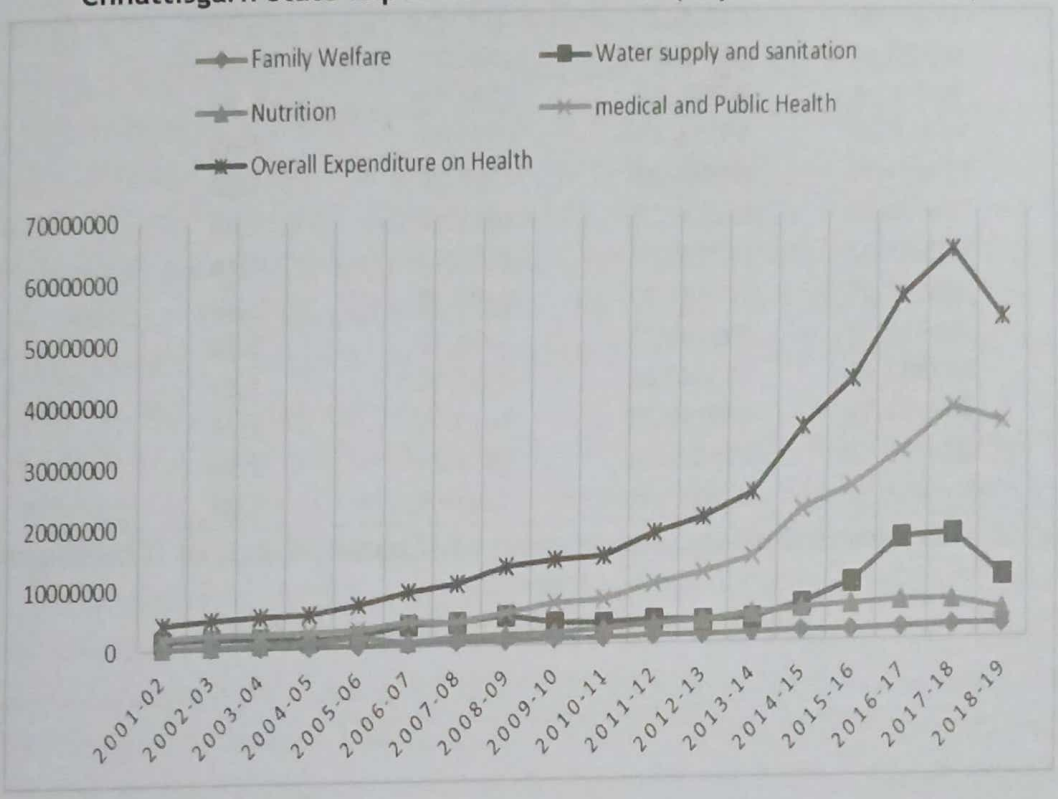

Source: Department of Finance, Govt. of Chhattisgarh

If we look at the expenditure on nutrients, we find a consistent growth from the year 2001-02 to 2017-18 which ranges from Rs.389059.96 thousand to Rs.6372979.95 thousand except in the year 2006-07 which showed a decrease to Rs.789193.50 thousand. It shows government's inclination towards good food and nutrition. Government's attention & expenditure on medical & public health shows a consistent increasing trend from the year 2001-02 to 2017-18 which ranges from Rs.2129820.03 thousand to Rs. 37776901.17 thousand except in the year 2007-08 which showed a little decrease to Rs.4052857.25thousandaccording to the above data it is clear that the CG govt. has increased the share of overall health expenditure every year. After the formation of state in year 2000, it was Rs.4294586.00thousand in the year 2001-02 and it increased to Rs.63952133.31thousand in 2017-18. It is also shown in fig VII that the expenditure increased gradually in every sector of public health and a good hike is noticed in overall expenditure on health.

Table 5

Share of Health Expenditure in SGDP & Total Expenditure

Years	GSDP (in Crores)	Total Expenditure (in Crores)	Health Expenditure (in Crores)	Health Expenditure as % of GSDP	Health Expenditure as % of Total Expenditure
2005-06	50998.84	46726.87	719.37	1.41	1.54
2006-07	66874.89	61768.73	919.14	1.37	1.49
2007-08	80255.11	66998.54	1035.77	1.29	1.55
2008-09	96972.18	74797.26	1299.99	1.34	1.74
2009-10	99364.26	95776.31	1390.92	1.40	1.45
2010-11	119419.76	109069.18	1457.26	1.22	1.34
2011-12	158073.83	152558.24	1823.21	1.15	1.20
2012-13	177511.32	147069.95	2054.14	1.16	1.40
2013-14	206833.19	147642.27	2439.31	1.18	1.65
2014-15	221118.12	155508.72	3498.77	1.58	2.25
2015-16	227382.80	153248.80	4253.05	1.87	2.76
2016-17 (P)	254721.94	189292.70	5610.41	2.20	2.96
2017-18 (Q)	284193.52	255090.00	6359.21	2.24	2.49
2018-19 (A)	311659.53	274559.46	5244.92	1.68	1.91

Source: Economic Survey, Department of Finance, Govt. of Chhattisgarh

Figure VIII

Chhattisgarh State Expenditure on Health

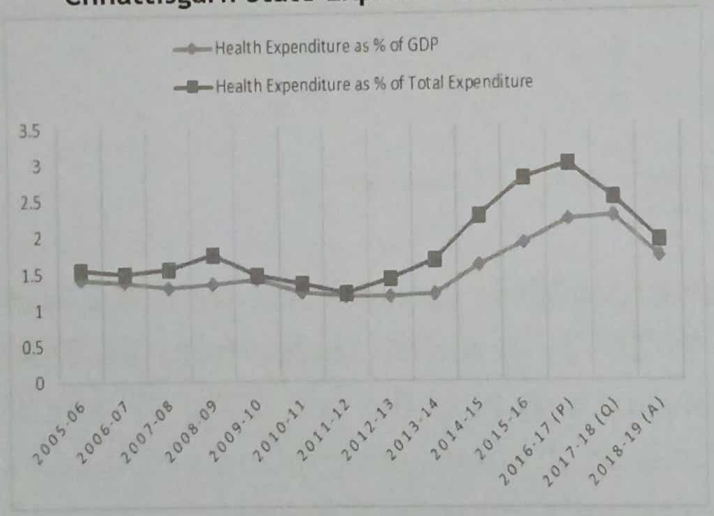

Source: Economic Survey, Department of Finance, Govt. of Chhattisgarh

Government has shared Rs.719.37 cr. i.e. 1.41% from GSDP to health expenditure in the year 2005-06 then it started decreasing in the year 2006-07 i.e. Rs.919.14 cr. (1.37%) to 2439.31 cr. (1.18%) till the year 2013-14. The health expenditure suddenly increased to 1.58% of GSDP in the year 2014-15 and it continued till 2017-18 i.e. Rs.6359.21 cr. (1.68%). Percentage of health expenditure over total expenditure of 2005-06 was 1.54%. Next year it decreased to 1.49% in 2006-07. It again increased in 2007-08 to 1.55% & 1.74% in 2008-09. It shows a decreasing trend from 2009-10 to 2012-13. It again started increasing from 2013-14 till 2017-18 (from 2.25% to 2.49%). Overall the average health expenditure is approximate 1.3% of GDP.

CONCLUSION& SUGGESTION

> *"The basic needs strategy of development is directed towards helping poor nation meet requirements for adequate food, shelter, sanitation, health & education. Thus, health became an objective of development."*[6]

By analysis of different reports and data, it reveals that globally from 2000-2016, the health expenditure of low-income countries had raised but it is not sufficient as per the population resides in these countries. Globally the average health expenditure as a percentage of GDP records 1.4% for low income countries whereas it is found 5.2% for high income countries which shows that the economic development feature has high medical expenditure which leads to high economic growth in high income countries. India after independence emerging as a fastest growing economy and the health expenditure in India has also increased from 2009-10 (Rs.72536 Cr.) to 2017-18 (Rs.213719.58 Cr.) which is 1.28% of GDP but it is lower than the world average spending.

Chhattisgarh is a state with dense forest cover and many of these areas are conflict-affected, underserved areas are more where doctors are not available to work and lack of adequacy in other staff also. Government has been taking all possible steps to eradicate the problem by implementing health programs & planning. After analysis of different reports and data we conclude that as per govt. officials, a comparative study tells that Chhattisgarh after becoming state in 2000, the comparative analysis from 2003-04 economic performance to 2015-16 increase in budget size from Rs.7328 Cr. to Rs.70058 Cr, per capita income from Rs.12000 to Rs.81756, tax revenue from 6.8% to 8.5%, social expenditure as a percentage of GDP from 11.9% to 14.7%, development expenditure as a percentage of GDP from 17.4% to 21.4%. In health performance it reveals that between 2003-04 to2015-16 decrease in IMR from 76 to 34 per 1000, MMR from 407 to 221 per lakh,Prevalence rate of leprosy from 7.7% to 2.8% and increase in vaccination from 56% to 74%, Institutional delivery from 14% to 74%, number of Primary Health Center from 521 to 790, number of community health center from 114 to 155, number of Sub-health center from 114 to 155. All these fact shows that the impact of health on economic development that it achieved a good economic character. It also reveals that the health expenditure in 2001-02 is Rs.429.45 Cr. which increased to Rs.5244.92 Cr. The spending on medical & public health and water supply & sanitation has shown an increasing trend but expenditure on family welfare and nutrition has a consistence and low share than other expenditure. We can conclude that the performance is good for a new state after 19 years of its formation and the health expenditure as a percentage of GDP is 1.3% which is more than national average which means CG is moving towards the economic development.

If we see the challenge in the path of economic development, the govt. official report on CG : disease burden profile shows that the cause of years of life lost is more by Ischaemic heart disease, diarrhoeal disease and respiratory infections whereas causes of years lived with disability, iron deficiency, anemia, sense organ disease, low back & neck pain are major issues. If we also look at the percentage of total DALYs malnutrition, air pollution, water,

sanitation and hand washing, dietary risk are major problems which stands as a challenge for health development in CG. We say that all these problems are not a chronic issue but related with persons daily, social and economical activity and environmental issues.

After studyingNature of Health Expenditure of Chhattisgarh Stateand analysis of data &reports. It is suggested that the expenditure on health in the state is good but not enough for meeting the global standard and challenges. It is suggested that the expenditure on nutrition and family welfare will have to increase to cure the problem of iron deficiency , diarrhoeal disease and malnutrition etc. as well as spending on environment will also be increased to maintain good and healthy environment in state because many of health issues are related to air, water and food which is an integral part of our environment. State should give more emphasis on controlling environmental pollution. It is true that human civilization is heading towards smart cities, innovations, inventions and technological developments. But it is not a basic need. A basic need mentions the requirements for a happy life is healthy food, environment, water, air, better health. Healthy people form a healthy society, as well as efficient human resource in the path of economic development and an efficient human resource is mandatory for a healthy economic development whether it is a region, state, nation or world.

References

Public Spending on Health: A Closer Look at Global Trends, World Health Organization Report.

National Health Profile 2018 13th Issue, Central Bureau of Health Intelligence, Directorate General of Health Services, Ministry of Health & Family Welfare, Government of India

http://finance.cg.gov.in/Actual_RE/year_exp_comp.asp.Department of Finance, Government of Chhattisgarh

AbhiruchiGalhotra, Gouri Ku. Padhy, Anjali Pal, Anjan K. Giri, Nitin M. Nagarkar, "Mapping the health indicators of Chhattisgarh: A public health perspective" International Journal of Medicine and Public Health | Jan-Mar 2014 | Vol 4 | Issue 1

World Bank Statistics.

Robert N. Grosse, Oscar Havkay "The role of health is development", Social Science & medicine, Part C. Medical Economics, volume 14, Issue 2, June 1980, Pages 165-169.

"Chhattisgarh: Fastest Developing State of India", Economic & Political Weekly December 31, 2016 vol II no 53.

"Health and development",Who.int/hdp/en/.

India: Health of the Nation's States – The India State-Level Disease Burden Initiative, New Delhi: ICMR, PHFI, and IHME; 2017. ISBN 978-0-9976462-1-4.

3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC website during the last five years

Title of paper	Name of the author/s	Departm ent of the teacher	ame of journ	Year of publication	ISSN number	Link to the recognition in UGC enlistment of the Journal /Digital Object Identifier (doi) number		
						Link to website of the Journal	Link to article / paper / abstract of the article	Is it listed in UGC Care list/Scopus/Web of Science/other, mention
2017 : The year of Feminism	Dr. Shruti Jha	English	JETIR	2017	2349-5162	www.jetir.org	http://www.jetir.org/papers/JETIR1712152.pdf	U.G.C. Approed journal no. 63975
A rainbow in the context of life	Dr. Shruti Jha	English	IJIRMPS	2018	2349-7300	www.ijirmps.org	https://www.ijirmps.org/research-paper.php?id=250	peer reviewed international journal
Pursuit of happiness in contemporary English literature	Dr. Shruti Jha	English	IJHAMS	2018	2454-4728	http://bestjournals.in	http://bestjournals.in/archives?jname=73_2&year=2018&submit=Search&page=3	peer reviewed international journal
					impact factor(JCC): 3.0198 ICV: 44.78			
The truth about beauty	Dr. Shruti Jha	English	IASET	2018	Offline - 2319-393X Online - 2319-3948 VOL-7 Impact factor - 4.8 ICV-2017.. 30.66	http://www.iaset.us	https://www.iaset.us/archives?jname=72_2&year=2018&submit=Search&page=3	ICV-2017, 30.66 NAAS Rating 3.17 UGC approved
Feminine bonding and sensibility	Dr. Shruti Jha	English	IJRAR	2019	E-2348-1269	www.ijrar.org	https://ijrar.org/papers/IJRAR19K8135.pdf	UGC approved peer review journal
					P-2349-5138			
Feminism: The origin and development	Dr. Shruti Jha	English	IJRHAL	2019	P : 2347-4564 F: 2321-8878	https://www.impactjournals.us	https://www.impactjournals.us/archives/international-journals/international-journal-of-research-in-humanities-arts-and-literature?jname=11_2&year=2019&submit=Search&page=24	peer reviewed NAAS rating 3.10
Relationship between development of feminist traits nurtured through participation in sports, with special references in Literature across the globe.	Dr. Shruti Jha	English	IASET	2021	2319-3956	https://www.iaset.us	https://www.iaset.us/archives?jname=65_2&year=2021&submit=Search&page=2	CV-2017, 30.66 NAAS rating 2.67 UGC approved
Relation between play and personality	Dr. Shruti Jha	English	IJIRT	2021	ISSN: 2349-6002 ISSN: Online:2349-6002	https://ijiert.org	https://ijirt.org/Issue?volume=8&issue=8&month=January%20202 2	UGC APPROVED JOURNAL NO. 471859
वृद्धावस्था में पारिवारक सदस्यों के मध्य तनाव के स्थिति का अध्ययन	Dr. Pramila Nagwanshi	Sociology	IJCRT	2021	2320-2882	www.ijcrt.org	https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2102180.pdf	UGC approved peer review journal
युवाओ का रोजगार संबंधी अध्ययन	Dr. Pramila Nagwanshi	Sociology	IJRAR	2022	2349-5138	www.ijrar.org	https://www.ijrar.org/papers/IJRAR22A2472.pdf	UGC Approved

A garphene-printed paper electrode for determination of H_2O_2 in municipal wastewater during the COVID-19 pandemic	Ku. Tikeshwari	Chemistry	Royal society of chemistry	2021	1144-0546	http://Pubs.rsc.org	https://pubs.rsc.org/en/content/articlelanding/2022/NJ/D1NJ05763D	
Experimental and Theoretical Investigations for Selective Colorimetric Recognition and Determination of arginine and Histidine in Vegetable and Fruit Sample using Bare-AgNPs	Ku. Tikeshwari	Chemistry	Microchemical Journal	2020	0026265X	https://www.sciencedirect.com/journal/microchemical-journal	https://doi.org/10.1016/j.microc.2020.105597	
		Print Edition						
मधुमेह रोग से ग्रसित वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन	Dr. Pramila Nagwanshi	Sociology	रिसर्च लिंक (An.Int.j.)	2017	0973-1628	Print Edition	ISSue-156 Vol-XVI(1) March-2017	An International Registered
समाज पर साहित्य का प्रभाव	Dr. Pramila Nagwanshi	Sociology	प्रिंटिंग एरिया (I.R.J.)	2018	2394-5303	Print Edition	April-2018 Issue-40 Vol-05	UGC approved peer review journal
समाज में वृद्धों का महत्व	Dr. Pramila Nagwanshi	Sociology	विद्यावार्ता	2019	2319-9318	Print Edition	Jan to March 2019 Issue-29 Vol-02	Peer reviewed International Registered
19–28 वर्ष के युवा छात्र छात्राओं के स्वास्थ्य संबंधी रागस्याओं का अध्ययन	Dr. Pramila Nagwanshi	Sociology	प्रिंटिंग एरिया	2019	2394-5303	Print Edition	March 2019 Issue-51 Vol-01	UGC Approved
समाज के विकास में अनुसंधान की भूमिका	Dr. Pramila Nagwanshi	Sociology	विद्यावार्ता	2020	2319-9318	Print Edition	Jan to March 2020 Issue-33 Vol-05	Peer reviewed International Registered
सामाजिक संबंधो के निर्माण में आर्थिक कारकों की भूमिका (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)	Dr. Pramila Nagwanshi	Sociology	शोध संचार	2021	2229-3620	Print Edition	Jan to March 2021 Issue-41 Vol-011 Page. No.-164-169	UGC Approved
प्रेमचद के साहित्य में नारी	Smt. Pratima Chandrakar	Hindi	प्रिंटिंग एरिया	2019	2394 5303	Print Edition		
सूरदास का भ्रमर गीत और वियोग श्रृंगार	Smt. Pratima Chandrakar	Hindi	विद्यावार्ता	2020	2319 9318	Print Edition		Peer reviewed International Registered
Nature of Health Expenditure of Chhattisgarh State: An Analysis	Kapil Kumar Chandra	Economics	The Indian Economic Journal	2019	0019-1662	Print Edition	Indian Economic Association Conference Special Issue Dec-2019 Economy of Chhattisgarh Article-02 Page No.-07-18	UGC Care list journal ID-101003031

Year	of journ	Online	Print
2017-18	2	1	1
2018-19	4	3	1
2019-20	6	2	4
2020-21	3	1	2
2021-22	6	5	1